बर्फ की चट्टान

एक भावुक एव मानसिक दष्टि से असन्तुलित नारी मन का यह विद्रोह जीवन मे व्यापक असतोष विखराव और उथल पुथल उत्पन्न कर देता है। अनेकानेक अनुभवो के कण्टकाकीर्ण माग म गुजर कर वह विद्रोहिणी सामाजिक जीवन की विसगतियो तथा विषमताओ को नकारती और अस्वीकारती चलती है। यद्यपि उसकी सहज सस्कारशीलता, चिन्ता और भावनात्मक व्यथा उसे एक नई दृष्टि प्रदान करती है।

भावनाओ और विचारो के इस द्वद्व के बीच एक नये वातावरण की सष्टि होती है, जो विभिन्न जटिलताओ को भी सरल बनाने म अदभुत क्षमता रखती है। लगता है, जैसे इस अनपेक्षित परिवर्तित परिवेश म टूट हुए विश्वासो की कडियें पुन सलग्न हो रही है और बफ की वह कठोर तथा सिमम चट्टान प्रेम और ममता की सुनहरी किरणो के स्पश से पिघलने लगी है

'सुमेर सिंह दईया

बर्फ
की
चट्टान

एक कोई वडा जक्शन। चारा ओर फनी अनगिनत पटरिया का जाल। इन पर खडे हैं अनेक रेल के डिब्बे धुआ उगलते और शटिंग करते इजिन। कहीं-कहीं ता पूरी ट्रन तयार खडी है। इस म चढन और उतरने वाले यात्रिया की असामान्य एव अप्रत्याशित बेचनी। इसके परिणाम स्वरूप उस लम्ब चौडे प्लटफाम पर असाधारण भीड तथा अनियत्रित जन कोलाहल।

तीसरे श्रेणी के डिब्ब म धक्कम धक्का करती एक छोटी सी भीड को चीर कर केदार ने अन्दर प्रवश किया। उद्वेग जन्य चचल दृष्टि से आस पास देखने लगा तो ज्ञात हुआ कि ऊपर की बथ अपने सामान स घेर कर प्राय सभी लोग नीच की बथ पर बठे हैं। कुछ ऐसे बिरल भी हैं, जिन्होंने अपने होल्ड डोल खालकर बिस्तर भी लगा लिये है और इसके द्वारा अपने एकाधिकार की स्पष्ट घोषणा भी कर रहे हैं।

ट्रेन पाछे से किसी बडे स्टेशन से बनकर आती है, अत भीड का जमघट स्वाभाविक है। उतरने वाले यात्रिया के रिक्त स्थानो की पूर्ति शीघ्र ही हो जाती है। विशेष कर देरी से आने वाले लागों को कठिनाई और कष्ट सम्मिलित रूप स दोना झेलने पड़ते हैं—इसम कोई सदेह नही है।

अगले क्षण उसने देखा कि बिलकुल पीछे की बथ अभी अभी खाली हो गई है। अब विलम्ब करना उसके पक्ष म ठीक नही, अत सचेत होना आवश्यक है। वह अपने बिस्तर और अटची को उठाकर उतावली मे आगे बढा। अत म बचता बचाता और सामने आने वालो स टकराता

अभी खाली हुई है इतने म दो पुरुष और एक महिला ने गोदी में बच्चे को लिये वहा पदापण किया। वे सब सामने वाली सीट पर बैठ गय। बाहर प्लेटफाम पर एक दो सज्जन खिडकिया के पास-खडे अदर की ओर भाकने का प्रयास कर रह हैं। कदाचित वे इन नय यात्रिया के सम्बधी अथवा परिचित हैं।

उन भीतर आए दो म स एक पुरुष ने महिला को कुछ रुपये दिये, जिह उसने नि सकोच भाव से ले लिये। तब वे बोले— जाते ही पत्र देना।

महिला न गोदी मे साय बच्चे का साडी के पल्ले से अच्छी तरह ढक कर स्वीकृति म सिर हिला दिया।

उहाने पास बठे पुरुष से आख मिलाते हुए नम्रता से पूछा—'आप कहा जा रह है ?

जी रतनगढ। उसने उत्तर दिया।

'रतनगढ। वे विनीत स्वर म कहन लगे— देखिय, यह मरी भतीजी भी वहा जा रही है। थोडा ध्यान रखेंग तो कृपा होगा।

'जी हा। अवश्य।'

इसके अतिरिक्त रतनगढ स्टेशन के बाहर इसक लिय एक तागा भी ठीक करना आप न भूलें।

आप निश्चित रह। उस दूसरे पुरुष ने उदारता का परिचय देकर कहा।

कष्ट के लिये धयवाद ।

इसके पश्चात अपनी भतीजी को सतक रहने का अतिम आदेश दकर वे उठ गय। उहाने दूसर पुरुष स नमस्कार किया और गट की तरफ चल दिय।

वह महिला केदार के ठीक सामने बठी है। आयु पच्चीस के लग भग, नाक-नक्श साधारण और लम्बा कद। सकरा माथा और छोटी छोटी आखें होने के कारण वह विशेष आकषक नही लग रही है। इसके

हुआ वह निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच ही गया। उसने अटैची नाच सरका और बिस्तर को सीट के ऊपर रखकर उसकी बगल में जमकर बैठ गया। अचानक उसके मुंह से अपनी इस सफलता पर हल्की सी सन्तोष की श्वास निकल पड़ी। जेब से रूमाल निकाल कर वह भाल पर आए पसीने को धीरे धीरे पोंछने लगा।

यद्यपि स्थान की इतनी कमी के बावजूद भी इस डिब्बे में यात्री गण अभी तक आ रहे हैं। जाने कैसी झुंझलाहट सी हो रही है अन्दर बैठे लोगों को! क्या सारी भीड़ इसी डिब्बे पर टूट पड़ेगी ऐसा उनके मुखाकित भावों की मूक रेखाओं से व्यक्त हो रहा है।

किंचित प्रकृतिस्थ होकर भीड़ की असहनीय ऊब और अन्तःपेषित खीझ को तनिक विस्मरण कर—ऊपर ने अब अपनी ऊपर की बर्थ की ओर ताका। इस पर विदित हुआ कि एक महाशय अपना बिस्तर लगाये चद्दर ओढ़कर लम्बी तान सो रहे हैं। ठीक यही स्थिति सामने वाली ऊपर की बर्थ की है। सम्भवतः उन्हें असमय में ही कोई किसी प्रकार तंग अथवा दिक न करें। इस कारण से भी वे सोने का बहाना मात्र कर सकते हैं।

आश्चर्य तो उसे तब हुआ जब उसने अपनी ही बगल में एक कोने में सिमटी सिकुड़ी युवती को बैठे देखा। एक लम्बी यात्रा के पश्चात वह थकान एवं क्लानि से अवसाद ग्रस्त प्रतीत हो रही है। धूल की मटमैली परत उसके कपड़ों और उदास चेहरे पर जम गई है। विचित्र प्रकार के दैन्य भाव से उसकी गर्दन झुकी है। अनिद्रा से बोझिल तथा पीड़ित आंखों की दृष्टि अपनी गोदी में लापरवाही से पड़े हाथों पर स्थिर हैं जिनमें कांच की साधारण सी चूड़ियें हैं।

केशर ने अर्थ पूर्ण निगाहों से उसे निहारा यद्यपि कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह चुप चुप सी आंचल से सिर ढके पूर्ववत मौन साधे बैठी रही।

अब ट्रेन छूटने में कुछ देर ही बाकी है। सामने वाली बर्थ अभी

अभी खाली हुई है इतने म दो पुरप और एक महिला ने गोदी म बच्चे को लिये वहा पदापण किया । व सब सामन वाली सीट पर वठ गये । बाहर प्लेटफाम पर एक दो सज्जन खिडकिया के पास खडे अदर की ओर भाकने का प्रयास कर रहे हैं । कदाचित वे इन नय यानियो के सम्बधी अथवा परिचित हैं ।

उन भीतर आए दो मे से एक पुरप ने महिला को कुछ रुपय दिये, जिन्ह उसने नि सकोच भाव से ले लिये । तब वे बोले—'जाते ही पत्र दना ।'

महिला न गोदी म सोय बच्चे को साडी के पल्ले स अच्छी तरह ढक कर स्वीकृति म सिर हिला दिया ।

उन्होने पास बठे पुरप से आख मिलाते हुए नम्रता स पूछा—'आप कहा जा रहे है ?

जी रतनगढ । उसन उत्तर दिया ।

रतनगढ । वे विनीत स्वर म कहने लग— दखिय, यह मेरी भतीजी भी वहा जा रही है । थोडा ध्यान रखेंग तो कृपा होगी ।

'जी हा । अवश्य !'

इसके अतिरिक्त रतनगढ स्टेशन के बाहर इसके लिय एक तागा भी ठीक करना आप न भूलें ।

आप निश्चित रहें । उस दूसरे पुरप ने उदारता का परिचय देकर कहा ।

कष्ट के लिय धयवाद ।

इसके पश्चात अपनी भतीजी को सतक रहने का अतिम आदेश दकर वे उठ गये । उन्होने दूसरे पुरप स नमस्कार किया और गेट की तरफ चल दिये ।

वह महिला केदार के ठीक सामने बठी है । आयु पच्चीस के लग भग, नाक-नक्श साधारण और लम्बा कद । सकरा माथा और छोटी छोटी आखें होने के कारण वह विशेष आकपक नही लग रही है । इसके

विपरीत फले होठो पर अनायास ही मुस्कान की हल्की सी छाया तर जाती है जो उसकी अस्थिर मनोवत्ति की परिचायक है।

पास वठे पुरुष ने अपनी सरक्षण वाली महिला म तनिक रुचि लकर कहा— आपको यदि किसी प्रकार की असुविधा है तो खिडकी के पास आ जाए यहा हवा भी अच्छी मिलेगी।

जी नहीं। धीरे से मुस्कराकर वह महिला बोली—'हवा ठण्डी है इस कारण स बच्चे के लिय ठीक नहीं।

उसन सहज भाव से पुन कहा— तो आप आराम से बिस्तर बिछा कर वठ जायें। अब भीड का इतना डर नही है।

लगता है जस उस महिला न अपने अभिभावक की बात बिना किसी सकोच के स्वीकार करली है।

तभी लम्बी व्हिसल क बाद अचानक एक झटका लगा और टेन धीरे धीरे चलने लगी। खिडकी क पास खडे लोगो से नमस्कार प्रति नमस्कार का आदान प्रदान हुआ और जानी पहचानी शक्लें पीछे छूटने लगी।

अंधेरा झुकने लगा है यद्यपि अभी तक बत्तियां ठीक प्रकार से जल नहीं रही हैं। संध्या कालीन बयार में शीत का हल्का हल्का प्रकोप है। फर्राटे के साथ हवा खिडकियों में से अंदर डिब्बे में प्रवेश कर रही है, इसलिये देखते देखते कुछ खिडकियां के शीशे चढ गये।

ट्रेन एक छोटे से स्टेशन पर आकर कुछ देर के लिये रुकी। केदार का हठात ध्यान टूटा, जब एक पोटर की आवाज पास की खिडकी के नजदीक खिचती चली आई। सम्भवत उसने स्टेशन का नाम पुकारा है।

खूब प्रशस्त अंधेरा है जिसमें उस छोटे से स्टेशन का एक अकेला बडा सा गैस सूं सूं करता जल रहा है। स्टेशन मास्टर के केबिन से लालटेन का पीला प्रकाश तथा घंटी टुनटुनाने की आवाज आ रही है। किसी एकाध का बोलता स्वर भी अंधेरे में कहीं ध्वनित हो रहा है। शेष चतुर्दिक निःशब्दता व्याप्त है।

ट्रेन फिर चलने लगी। थोडी दूर तक तो पीछे छूटता गैस दिखाई देता रहा। इस अपारदर्शी अंधेरे में हरी झण्डी हिलाता हुआ स्टेशन-मास्टर एक धब्बे के सदृश्य प्रतीत होने लगा। पोटर के हाथ की लालटेन भी एक टार्च की हल्की सी रोशनी के समान चमक कर लुप्त हो गई। इसी समय ट्रेन खट्-खटाग करती एक छोटे से पुल को तेजी से पार कर गई।

प्राय डिब्बे के सभी लोग सोने की तैयारी कर रहे हैं। सर्दी भी काफी हो गई है। उनमें से कुछ रजाई और कम्बल ओढ कर ऊंघने भी लगे हैं। सामने की बर्थ पर वह भद्र पुरुष एक कोने में सिर टिका कर

सोने का प्रयास कर रहा है। वह महिला की विपरीत दिशा में पैर किये और बच्चे को स्तन से चिपटाये आराम से लेटी है। ओढ़ी हुई कम्बल का आधा हिस्सा नीचे लटक रहा है।

केदार ने पास बगल में बैठी युवती की ओर दृष्टि निक्षेप किया और धीरे से बोला—'यदि आप अपना बिस्तर लगाना चाहें तो अनुचित नहीं होगा।'

उसने चौंककर आखें खोली। लगता है जैसे उसे हल्की सी झपकी आ गई है।

अर्थ पूर्ण मुस्कान लेकर केदार ने पुनः अनुरोध किया—'यदि आप सोना चाहें तो बिस्तार लगा लें। मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।'

वह नीचा नजर किये निरुत्तर ही रही। उसने किसी प्रकार के गति विशेष का संकेत नहीं दिया।

केदार ने चुपके से इधर उधर भी देख लिया। ज्ञात हुआ कि युवती के पास कोई भी बिस्तर नहीं है। आश्चर्य!

उसने सप्रश्न दृष्टि से पूछ लिया—'क्या आपके पास कोई बिस्तर भी नहीं है?'

प्रस्तर की प्रतिमा! उससे किसी प्रकार के स्वर की आशा करना व्यर्थ है।

अब आगे केदार भी कुछ नहीं बोला। अवाक् मुख पर जड़ी दो आंखों से उसने एक बार पुनः युवती को निहारा। शीघ्र ही निराश होकर दृष्टि लौटा ली।

इस कठिन मौन मुद्रा को देख जैसे वह कुछ देर तक अपने खोये हुए शब्द ढूंढता रहा। इस बीच उसके होंठ सिल गये। वह उदास मन से उठा और अपना बिस्तार खोलकर बिछाने लगा। इस प्रकार आधी से अधिक बर्थ घिर गई। युवती अपने स्थान पर तिल मात्र भी हिले डुले बिना बनी रही।

लेटने से पूर्व आशंकित हो केदार ने बर्थ के नीचे झांक कर देखा।

उसकी अटची के अतिरिक्त वहा कोई दूसरा सामान भी नहीं है। सचमुच धीरे धीरे सारी वातें रहस्य के अभद्य आवरण मे छिपती जा रही हैं।

इस बीच चार छ स्टेशन और भी गुजर गय। इस डिब्ब म न तो काई यात्रियो की विशेष उल्लेखनीय वद्धि हुइ और न कमी। अंधेरे म शायद कोहरा अधिक है अत तारे स्पष्ट दिखाई नहीं पड रहे हैं।

इसी समय केशर न देखा कि शीत के कारण युवती की घबराहट और बचनी अधिक बढ गइ है। प्रतिकार-स्वरूप अपनी इस जडता की भगिमा को तोडकर वह एकाएक सजग और सचेत हो गई। अब वह साडी को अपने चारा ओर ठीक प्रकार से लपटने का यत्न कर रही है। बस वही तो उसका एक मात्र सहारा है—सर्दी से बचने का अतिम आधार!

निश्चित रूप से यह सारी स्थिति इतनी अधिक करुणोत्पादक और सवदन शील है—उसे सहज ही म सहन करना प्राय कठिन है जहा तक केशर का प्रश्न है उसकी आरम्भ से ही इस युवती म दिलचस्पी रही है। वह क्रमश गहरी तथा तीखी होती जा रही है।

उसने सकरुण स्वर म आग्रह किया— यदि आप चाह तो कम्बल ल सकती है। मरे लिय तो चद्दर ही पर्याप्त है।'

युवती ने जान बूझ कर उत्तर न दने का अभिनय किया—जस उसने केशर की प्रत्यक्ष अपक्षा कर दी। इस प्रतिक्रिया से स्पष्ट विदित हो रहा है कि वह उसके प्रश्नोत्तर म रुष्ट है - अप्रसन्न है। अब हारकर चुप हो जान क अतिरिक्त उसक पास दूसरा काई विकल्प नहीं है।

एक दीघ नि श्वास लेकर वह बिस्तर म लेट गया। यद्यपि अनमन की दृष्टि बराबर इस मूर्ति सी बनी युवती के चारा ओर परिक्रमा करता रही जिसकी प्रत्यक क्रिया और चेष्टा सदेहाच्छादित है। वह उसे रहस्य के अध-कूप म धकेलती जात हो रही है।

विचित्र सह-यात्री!

सोने का प्रयास कर रहा है। वह महिला की विपरीत दिशा में पैर किये और बच्चे को स्तन से चिपकाये आराम से लेटी है। ओढ़ी हुई कम्बल का आधा हिस्सा नीचे लटक रहा है।

केदार ने पास बगल में बैठी युवती की ओर दृष्टि निक्षेप किया और धीरे से बोला—'यदि आप अपना बिस्तर लगाना चाहें तो अनुचित नहीं होगा।

उसने चौंककर आँखें खोली। लगता है जैसे उसे हल्की सी झपकी आ गई है।

अर्थ पूर्ण मुस्कान लेकर केदार ने पुनः अनुरोध किया— यदि आप सोना चाहें तो बिस्तर लगा लें। मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

वह नीची नजर किये निरुत्तर ही रही। उसने किसी प्रकार के गति विक्षेप का संकेत नहीं दिया।

केदार ने चपल से इधर उधर भी देख लिया। ज्ञात हुआ कि युवती के पास कोई भी बिस्तर नहीं है। आश्चर्य।

उसने सप्रश्न दृष्टि से पूछ लिया— क्या आपके पास कोई बिस्तर भी नहीं है?'

प्रस्तर की प्रतिमा। उससे किसी प्रकार के स्वर की आशा करना व्यर्थ है।

अब आगे केदार भी कुछ नहीं बोला। अवाक् मुख पर जड़ी दो आँखों से उसने एक बार पुनः युवती को निहारा। शीघ्र ही निराश होकर दृष्टि लौटा ली।

इस कठिन मौन मुद्रा को देख जैसे वह कुछ देर तक अपने खोये हुए शब्द ढूंढता रहा। इस बीच उसके होंठ सिल गये। वह उदास मन से उठा और अपना बिस्तर खोलकर बिछाने लगा। इस प्रकार आधी से अधिक वय घिर गई। युवती अपने स्थान पर तिल मात्र भी हिले डुले बिना बनी रही।

लेटने से पूर्व आशंकित हो केदार ने बर्थ के नीचे झांक कर देखा।

उसकी अटची के अतिरिक्त वहा कोई दूसरा सामान भी नही है। सचमुच, धीरे धीरे मारी बातें रहस्य के अमेद्य आवरण म छिपती जा रही हैं।

इस बीच चार छ स्टशन और भी गुजर गय। इस डिब्ब म न तो कोइ यात्रियो की विशेष उल्लेखनीय वद्धि हुई और न कमी। अंधेरे म शायद कोहरा अधिक है अत तारे स्पष्ट दिखाई नही पड रहे हैं।

इमी समय केदार न देखा कि शीत क कारण युवती की घबराहट और कपनी अधिक बढ गई है। प्रतिकार-स्वरूप अपनी इस जडता की भगिमा का तोडकर वह एकाएक सजग और सचेत हो गई। अब वह साडी को अपने चारो ओर ठीक प्रकार से लपटने का यत्न कर रही है। बस वही तो उसका एक मात्र सहारा है—सर्दी से बचने का अतिम आधार।

निश्चित रूप से यह सारी स्थिति इतनी अधिक करुणोपादक और सवदन शील हैं—उस सहज ही म सहन करना प्राय कठिन है जहा तक केदार का प्रश्न है उसकी आरम्भ से ही इस युवती म दिलचस्पी रही हैं। वह क्रमश गहरी तथा तीखी होती जा रही है।

उसने सकरुण स्वर म आग्रह किया— यदि आप चाहे तो कम्बल ले सकती है। मरे लिय तो चद्दर ही पर्याप्त है।'

युवती न जान बूझ कर उत्तर न दन का अभिनय किया—जसे उसने केदार की प्रत्यक्ष अपेक्षा कर दी। इस प्रतिक्रिया स स्पष्ट विदित हो रहा है कि वह उसके प्रश्नोत्तर स रुष्ट है – अप्रसन्न है। अब हारकर चुप हो जान क अतिरिक्त उसके पास दूसरा कोई विकल्प नही है।

एक दीघ नि श्वास लेकर वह बिस्तर म लेट गया। यद्यपि अतमन की दृष्टि बराबर इस मूर्ति सी बनी युवती के चारों ओर परिक्रमा करती रही, जिसकी प्रत्यक क्रिया और चेष्टा रहस्याच्छादित है। वह उसे रहस्य के अध-कूप म धकेलती जात हो रही है।

विचित्र सह-यात्री।

अभी तक कदार इधर उधर करवट ही बदल रहा है। यद्यपि वह युवती खिड़की के कोने में सिर टेक कर साड़ी में मुंह ढक कर जाने कब सो गई। भला इस सर्दी में भी कोई इस प्रकार निश्चिंत हो सो सकता है! विस्मय से उसकी आंखें फटी रह गई। लगा मानो सह-यात्री एक दो दिन से बराबर रात्रि जागरण करता आ रहा है।

पता नहीं कब उसकी भी आंखें लग गई।

हटात् चूडिया का स्वर विचित्र सा खनक गया। केदार की नीद एक झटके से टूट गई। उसने चौंक कर कम्बल क अन्दर से मुह निकाल कर सामने युवती की तरफ देखा। वह गहरी नीद म है। स्थान से हटती हुई उसकी हिलती-डोलती देह बथ के किनारे तक आ गई। अगले ही क्षण उसका हाथ गोदी म से छिटक कर बथ पर पडा और वहा स भी फिसलकर नाचे भूलने लगा। अब थोडी ही देर का विलम्ब उसे नीचे गिराने की स्थिति म पहुचा सकता है।

केदार फुर्ती से उठा। उसने युवती क कन्धो को छूकर किनारे पर से हटाना चाहा। लेकिन उसकी गदन एक ओर लटक गई। उसने किसी प्रकार के सामान्य चैतन्य का भी परिचय नहीं दिया।

ओफ्फ! इस सर्दी मे भी इतनी गहरी नीद।

वह मन ही मन म बोला, मगर इसके साथ एक विचार विद्युत लहर के सदृश्य कौंध गया।

उसने तत्परता से कम्बल तथा चद्दर अपने बिस्तर म से निकाले और आहिस्ता से युवती को ठेलकर अपने बिस्तर म लिटा दिया। उठा कर कम्बल भी उस पर डाल दिया।

इसके पश्चात् स्वय केदार चद्दर लपट कर उस युवती के स्थान पर चुपचाप बठ गया। सिगरेट जलाकर वह इतमीनान से धुआ उगलने लगा।

लगता है बेचारी किसी कारण से पिछली दो-तीन रातो से सो नहीं पाई है।

एक क्षण के लिए उसने पूर्ण सहृदयता और सहानुभूति की दृष्टि उस पर डाली।

सिगरेट खत्म हो गई। धुए के गोल गोल वृत्त भी वहीं शून्य में अन्तर्य हो गये। अब अजीब सी उदासी म लिपटकर यह अप्रीतिकर मौन हृदय म कचोट उत्पन्न करने लगा। उसके सिर मे हल्का हल्का दर्द उठने लगा। आखो म जलन पैदा हो गई। हारकर वह सडास की ओर चल दिया।

मुह हाथ धोकर केदार लौटा तो उसने अपने आपको तनिक स्वस्थ अनुभव किया। चद्दर ओढ कर वह पुन उसी स्थान पर बैठ गया। अब काच लगी खिडकी म से उसने बाहर ताका। खिडकी की लोहे की फ्रेम बर्फ जमी लग रही है। उसने एक दम हाथ हटा लिया। ज्ञात हुआ कि रात पिघलकर निमय शीत के रूप म इस खिडकी म आकर ठहर गई है। दूर क्षितिज के कोने मे चन्द्र की वक्रिम छवि मनोहर प्रतीत हो रही है। आकाश म टके छोटे छोटे तारे उस कोहरे मे धुधले धुधले टिम टिमा रहे हैं।

उसने उधर से ध्यान हटाया। लम्बी सास खीच कर वह डिब्बे मे दूर तक निरीक्षण करने लगा। बार बार उसकी दृष्टि उस हृदयहीन एकान्त स टकरा कर लौट आती है।

कैसे विमन भाव स वह सोये हुए लोगो को कुछ देर तक टकटकी लगा कर देखता रहा। सभी अपने कम्बल और चद्दर म दुबके पडे है। कुछ ऐसे विरले भी है जो रजाई के चारो कोने दबाकर खर्राटे ले रहे हैं। एक स्त्री की छाती पर से कम्बल हट चुका है। उसका खुला दूध से भरा गदराया स्तन स्पष्ट दिखाई दे रहा है जिसका अगला नुकीला काला हिस्सा पता नही कब बच्चे के मुह स निकल गया है।

एक विचित्र सी कल्पना से अभिभूत उसका मन न जाने कैसा-कैसे होने लगा!

अब उसकी निरुद्देश्य भटकती हुई दृष्टि सामने की बर्थ पर टिक

गई। वह अभिभावक पुरुष कम्बल ओढ़े कोने में गठरी बना खर्राटे ले रहा है। वह संरक्षण वाली महिला अभी तक सो रही है। उसका मुह अन्दर की ओर है। टागें मुडी हुई हैं। घुटने सीट पर सटे हुए हैं। ऊपर कम्बल लापरवाही से पड़ा है। इस कारण पूरी पीठ से वह कम्बल हट गया है और ऊपर खिसक गया है। साडी का पल्लू का सिरा भी महिला की टागों पर आ गया है। पटीकोट का निचला भाग अब स्पष्ट दिखाई पड रहा है।

जाहिर है कि साझ के धुधलके में केदार उस महिला को ठीक प्रकार से नही देख सका था। अनावश्यक चेहरे की तरफ विशेष ध्यान ही नही गया। किन्तु उसके लम्बे कद तथा इकहरे बदन पर इन भारी और विशेष गोलाइया लिए हुए नितम्बों ने उसके ऊपर वशीकरण का प्रभाव डाला है। नीचे धसी कमर के पार्श्व मे उभरी हुई सुडोल तथा मासल गोलाइया एक गिरी शृग की भाति दृष्टिगोचर हो रही है जो क्रमश घुटनो की दिशा म ढलवा होती गई हैं। शेष शरीर की तुलना म वह उठा हुआ भाग कुछ अधिक चढा हुआ है और पुष्ट एव कमनीय ज्ञात हो रहा है।

कुछ देर तक उसकी दृष्टि रुक रुक कर इस दृश्य म अटकी रही। टागें और पीठ के बीच वाले हिस्से की वह सैर करती रही। वह दृश्य उतना ही रोचक और आकर्षक है। ऐसी स्थिति म तृषित आखें अतृप्त भाव से रस पान करती रही।

एक कोई स्टेशन। खिडकी का पल्ला उठाकर केदार ने चाय वाले को जिननी अकुलाहट से पुकारा परतु प्रत्युत्तर नही मिला। उसने पुन प्रयास करना चाहा शीघ्र ही निराश हो गया। वही चारो ओर अधकार। हल्के कोहरे म लिपटी रात। गैस लालटेन और घटी के टुन टुनन का स्वर।

उसने खिडकी पर शीशा चढा दिया।

अब नीद की परिया उसे मीठी मीठी थपकिया देने लगी। जलती

आखा की बोझिल पलकें कभी बद होती हैं   कभी खुलती हैं ।

टन चलने लगी तो उसे अनुभव हुआ कि वह एक झूले पर बठ गया है । तेज हिंडोले उसके थके हुए शरीर को अवश और शिथिल कर रहे हैं ।

एक लम्बी यात्रा के पश्चात ट्रेन अब अपने गन्तव्य की ओर निरंतर अग्रसर है। सुबह की धूप खिडकियों में से छनकर डिब्बे में बिछ गई है। निरभ्र नीलाकाश दिखने में अधिक मुस्कराता हुआ ज्ञात हो रहा है धुंध का हल्का हल्का प्रभाव जागते पड़ घूमते मैदान और सुन्दर चक्कर लगाते पवन मामलों पर अभी तक शाप है।

प्राय डिब्बे में असाधारण गतिशीलता परिलक्षित हो रही है। उस के प्रत्येक रव में चेतना का उत्साह वर्द्धक नया स्वर अनुगुंजित हो रहा है। रात्रिकालीन अवसन्नता का कहीं भी विकार ग्रस्त चिह्न अंकित नहीं है। परस्पर बातचीत और क्षेम-कुशल के द्वारा पूर्व सहृदयता तथा मैत्री भाव का असंदिग्ध रूप से परिचय दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त वर्तमान राजनैतिक गतिरोध तथा असंतोष पर विशेष चर्चा चल पड़ी है।

केदार ने आँखें खोलीं। वह सम्भल कर बैठ गया। कदाचित सोकर उठने वाला में वह सबसे पीछे है एक आलसी और सुस्त व्यक्ति। उसकी आँखों में अभी तक नींद की मीठी मादकता लहरा रही है।

पलकों की चिलमन उठाकर उसने आश्चर्य से देखा कि युवती हाथ मुँह धोकर तनिक स्वस्थ होकर गर्दन झुकाये उसके पीछे बिस्तर पर चुप चाप बैठी है।

केदार ने मुस्कराने की कोशिश करते हुए पूछा—'कुछ नींद हो सकी।

'जी हाँ।"

वहा से लौटकर उसने देखा कि सामने वाली बथ प्राय खाली है। शायद यह रतनगढ स्टेशन है। वह भद्र-पुरुष और महिला दोनो उतर चुके हैं।

तभी चैकिंग करता हुआ एक टीटी वहा आ गया। उसने व्यस्त भाव से कहा— टिकिट टिकिट ।

'जी ई इ ई ।

युवती एकदम सकपका कर घबरा गई।

"टिकिट ।"

जी ।'

उद्वेग जन्य चचलता से उसके नेत्र इधर उधर भटकने लगे।

जल्दी कीजिये ।"

इतना कहकर टीटी ने अविश्वसनीय दृष्टि से उस युवती को ध्यान-पूर्वक देखा।

इसी समय केदार आगे बढा। अपनी पतलून की जेब से एक टिकिट निकाल कर वह शिष्टता पूर्वक बोला— क्षमा कीजिये। टिकिट लेने थे दो और भूल से मेरे मित्र केवल एक ही लेकर आ गये। इस बीच ट्रेन रवाना हो गई।

इस सफेद झूठ को सुनकर टीटी की आखे कपाल पर चढ गई। वह गहरी निगाहो से कभी युवती और कभी केदार को निहार रहा है।

' और लीजिये ये रुपये ।' किंचित् मुस्कराते हुए केदार ने दस-दस के चार नोट पकडा दिये— कृपया, एक रसीद बनाने का कष्ट करें।'

'अच्छा ।"

युवती अवाक्—सभ्रम ।

अगल स्टेशन के आने से पूव ही क्ेदार ने अपना बिस्तर बाधकर वथ के नीचे रख दिया। सामन खाली वथ पर पैर फलाकर वह आराम से वठ गया और सिगरेट जलाकर धु य क वाल्ल छाडने लगा।

यह यड-क्लास का कम्पाटमट प्राय खाली हो चुका है। खिडकिया पर स शीशे हट चुके है। सुहावनी धूप तेज़ हवा क साथ फल गइ है। ऊपर की वथ पर अब वधा हुआ सामान पडा है। सभी लोग खिडकी की दिशा म भाककर बाहर का दृश्य देखन का प्रयास कर रह है।

सिगरेट को पैर तले कुचलकर केदार ने युवती की ओर दृष्टि निक्षेप किया। इसक पश्चात् धीरे से पूछ लिया— क्या आपके पास टिकिट भी नही है ?

सम्भवत उसने किसी भी प्रकार की सफाई देने की आवश्यकता अनुभव नही की। वह गदन नीचा किये गोदी म पडी कलाइयो को बराबर घूरती रही।

"इस प्रकार बिना टिकिट सफर करना कुलीन और सम्भ्रात घराने की महिलाओ को शोभा नहा देता।

लगा जसे इस उपदेशात्मक उक्ति का उस पर कुछ भी प्रभाव नही पडा। वह पूववत् गदन भुकाये स्थिर प्रतिमा की भाति वठी रही।

ट्रेन रुक गई।

कदार ने चाय वाल को पुकारा। इसके साथ कुछ नमकीन तथा मिठाई का भी आदेश द दिया।

इस स्टेशन पर थोडा बहुत उतर चढ का शार उठा लेकिन वह कुछ

डिब्बे तक ही सीमित रहा। सौभाग्य कहिये या और कुछ इस डिब्बे म स केवल यात्री उतरे – चढा एक भी नही।

वरा सब सामान एक ट्रे मे पकडा गया। केदार अब युवती की तरफ बराबर देख रहा है। यद्यपि वह उसकी ओर उन्मुख नहीं है। जान-बूझ कर बेरुखी का भाव अख्तियार कर रखा है। जाहिर है कि वह उसके आतिथ्य को स्वीकार करने म असमर्थ है।

केदार ने अपनत्व का भाव लेकर आत्मीयता के स्वर म सादर निमन्त्रण दिया।

लीजिये चाय व नाश्ता तयार है। आप इधर मुह कर लें ।'

इस पर भी युवती ने कोई प्रतिक्रिया प्रकट नही की। केदार ने एक बार पुन प्रयत्न किया।

'देखिये चाय ठण्डी हो रही है और आप व्यर्थ की औपचारिकता म चुप है ।'

वह अब भी अनिच्छुक है—अनुत्सुक है।

उसका यह असम्पृक्त और अनासक्त भाव एक प्रकार के तिरस्कार का सूचक है अत केदार के मन म खीझ उत्पन होना स्वाभाविक है। धीरे धीरे उसका यह व्यवहार उसकी सहन शक्ति की सीमा के बाहर हो गया। सहसा असहिष्णु वन कर वह बोला— तो मैं बरे को बुलाकर अभी सारा सामान लौटा देता हू। आप चाय नही पीती तो मैं भी नही पाऊगा ।'

बडा विचित्र हठ है। प्रथम बार उसका सुकठोर हृदय द्रवित होगया। अपने स्वर को अत्यधिक सहज और मदुल बनाकर उसने कहा— आप मेरे पीछे क्या हठ कर रहे है ?

'मैं इन्सान हू—पत्थर नहा। —केदार झुंझलाहट के बीच कहने लगा—'मैं आरम्भ से ही देख रहा हू कि आप भूखी-प्यासी यात्रा कर रही हैं और और मैं ।

केदार का स्वर अचानक टूट गया। यद्यपि उसका यह सहानुभूति पूर्ण कथन आशा से अधिक सफल सिद्ध हुआ। युवती तनिक सकोच के

उपरान्त मान गई। उसने धीरे से हाथ बढ़ाकर चाय की प्याली उठाई।

लगता है जैसे इस मौन व्रत के टूटने के साथ साथ यह असहयोग का भाव भी समाप्त—प्राय होने की दिशा में प्रगति करेगा। इस सम्भावना से कदापि इन्कार नहीं किया जा सकता।

इस दौरान तीन चार स्टेशन और गुजर गये। दोनों लगभग मौन ही बने रहे—यही कहना होगा। देखने वाले को ऐसा लग सकता है। परन्तु स्थिति इसके एकदम विपरीत है। सचमुच केदार की इस महिला में दिलचस्पी रंच मात्र भी कम नहीं हुई है। पहली दृष्टि में वह उसे एक साधारण लड़की प्रतीत हुई थी। किन्तु धीरे धीरे उसकी असाधारण गम्भीरता और असामान्य चुप्पी देखकर वह आश्चर्य चकित रह गया। उसे वह रहस्यमयी लग रही है जिसके मन की थाह पाना सम्भव नहीं है। अब दूसरी ओर महिला का वह अनुत्सुक भाव क्रमशः गहरा और कठोर होता जा रहा है।

अन्त में नदी का पुल भी निकल गया। नगर की गगन चुम्बी अट्टालिकायें दूर से ही दृष्टिगत होने लगीं। लम्बी लम्बी सड़कें भी अपने अस्तित्व की सूचना देने लगीं। डिब्बे में असाधारण हलचल मच गई। सभी यात्री अपने सामान को बांधने में व्यस्त हो गये।

तभी सिगनल भी पार हो गया। इसके पश्चात ट्रेन की दौड़ से प्लेटफार्म भी आ गया। यहां काफी संख्या में भीड़ एकत्रित है। कुली डिब्बों के साथ-साथ भागने लगे।

एक हल्के से झटके के साथ ट्रेन रुक गई। वहां उपस्थित सम्बन्धी और रिश्तेदारों ने अपने मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया। औपचारिक रूप से परस्पर क्षेम कुशल पूछने का क्रम चलता रहा। इसके बाद कुली डिब्बे के अन्दर दाखिल हो गये और सामान उठाने लगे। उनकी तत्परता और कार्य कुशलता देखने योग्य है।

कुछ ही देर में डिब्बे का शोर खत्म हो गया। अब तक भीड़ भी छंट चुकी है। केदार चुपचाप अपने एक हाथ में अटैची और दूसरे में

बिस्तर लेकर नीचे उतरा। उमने कुली को पुकारा, मगर वे सब सामान लेकर प्लट फाम के बाहर पहुच चुके हैं। उनके लौटने की कुछ समय तक प्रतीक्षा करनी पडेगी—यह स्पष्ट है।

दूर से एक लोह दानव की कण कटु चिंघाड सुनाई पडी, जो माल के डिब्बों की शार्टिंग कर रहा है।

उधर से ध्यान हटाकर केदार ने उस डिब्ब म बैठी उस एक अकेली युवती को सप्रश्न दृष्टि से देखा, जो पत्थर की प्रतिमा बनकर अभी तक निश्चल—स्थिर है। उसकी यह जड अविचलित भाव भगिमा वास्तव म हास्योद्रेक के योग्य है।

केदार ने अपन आपको किंचित सयत किया। वह खिडकी के पास आकर धीरे से बोला— अब उतर भी आइये।

लेकिन किसी भी प्रकार का गति सकेत नहा। निर्जीव बुत है, जो हिलना डुलना भी नही जानता।

हठात कदार के होठा पर हल्की सी स्वर हीन हमी खेल गई।

'कदाचित आपको मात नही कि यह ट्रेन अब यहा से आगे नही जाएगी। कुशल इसी म है कि आप नीचे उतर आए ।

'क्या?'

युवती अचानक चौंक पडी। क्षण भर म उसका चेहरा किमी अज्ञात भय और आशका से त्रस्त हो गया।

जी हा। यह टेन यहा खत्म हो गइ।'

इसके पश्चात केदार ने रहस्यपूर्ण स्वर म मुस्कराते हुए कहा— आप निश्चित रह। मैं आपको भला भाति जानता हूँ ।

'जी !

इसके साथ युवती की विस्मित आखो से एक मूक प्रश्न फूट पडा।

केदार के मुख पर कुतूहल पूर्ण मौन हमी की रेखाय फल गई।

'जी हा। मैं आपको जानता हूँ ! उसने विश्वास पूवक कहा— आप घर स भागी हुई हैं !"

डगमगाते हुए पैर।

लडखडाते हुए कदम।

यद्यपि वह चल रही है तथापि इसम कोई शक नही है कि वह एक प्रकार स विवश है—लाचार है, किसी क सरक्षण म है। गति म जो तीव्रता की प्रेरणा भावना होती है यहा उसका सवथा अभाव है। लगता है जस वह अतमन म कुण्ठित हो गई है। कोई अनेय शक्ति है जो उस आग बढ्न स बार बार रोकती है। इस पर भी वह इस अनजान और अपरिचित व्यक्ति के पीछे चुपचाप खिंचा चली जा रही है। क्या ?—कस ?—वह स्वय नही जानती।

यह स्पष्ट है कि अज्ञात भय और आशका स रह रह कर उसका हृदय काप उठता है। उस लगता है मानो रीढ की हड्डी क पास से कोई चीज सनसनाती हुई निकल कर अचानक उसकी आत्मा म तीर के सदृश प्रवेश कर गई। बस उसक पसाना सा छूट आता है। किन्हा असम्भावित आशकाओ तथा अप्रत्याशित दुश्चिन्ताओ स उसका सम्पूण मन डूब-डूब करन लगता है। अपनी इस असहायावस्था से मात्र एक ही बात प्रतिबिम्बित हो रही है कि अब सब दिशायें अधकारमय है और वह पथ भ्रष्ट होकर निरुद्देश्य भटक रही है

तागे म बठा तो एक बार फिर वही चाज रीढ की हड्डी क पास स काप कर पसलियो को बेध कर निकल गई। अगल क्षण उसे विचित्र-सा अनुभव हुआ जस यहा एक अद्भुत चमत्कार हो गया है। सच-मुच [illegible] म इतना अभिभूत [illegible] वह कुछ समझ ही नहा

पा रही है। जो पर घर छोडते समय भी अपने संकल्प और दृढ निश्चय के पीछे लडखडाये नही थे वे ही आज इस नई डगर पर आकर डगमगाने लगे हैं। घर छोडने की वेदना और उसके कारण मिलने वाली प्रताडनाओं को वह जो कडा करके पी गई थी मगर आज इन बदली परिस्थितियों तथा अज्ञात व्यक्तियों के बीच में अपने आपको पाकर वह अनेकानेक दूषित सम्भावनाओं तथा दुष्कल्पनाओं से भयभीत हो उठी है। सोचते सोचते उसका मस्तिष्क भारी-सा हो गया।

पता नही कैसे लोग हैं ?

कैसा उनका व्यवहार है ?

उनके घर का कैसा वातावरण है ?

परिवार के सदस्य उसका आदर करेंगे अथवा ?

इस परिवर्तित परिवेश को वह सहन भी कर सकेगी या ?

ये कतिपय प्रश्न हैं जिनके प्रभाव से मन बोझिल हो रहा है।

अब !

तभी उसके कलेजे में एक तीखी टीस सी उठी और देखते देखते सारी देह यष्टि को अस्थिर तथा अधीर कर गई।

एक प्रश्न !

कहीं यह व्यक्ति उसे बहका कर तो नही ले जा रहा है ?

कुछ देर के लिये वह तांगे में निर्जीव प्रतिमा सी जड हो गई, मानो उसके प्राण पखेरू अकस्मात उड गये हैं।

इसी समय दुःस्वप्न की भयंकर छाया उसके मनश्चक्षुओं के आगे परिक्रमा कर गई। इसके अभ्यन्तर में असह्य दुःख, घोर अपमान और न पी सकने वाली ग्लानि के अतिरिक्त कुछ भी शेष नही है।

गुण्डा !

अपराध की प्रवृत्तियों में विशेष रुचि। विकृत मनोदशा। कठोर हृदय और निर्मम भावनायें ! दया, ममता करुणा और सद्विचारों से सर्वथा रिक्त !

खट !

इसके साथ वह अंधेरा कमरा प्रकाश से सहसा जगमगा उठता है। वह अन्दर प्रवेश करके दरवाजे में सिटकनी लगा रहा है।

वह आगे बढ़ रहा है जैसे भूखा बाघ अपने शिकार को मार रहा है।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह नशे में धुत्त है। इस कारण से उसके पैरों का सन्तुलन एकदम बिगड़ गया है। उसके मुख पर कामुकता से अतिरंजित विचित्र प्रकार के क्रूर भाव अंकित हैं। लगता है, जैसे इसने आज तक किसी पर कोई दया नहीं की।

दूसरी ओर वह आशक्ति और डरी हुई हिरनी की भांति एक कोने में खड़ी थर थर काँप रही है। चेहरा काला-स्याह हो गया है। आगे में तितलियाँ सी नाच रही हैं। डबते हुए दिल को थामकर वह कातर स्वर में गिड़गिड़ाई—भगवान के लिये मेरे ऊपर रहम कीजिये। मुझे छोड़ दीजिये। आपका बड़ा उपकार उपकार होगा।

और इसके साथ करुण सिसकी उसके गले में प्रतिध्वनित हो उठी।

परन्तु सब व्यर्थ। पानी की बूंद चिकने पत्थर पर पड़ कर फिसल गई।

मुक्त कण्ठ से वह अट्टहास कर उठा।

उसकी छाती गाल और सांप सी पलक हीन आंखों के रक्तिम डोरे हठात तन गये। वह अपने सूखे होठों पर जीभ फेरकर कामातुर स्वर में बोला—'तुम कितनी सुन्दर हो। तुम मेरी हो सिर्फ मेरी! आ जाओ मेरी रानी और मेरे धड़कते सीने से लग जाओ। आ जाओ आ आ।'

नहीं।

उसके कण्ठ से मर्मान्तक चीख फूट पड़ी।

आह! इस डरी और सहमी हुई अवस्था में भी तुम कितनी

नाजुक, सुदर और प्यारी लग रही हो आह!'

उसकी तपित आख एकाएक ऐसे चमक उठी माना वह उसकी सम्पूण आकृति को निगल जाना चाहती हैं।

उसने आग बढकर साडी का पल्ला पकड लिया और उसे अपनी ओर खीचने लगा।

'आ जाओ मेरी दिलरुबा ।'

"नही नही ।'

प्रतिरोध का यह स्वर नारी के दुबल मन से टूट कर बिखर गया। शीघ्र ही वह निरुपाय अबला दोनो हाथो म मुह ढापकर रोन लगी ।

दुदम्य—दुर्विनीत!

है किसी म सामथ्य कि उस कोई सम्हाले। वल्गाहीन तीव्र अश्व की अनियन्त्रित गति। कोई भी सामने आजाय तो वह निर्मोही अपने परो तले कुचल कर रख देता है। बरसाती नदी का निबाध प्रवाह जो केवल ध्वस-लीला ही करना जानता है। कौन है, जो उसकी उद्दाम लहरो क प्रवेग को रोक सक। आधी का धूलभरा बादल। उसकी गह राइ उसकी गति वेग उसके आवतन का आलोडन सम्पूण अस्तित्व को असदिग्ध रूप से आत्म सात् कर जाता है।

उसके वक्ष का अन्त भाग जसे हिल गया। यह आकस्मिक एव आतरिक यत्रणा उसके मुह से फूट पडी।

ठहरिये ।'

केदार हठात चौकन्ना हो गया। उसने पाश्व मे बठी युवती को तनिक ध्यान से देखा। पूछा— क्या बात है?'

'जी जी '—युवती की आखें डबडबा आई। क्षण भर पश्चात उसने धीरे स कहा— आप मेरे पीछे क्या कष्ट उठा रहे है?"

कुछ है, तभी तो उसके गले म कुछ अटक गया है। केदार

चकित रहकर उसके चहरे पर होने वाले भाव परिवतन को लक्ष्य करता रहा।

अभी इस समय युवती में इतना बडा भावान्तर क्या आ गया ?

कल्पना की आशा के आगे यह प्रश्नवाचक चिह्न आकार हो गया।

यद्यपि उसने सयत होकर कहा— देखिये यह शहर है। यह बाजार है और यहा अटूट भीड भी है। जो कुछ कहना है या जो कुछ करना है वह घर चलकर ही करें। बजार में यहा हास्य का पात्र बनने में कोई लाभ नहीं।'

"घर पर घर !

बस उस आकुल अश्रु स्रोत में फसकर केवल ये ही शब्द अस्पष्ट से ध्वनित होकर रह गये।

परन्तु घबराये हुए विवश नारी मन को आज अपनी वास्तविक स्थिति का पूर्ण रूप से ज्ञान हो गया। सचमुच वह अपने निकटतम पुरुष सम्बन्धी के सरक्षण के बिना कितनी निराश्रित पगु और हतभागी है। यह एक प्रकार का कटु सत्य है कि इस बन्धु हीन बन्धन हीन और निर्मम नारी जीवन का कोई आधार नहीं—कोई मूल्य नहीं। यह कथन भी अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं है कि उसकी कोई सार्थकता भी नहीं। भीतर बाहर से विच्छिन्न उसका एकाकी पन सर्वथा अपूर्ण है। हृदय प्रा स निर्ममता मात्र केवल प्रवचना है। इसके आगे कुछ नहीं। हृदय को बहलाने के उद्देश्य से कितने ही भ्रम जाल बुन जाते हैं—भ्रान्त धारणायें बना ली जाती हैं यद्यपि सत्य की अवहेलना नहीं की जा सकती।

आज यह तीखी अनुभूति उसके अभ्यन्तर में कठोर स्वर के रूप में ध्वनित प्रतिध्वनित हो रही है ।

गली क बीचा-बीच नाहिनी तरफ जो एक नया सा मकान है उमी के सामने ग्राकर तागा रुक गया। केदार उसमे से कूद पडा। मुह ऊचा करके पुकारा— बेबी बेबी !

यही उसका निजी घर है। लगभग एक वर्ष पहले इसे बनवाया था। आज भी इस तीखी धूप म उसकी कान्ति चमक रही है।

यद्यपि मकान बडा नही है तथापि उसे छोटा भी नही कह सकते। नीचे गली से लगे हुए दो बडे कमरे है, जिनके मध्य से घर म जाने के लिए एक छोटी सी सकरी गलरी है। उनके सामने दालान नुमा बरामदा है, जिससे मिले हुए दो कमरे और है। सबसे पीछे रसोई और भण्डार हैं। उनसे हटकर कुछ दूर पर ही गुसल घर और सडास है। आगन मे से एक छोटी और सकरी गलरी पीछे की ओर भी जाती है। छत पर ग्रीष्म काल म शयनवास के लिय एक बडा सा कमरा भी बना हुआ है। कुल मिलाकर यह मकान एक परिवार के रहने के लिये पर्याप्त है।

घर के अदर जाने वाला द्वार भीतर स बन्द है। केदार ने पुन पुकारा— बेबी बेबी ।

कमरे की जाली लगी खिडकी मे स किसी ने झाक कर बाहर देखना चाहा और भीतर चला गया। थोडी देर शान्ति रही। इसके पश्चात एक बालिका न घर का दरवाजा खोला। उसने उन्मुख दृष्टि से केदार को देखा और प्रसन्न भाव से चिल्लाई — दादी मा ! बाबूजी आ गये ।"

इधर बालिका देहली पार करके दौडती हुई आगे बढी। उधर केदार भी हसकर फुर्ती से पर उठाता हुआ सामने जाने लगा। बस,

मध्य मे उसने बालिका को गोदी म उठा लिया और बडे प्यार से उसके कपोलो को चूमने लगा ।

मरी वेबी मेरी नन्ही गुडिया ।

हठात कदार का स्वर अपूव पुलक से खिल उठा— तो आप मरे लिय एक अच्छी सी गुडिया लाये है न ? '—बालिका ने उल्लास मिश्रित आश्चय से पूछा ।

अरे हा । बडी सुदर बडी प्यारी । अगर तू देखेगी तो खुशी से नाच उठगी ।

अच्छा ।

इस मधुर मिलन क दृश्य को देखकर भी वह युवती एक दम उदासीन ही रही । पता नहा क्यो बार बार उसका दिल कटते कगार की भाति धसकने लगता है । अनजान घर—अपरिचित परिवेश । वह यहा क्या आई ? क्या सम्बध है उसका इस घर से ?—मन म एक प्रकार का पश्चाताप सा होने लगा । इसी उलझन म वह तागे क अदर एक ओर कोने मे सिमट सिकुड कर बठ गई ताकि किसी की दृष्टि उस पर सहज ही म न पड सके । एक हाथ स दूसरे की कुहनी को साधे वह धीरे धीरे निचल होठ को नोचती रही । मन होता है कि वह पख लगाकर यहा से उड जाय ।

इसी समय द्वार के बीच म एक वद्ध की साकार मूर्ति का आगमन हुआ । वह विस्मय से बोली— तुम लोग गली म खड खड तमाशा करते रहोगे या घर क अन्दर भी आओगे ।

'ओह, मा ! भूल हो गई ।

कदार न बालिका को गोदी म स उतारा । लौट कर उसने ताग म स भाले रंगे अपने बिस्तर व अटैची को तत्परता स उठाया और द्वार की ओर चल दिया । एक पाव उसका घर की दहलीज के भीतर है और दूसरा बाहर तभी कुछ स्मरण करके कदार उच्च स्वर म बोला— 'अरे! मैं तो भूल ही गया !

'क्या ?"

वद्ध माजी ने जिज्ञासा वश पूछ लिया।

उत्तर न देकर केदार तांगे की तरफ बढ़ गया।

अरे, क्या भूल गया ?"—माजी ने हँसकर पुन पूछ लिया—" तू तो ऐसा भुलक्कड़ कभी नहीं रहा ।'

इस पर भी केदार ने सुनी अनसुनी कर दी।

वह घूम कर तांगे के पास आया और क्षमा याचना के स्वर में बोला— 'भूल हो गई। अब आप नीचे उतर आइये ।'

युवती ने धुंधली आंखों से एक बार केदार को देखने की कोशिश की, लेकिन दृष्टि पथ में अनायास ही आर्द्रता छा गई।

विलम्ब होते देख केदार सहसा उद्विग्न हो उठा। उसने विनय पूर्वक कहा— देखिये मेरी मां द्वार पर खड़ी है। कुछ तो उनका ख्याल रखिये ।

युवती ने परिस्थिति की गम्भीरता को प्रथम बार अनुभव किया। वह थोड़ी सी हिली। इस बीच उसके अवचेतन मन में एक विद्युत लहर सी दौड़ गई। अपने भारी भारी—एक प्रकार से चेतना शून्य—पैरों को बड़ी कठिनाई से उठाकर वह तांगे में से उतरी। पल भर के लिए सीधी खड़ी होकर वह अपने साड़ी के आंचल से सिर ढकने का यत्न करने लगी। इस कायकलाप के मध्य उसकी सशंकित दृष्टि माजी की तरफ चुपके से उठ उठ जाती है।

'चलिये अन्दर चलिये।'

केदार का स्वर सुनकर डगमगाते पैरों को उसने नियन्त्रित किया। गर्दन झुकाकर केदार के पीछे चलते हुए एक एक क्षण उस अज्ञात ग्राम से बेचैन कर रहा है। वह भली भांति जानती है कि दो अपरिचित निगाहें प्रश्न वाचक चिह्न लिये उसे बेध रही हैं।

माजी ने दंग रहकर पास आते हुए केदार से पूछ ही लिया—"अरे यह कौन है ?'

मध्य म उसने बालिका को गोदी म उठा लिया और बड़े प्यार से उसके कपोलो को चूमने लगा।

मेरी बेबी मेरा नन्ही गुडिया ।

हठात केदार का स्वर अपूर्व पुलक से खिल उठा— तो आप मेरे लिये एक अच्छी सी गुडिया लाये हैं न ? —बालिका न उल्लास मिश्रित आश्चर्य स पूछा।

अरे हा। बडी सुदर बडी प्यारी। अगर तू देखेगी तो खुशी से नाच उठेगी।

अच्छा ।

इस मधुर मिलन के दृश्य का देखकर भी वह युवती एक दम उदासीन ही रही। पता नही क्या बार बार उसका दिल कटते कगार की भाति धमकने लगता है। अनजान घर—अपरिचित परिजन। वह यहा क्या आई ? क्या सम्बध है उसका इस घर स ?—मन म एक प्रकार का पश्चाताप सा होने लगा। इसी उलझन म वह ताग के अदर एक ओर कोने म सिमट सिकुड कर बठ गई ताकि किसी की दृष्टि उस पर सहज ही म न पड सके। एक हाथ से दूसर की कुहनी को साधे वह धीरे धीरे निचले होठ को नोचती रही। मन होता है कि वह पख लगाकर यहा से उड जाय ।

इसी समय द्वार के बीच मे एक वद्ध की साकार मूर्ति का आगमन हुआ। वह विस्मय से बोली— तुम लोग गली म खड-खडे तमाशा करते रहोगे या घर के अन्दर भी आओगे ।

ओह मा ! भूल हो गई ।

केदार ने बालिका को गोदी म स उतारा। लौट कर उसने तागे म से आगे रखे अपन बिस्तर व अटची को तत्परता स उठाया और द्वार की ओर चल दिया। एक पाव उसका घर की दहलीज के भीतर है और दूसरा बाहर तभी कुछ स्मरण करके केदार उच्च स्वर मे बोला— अरे ! मैं तो भूल ही गया !"

सम्भवत केदार को इस आसन्न संकट की पहले से ही आशंका थी अत मुक्ति का सहज सामान्य उपाय भी खोज लिया था। उसने मन ही मन। शान्ति पूर्वक वह कहने लगा— मा ! ये मेरे एक मित्र की छोटी बहन है। सौभाग्य से ट्रेन में उनसे भेंट हो गई। वे व्यापार के सम्बन्ध में बम्बई गये हैं।

'फिर ?

माजी के इस प्रश्न से केदार घडी भर के लिये असमंजस में पड गया। तनिक झिझकते हुए वह बोला— ये उनके साथ मेरे करने के लिये चली आई। इस शहर को इन्हे देखना है इसलिए ये रुक गई। आगे नहीं गई। अब वापिस लौट कर वे आयेंगे तब ले जायेंगे।

उसके होठो पर खिसियानी हसी की हल्की हल्की छाया अनायास ही तर गई।

मा जी की अविश्वसनीय आखे हठात कपाल पर चढ गई।

केदार अब उतावली मे बोला— वाह मा ! तुम भी खूब हो। सब कुछ यहीं गली में खडे रहकर पूछ ताछ करोगी या घर में आने को भी कहोगी ।

'अरे ! '—माजी का अकस्मात ध्यान टूटा— आओ आओ। तुम लोग अन्दर आओ ।

युवती ने एक गहरी सास ली उसे शक था कि केदार अभी सब कुछ उगल देगा। तब माजी की आखो से बरसती घृणा एवं विरक्ति उसे आत्म घाती ग्लानि के अन्ध कूप में धकेल देती और ।

वह चुप चुप कमरा । उसम एक अकेली वठी है श्रान्त एव थकी हुई युवती । मलिन वस्त्रा से भान हो रहा है कि उसन अभी तक स्नान नही किया है । चोटी को छाती पर लिए उससे खलन का प्रयास कर रही है । कभी एक लट खोलती है—कभी दूसरी । उसकी पतली पतली उगलियें बालो को अनायास ही फला देती है और थोडी देर म उन्ह समट भी लेती है । विचित्र सी मन स्थिति है उसकी । लगता है जसे लटो म फसी हुई काई एक उलभन है जिस खीचकर निकालन की चष्टा कर रही है । लेकिन न तो वह उस सुलभा पाती है और न

अध खुल किवाडा की दराज म स उसन माजी के पास बाहर बरामद म वठे केदार को भरपूर दृष्टि स देखा । सचमुच वह कितना बदल गया है ! सूरत और शरीर म इतना अधिक परिवतन ! आश्चय कुछ दर पहले वह सफर की क्लान्ति से अभिभूत था । चेहरे मे अनाकषक रूखापन दीख पड रहा था । यद्यपि अब ताजगी और लुनाई की दीप्ति झलक रही है । इसम पूव मुस्कराहट क बदले विचित्र सा अस्त-व्यस्त भाव ! देखन और बोलन क अन्दाज म गहरी सवेदना और सहानुभूति! इस पर स्नानादि स निवत होकर सुन्दर वस्त्रा म उसका व्यक्तित्व एक प्रकार से निखर गया है । चमकती आखें और गाल ! होठो पर फूट पडने वाली सहज स्वाभाविक हल्की सी हसी !

कृतिम गम्भीर मुख मुद्रा बनाकर उसन कहा— 'मा ! पता नही कौन रतनगढ स्टेशन पर इनके कपडो की अटची उठा कर ले गया । अच्छा !'

कहने लगा— 'यद्यपि आप कहीं भी जाने में और किसी भी समय लौट आने में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं। निःसंदेह मुझे आपको रोकने का कोई अधिकार भी नहीं है। लेकिन यह अपरिचित शहर और अजानी जगह कहीं आपके लिए कष्ट का कारण बन सकती है। दुर्योग में आप किसी अज्ञात संकट में भी पड़ सकती हैं। मेरा अनुरोध केवल इतना भर है कि आप यहां से चुपचाप कहीं चली न जाएं।'

युवती की गर्दन एकदम झुक गई। अभी कुछ देर पहले वह अपने अतीत को एक प्रकार से विस्मरण कर चुकी थी, वहां किसी ने निष्ठुरता पूर्वक पुनः धकेल दिया है। अब तो वह शिथिल और क्लान्त प्रतीत हो रहा है।

एक लघु अंतराल के पश्चात केदार पुनः कहने लगा— 'संयोग से आप मेरे संरक्षण में आ गई हैं। मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं? कहां से आई हैं? क्यों आई हैं? घर का मोह परित्याग करने का क्या कारण है? इन सब बातों से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ हूं। यदि मैं इनके उत्तर चाहूंगा तो मुझे विश्वास है कि आप सही और ठीक ठीक उत्तर देने की मनःस्थिति में भी नहीं हैं, अतः इस सम्बन्ध में फिलहाल चुप्पी साध लेना ही लाभदायक है।' परन्तु मेरा एक आग्रह है कि।

युवती के उत्सुक नेत्र अपलक हैं—निष्कम्प हैं।

क्षण भर ठहर कर केदार पुनः बोला— 'मेरा दिल तो आपको इतना आग्रह भर है कि आप मेरा आतिथ्य स्वीकार करें। इस बीच यहां रहकर आप एक भले घर की शीलवती युवती की भांति व्यवहार करें ताकि मां को किसी भी प्रकार का शक न हो। इसके अतिरिक्त ठण्डे दिल और स्थिर दिमाग से अपने भविष्य का पथ सुनिश्चित कर लें। इसके उपरान्त यदि आप कहीं भी जाना चाहेंगी तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। आशा है आप मेरा अभिप्राय समझ गई हैं। इसे अन्यथा न लेंगी।'

इतना कहकर केदार मेज पर कपड़े रखकर बिना किसी उत्तर की

प्रतीक्षा किये बिना चला गया।

परन्तु इसकी तत्काल ही प्रतिक्रिया हुई।

' भले घर की शीलवती युवती! हुम!"—युवती के अधरों पर एक तीखा व्यंग उभर आया—'वाह रे छलिया पुरुष! तुमने कितने ढोंग कितने प्रपंच कुत्सित मर्यादाओं के रच हैं केवल नारी को अपनी चरण चेरी बनाने के उद्देश्य से। शीलवती गुणवती, सौभाग्यवती, धर्म परायण पतिव्रता और न जाने कितना शब्दाडम्बर है, जो एक जाल बना कर उसे जीवन भर के लिये बन्दी बनाता है। वाह खूब! किन्तु याद रहे अब यह नारी को पड्यन्त्र अधिक दिनों तक तुम्हारी उद्देश्य पूर्ति में सहायक सिद्ध नहीं हो सकेगा।

बस, युवती क्रोध में भुन भुनाती हुई उठी और शीघ्र ही कपडे उठाकर बाथ रूम की तरफ चल दी जहां कपडे उतार कर वह नल के नीचे बैठ गई। लेकिन शीतल जल धारा भी उसके मन स्ताप को कम करने में किसी भी प्रकार का योग नहीं दे रही है।

युवती ने किंचित चौंक कर व्यक्त किया कि जस वह वहीं सुंदर म थी। यद्यपि वह खडी है। ड्रेसिंग टेबुल के सामने जिसके आग्रम कर आग्ने म उस की प्रतिच्छाया प्रत्यक्ष झांक रही है।

इस बीच माजी दरवाजे को ठेलकर हाथ मे भोजन की थाली लिय अदर आ गई। बड ही कोमल स्वर म बोला— बेबी ! भीतर आ जा ।

परतु बालिका द्वार की चौखट से सट कर चुपचाप खडी देखता रही। उसन वहा से हिलन का कोई सकेत तक नहा दिया।

माजी कहने लगी— बेबी को इतना कहा कि तू महमान स पूछ कर आ कि भोजन रसोई म आकर करेंगी या कमरे म भिजवा दू पर यह भी टस से मस नहीं हुई। बडी शर्मीली है ।

थाली मेज पर रखकर माजी न अब युवती की ओर दृष्टिपात किया तो जस वह स्थिर हो गई।

अरे !

विस्मय स अभिभूत आखें सिर स पर तक बार बार निरीक्षण करती रही। विचित्र भाव से मुग्ध दृष्टि सिंदूरी रग की साडी मे लिपटी इस सुन्दर नारी मूर्ति को टकटकी लगाकर निहारती रही। क्षण भर के लिए नयन मूद लिए मानो व इस प्रतिमा को हृदय की गहराइया मे छिपा लेना चाहती है।

वे आगे बढी और सौजयात्मक ढग से युवती के सिर पर हाथ फेर कर उन्होने भीगे कण्ठ स आशीर्वाद दिया।

सुखी रहो।

मन के उचटने के प्रतिफल जो भावान्तर आ गया था, वह इस स्नेह पूर्ण स्पर्श से क्रमशः दूर हो गया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस प्रकार के स्वाभाविक मातजनोचित वात्सल्य से वह सदैव वंचित रही है। पता नहीं क्या ? उसकी मां सदैव किस स्नेह विहीनता और हृदय हीनता के वशीभूत होकर थोड़ी सी चूक अथवा भूलपर आलोचना करने लगती है। हो सकता है कि अधिक सन्तान होने के कारण वे केवल एक को अपने स्नेह का वरदान देने में असमर्थ रही है। इसके अतिरिक्त निरन्तर आर्थिक संकट में ग्रसित रहने के परिणाम स्वरूप भी उनके अंतःकरण का मातृ-माद का स्रोत असमय में ही सुख कर रेगिस्तान में परिणत हो चुका है। कौन कह सकता है कि सास और जिठानियों के कटु तिरस्कार से भी उनका कोमल नारी मन तार-तार हो गया है। निश्चय ही इस विपरीत वातावरण के बीच इन प्रहारक शक्तियों ने इन्हें धीरे धीरे एक सीमा तक भावना शून्य तथा निर्मम बना दिया है। इस सम्भावना से कदापि इन्कार नहीं किया जा सकता।

वह नहीं सकने कि उसका कुहराच्छन्न मन कैसे कैसे होने लगा।

अरे!

उसका सूना ललाट देखकर माजी विगलित कण्ठ से बोल पड़ी।

वे फुर्ती से ड्रेसिंग टेबुल के पास गईं और दराज में से खोजकर सिंदूरी रंग की नेल-पालिश की शीशी निकाली। छोटी-सी कांच की ढक्कन के साथ खींच कर वे लौट आईं। उन्होंने एक बड़ी सी बिन्दी उसके ललाट के बीचो-बीच लगा दी।

अब वे भाव-मग्न होकर कहने लगीं— देखो घर की बिटिया तथा कुल-लक्ष्मियों के रीते और सूने ललाट शुभ नहीं लगते। समझी ! '

युवती के मुख मण्डल पर अरुण आभा अनायास ही फैलती चली गई।

वृद्धा ने नाक की कील को छूकर धीरे से कहा— बेटी ! शृंगार और प्रसाधन तो नारी की गरिमा को बढ़ाते हैं। इसके द्वारा अपना

नारी होना भी उसे सार्थक लगता है। कभी कभी तो स्वयं को सजी सवरी देखकर वह तन्मय हो जाती है—एक अनोखे सुख स्वप्न और आनन्द लोक म खो सी जाती है।

युवती के लजीले नेत्र नीचे झुकते चले गये।

बेटी! यदि तुम्हे किसी चीज की आवश्यकता पडे तो बिना किसी सकोच के माग लेना।

थोडी देर क बाद माजी ने पुन कहा— मैं अभी तुम्हारे लिये कपडे आलमारी म रखती हू।

इतना कहकर वे दरवाजे की राह चल दी। एक बार पलटकर उन्होने युवती को देखा फिर धीरे से पूछ लिया— बेटी! तुम्हारा क्या नाम है?

'जी रम्भा।

सकप म नितात निरुत्ताप कण्ठ ध्वनित होकर रह गया।

बहुत सुन्दर नाम है।

स्नेह-सने स्वर म वृद्धा बोली। इसके पश्चात एक लम्बी सास खीच कर साडी का आचल उन्होने आखो पर रखा और वे कमरे क बाहर निकल गई।

युवती निर्वाक और स्तम्भित।

घनी रात मे सम्भवत किसी अनात आहट को सुन कर वह हठात् जाग पडी। यद्यपि थकान ने नीद म बराबर कर दिया तो भी धीमे ह्के पावो स कोई पास सिरहाने आ खडा हुआ। उसन घबराकर उनीदी पलक खोली मगर कमरे म हरी बत्ती के अतिरिक्त कुछ भी नही है। इस पर भी रीढ की हड्डी म अचानक तनाव आ गया, मानो कोई कीडा उसे कुरद कर अन्तर्ध्यान हो गया।

अगले क्षण नाक तक रजाई लपेटे वह निस्तब्ध तथा विजडित सा पडी रही।

बाहर तेज हवा चल रही है। दूर-दूर तक फला अधकार और उस काली स्याह वीरानी म साय साय करती तीखी मन्द हवायें! घोर सुन सान स घिरा यह मकान और उसका यह नितात अकेला कमरा। इस हाहाकार करते सन्नाटे को चीरकर फुफकारता हुआ कोई अनदेखा—अनजाना निदारुण भय आ रहा है। वह खिडकियो, रोशनदानो और दरवाजे के माग से भीतर प्रवश करने के लिये विकल प्रतीत होता है।

वह कई क्षण पलग पर आखें बद किये पडी रही। तब उसके मन के अन्तरात म एक अप्रत्याशित विद्युत लहर सी दौड गई। एक विचार ने आपाद गदन सिहरन सी पदा कर दी।

प्राय उपन्यासो म रहस्य और रोमाच से भरी उसने कइ लम्बी कहानिया पढी हैं। इनमे किसी गुप्त द्वार स सहसा कोई कामातुर व्यक्ति कमरे म प्रवेश करता है। उसम एक अकेली युवती निश्चित होकर शयन कर रही हैं। इसके पश्चात्!

नारी होना भी उसे सार्थक लगता है। कभी-कभी तो स्वयं को सजी सवरी देखकर वह तन्मय हो जाती है—एक अनोखे सुख स्वप्न और आनन्द लोक म खो सी जाती है।

युवती के लजीले नेत्र नीचे झुकते चले गये।

बेटी। यदि तुम्हें किसी चीज की आवश्यकता पड़े तो बिना किसी सकोच के माग लेना।

थोडी देर के बाद माजी ने पुन कहा— मैं अभी तुम्हारे लिये कपडे आलमारी म रखती हूँ।

इतना कहकर वे दरवाजे की राह चल दी। एक बार पलटकर उन्होंने युवती को देखा फिर धीरे से पूछ लिया— बेटी। तुम्हारा क्या नाम है ?

'जी रम्भा।

सक्षेप म नितान्त निरुत्ताप कण्ठ ध्वनित होकर रह गया।

बहुत सुन्दर नाम है।

स्नेह सने स्वर म वृद्धा बोली। इसके पश्चात एक लम्बी सास खीच कर साडी का आचल उन्होने आखो पर रखा और वे कमरे के बाहर निकल गई।

युवती निर्वाक और स्तम्भित।

घनी रात मे सम्भवत किसी अनाम आहट को सुन कर वह हठात् जाग पडी। यद्यपि थकान ने नीद म बखबर कर दिया, तो भी धीमे हल्के पावो से कोई पास सिरहाने आ खडा हुआ। उसने घबराकर उनीदा पलक खोली मगर कमरे मे हरी बत्ती के अतिरिक्त कुछ भी नहा है। इस पर भी रीढ की हड्डी म अचानक तनाव आ गया, मानो कोई कीडा उसे कुरेद कर अन्तर्ध्यान हो गया।

अगले क्षण नाक तक रजाई लपेट वह निस्तब्ध तथा विजडित सी पडी रही।

बाहर तेज़ हवा चल रही है। दूर दूर तक घना अधकार और उस काली स्याह वीरानी म साय साय करती तीखी सद हवायें! घोर सुन सान से घिरा यह मकान और उसका यह नितात अकेला कमरा। इस हाहाकार करते सन्नाटे को चीरकर फुफकारता हुआ कोई अनदेखा—अनजाना निदारुण भय आ रहा है। वह खिडकिया रोशनदानो और दरवाज़े के मार्ग से भीतर प्रवेश करने के लिये विकल प्रतीत होता है।

वह कई क्षण पलग पर आस बन्द किये पडी रही। तब उसके मन के अन्तराल म एक अप्रत्याशित विद्युत लहर सी दौड गई। एक विचार ने आपाद-मस्तक सिहरन सी पैदा कर दी।

प्राय उपन्यासो म रहस्य और रोमाच से भरी उसने कई लम्बी कहानिया पढी हैं। इनम किसी गुप्त द्वार स सहसा कोई कामातुर व्यक्ति कमरे म प्रवेश करता है। उसम एक अकेली युवती निश्चित होकर शयन कर रही हैं। इसके पश्चात !

उसके सारे बदन में सहसा सरदी सिहर दौड़ गई। एक रोम सी उठी और व्यग्र भाव से टकटकी लगाकर द्वार की ओर ताकने लगी। लेकिन वह अपने ही चौखटे में जड़-सा स्थिर ! इस पर भी वह उठ कर छटपटाती रही और कसमसा कर करवटें बदलती रही।

हठात् ऐसा लगा दूसरे कमरे में कोई खांस रहा है। मांजी हैं। कदाचित् उन्हें खांसी का अचिन्तनीय दौरा पड़ गया है।

एक लम्बी सांस लेकर वह अपनी आंखें दूर तक बड़ी बढ़ना में इधर उधर टिमटिमाती रही।

ओह ! मैं यूं ही व्यर्थ में डर गई थी । रम्भा के मुंह से अकस्मात् यह अस्फुट शब्द निकल पड़े।

उसने अपने आप को एक बार धिक्कारा।

क्या इसी हिम्मत के सहारे घर से निकली है ?

उसने अपने आप से एक प्रश्न किया।

रम्भा के हृदय में अचानक अपूर्व साहस का संचार हो गया। अब की वह काली पीली छाया अब अदृश्य हो गई। एक पल में अद्भुत चमत्कार हो गया। अब तो उसकी चमकती आंखों से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि कोई अजेय शक्ति अपने कर स्पर्श के द्वारा उसे निर्भीक एवं अडिग कर गई है।

उसने करवट बदली और रजाई को बगल में दबाकर चुपचाप लेट गई।

यद्यपि वह चाहती है कि शान्ति पूर्वक फिर सो जाए ताकि उसकी नींद खराब न हो। लेकिन इधर उधर करवटें बदलने के अतिरिक्त वह आज प्रयास में असफल रही।

लो अब सांस रोककर मांजी की खांसी सुन रही है मानो यह भी कोई किसी की व्यक्तिगत गायनाथ बात है, जिसे सुनकर विशेष रस आता है—बड़ा आनन्द मिलता है।

मांजी !

इस घर की स्वामिनी !

यह नहीं कह सकती कि वे शासन प्रिय हैं अथवा नहीं। अनुशासन और नियन्त्रण के सम्बन्ध में उनके क्या विचार हैं—ज्ञात नहीं। धर्म भीरु हैं—कर्तव्य परायण हैं इन सब के बारे में भी इस अल्पावधि में जानकारी प्राप्त कर लेना प्राय सम्भव नहीं है।

परन्तु एक बात दर्पण के समान स्पष्ट है कि उनका हृदयाकाश स्वच्छ है—निर्मल है। इस कारण से उसमें मलिन परछाई अभी तक भाव भी नहीं सकी हैं।

उनका स्वभाव कोमल है—ममता पूर्ण है। निश्चय ही उन्होंने उसका स्वागत एक शुभ चिन्तक की भांति किया है। किसी प्रकार के सन्देह का पहली ही दृष्टि में उन्होंने कोई परिचय नहीं दिया। शीघ्र ही वे उसके साथ सहृदयतापूर्ण व्यवहार करने लगी। लगता है कि वे मानों एक दूसरे से परिचित हैं। उनकी वाणी में जो स्नेहपूर्ण करुणा है, उससे हृदय अभिभूत हो जाता है और अगले क्षण अनुभव होता है कि उनके संग जन्म जन्मान्तरों का आत्मिक सम्बन्ध है। उनके सजल नेत्रों से बरसने वाली सान्त्वना से तो दुःखी और उत्पीडित मन को जीवन-दान सा मिलता है। भला उनके स्वागत का किस प्रकार तिरस्कार किया जाये...।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि ववण्डर में उड़ने वाले तिनके की भांति विचार तरंगों में बहने लगी।

गृह-स्वामी अर्थात् केदार बाबू !

एक प्रकार से उनका पिछला रात से उसके साथ सम्पर्क है। पता नहीं क्या, वे उसके प्रति इतने सहृदय और कृपालु प्रतीत होते हैं। उनका यह आकस्मिक तथा अप्रत्याशित अपनत्व का भाव कुछ समझ में नहीं आया। यह सच है कि यहां लाकर तो केदार बाबू ने उस पर अकथनीय कृतज्ञता का बोझ सा लाद दिया है। अंतरिक्ष में अपने पथ से भटके हुए नक्षत्र की भांति न मालूम वह आकाश की किन गहराइयों में

डूब जाती। मध्य म किसी उत्ताल पान के तीव्र प्रहार स नष्ट भ्रष्ट हो जाती—इस सम्भावना स यद्यपि इन्कार नहीं किया जा सकता है कि वह किसी अज्ञात गर्त स टकराकर भी ध्वस्त हो जाती।

इसके अतिरिक्त जब वह जगत के वात्याचक्र म पगकर छटपटा रही थी वह आवेग म अपने भविष्य के सम्बन्ध म कुछ सोच-समझ नहीं पा रही थी विद्रोह की भावना के परिणाम स्वरूप अपने ऊपर स उसका सम्पूर्ण नियन्त्रण छूट चुका था। उस समय वह क्या करने जा रही है—इससे वह सर्वथा अनभिज्ञ थी। उसके मस्तिष्क म एक तूफान उठा आवेग का विद्रोह का विचारों का । वह वह ठोकर मारकर चल दी समाज को परिवार को घर को ।

यह स्पष्ट है कि उसकी आशा पर एक ऐसी एनक लगी थी जिसके कारण जलता हुआ लावा भी शीतल तथा स्वच्छ जल दिखाई देने लगा था और उसम अपना प्रतिबिम्ब देखकर वह हठात् आत्म विस्मृत हो उठी। उसके पथ म शान्ति एव शीतलता का अनुभव करने की बलवती लालसा को वह रोक न सकी और कूद पड़ने के लिए तत्पर हो गई। उसी समय किसी के शीतल स्पर्श ने उस चौंकाकर सचेत कर दिया। तेजी के साथ सिर घुमाकर देखा—एक भद्र पुरुष उसका हाथ पकड़ खड़े है। उनकी दृष्टि म स्नेह करुणा और उपकार के सन्निष्ट भाव भरकर रह हैं। उनकी मत्री-पूर्ण मृदुल वाणी न उसे यथार्थ जगत की धरती पर ला खड़ा कर दिया। अपने सरक्षण और आश्रम म लेकर एक बार उसे उबार लिया।

यही है व सज्जन पुरुष केदार बाबू। उनके ऋण स उऋण होना इस समय तो सम्भव नहीं लगता।

उसन दीर्घ नि श्वास लेकर करवट बदली। तभी उसकी आँखो म एक छोटी सी बालिका की लावण्यमयी प्रतिमा परिक्रमा कर गई। बेबी !

अबोध अल्हड़ और भोला।

एक ऐसी नन्ही सी प्यारी गुड़िया जिसे देखकर अनायास ही दुलार उमड आता है। यद्यपि रग गोरा और साफ है—नाक नक्श तीखे एव आकर्षक है तथापि वह केदार बाबू पर नही लगती। हो सकता है कि इस हृदय ग्राही रूप का वरदान इसने अपनी मा से प्राप्त किया है

कल्पना ही कल्पना मे उसने एक सुदर नारी की चित्ताकर्षक मूर्ति गढ ली। अभी तक विभ्रान्ति पुष्प की भाति सुरभित है। मादक सौदर्य से लदी हुई वह वल्लरी अपने रूप का बोझ सम्हालने म असमर्थ है। इस सौभाग्य पर वह प्रत्यक के लिय ईर्ष्या का शूल बन गई है जो हृदय म चुभता है—मन म कसकता है। देखने म विशेष बौद्धिक, बडी सजीव और विशिष्ट व्यक्तित्व से सम्पन्न महिला! भरा हुआ चेहरा, मोटी मोटी चमकती आखें और बातचीत मे सहज मुस्कराने वाले पतले पतले अधर! उनकी सुगठित देह-यष्टि म विशेष गति है—स्फूर्ति है।

अचानक रम्भा को लगा कि एक विचित्र से विचार का प्रभाव उसकी रूप सम्पूर्ण कल्पना को छिन्न भिन्न कर गया जसे सरिता की बहती धारा के आगे अकस्मात् कठोर चट्टान आ गई। हृदय की गहनतम गहराई स निकल कर वह विचार आषाढ के मघ की भाति मस्तिष्क म छा गया।

सम्भवत यह कमरा यह पलग यह बिस्तर और ये पहनने वाले कपडे सभी उस अज्ञात सुदरी के लगते हैं जिन पर सयोग से आज की रात उसका अवाच्छित और अवधानिक अधिकार हो गया है। वे कार्य वश अभी कही अयत्र चली गई हैं। उनकी अनुपस्थिति म उनकी वस्तुओ का वह साधिकार उपयोग कर रही है।

निश्चित रूप स यह विधि की एक विचित्र विडम्बना है कि यहा वह नदी म बहते हुए काठ के टुकडे के समान किनारे पर चुपचाप आ लगी। अचम्भा तो इस बात का है कि उसने स्वप्न म भी ऐसी आशा नही की थी। बार-बार उस एक लोकोक्ति स्मरण हो आती है—जान न प चान और मैं तेरा मेहमान!

यदि यह कमरा, यह पलग और यह बिस्तर उस सुन्दरी के है जो

इस गृह के स्वामी या पत्नी भी है तो उनका प्रसन्गिय रूप से उनके पति के साथ विशेष सम्बन्ध है। सम्बन्ध शारीरिक भौतिक और रागात्मक।

हो सकता है कि नवीन म इस कमरे म किसी की मानमा की मनोहर चान्दनी खिली थी। इस पलंग पर किसी के सुख-सपना का सज बिछी थी। इस बिस्तर पर किसी के मादक प्रेम के सुमन मुस्कराये थ। ओह! किसा के सुकुमार हृदय की कली उस यौवनपूर्ण रात्रि म प्रथम प्रेम का प्रथम नशीला चुम्बन पाकर आत्म विभोर हो गई थी। उसकी उन्माद पूर्ण सुगन्ध इस कमरे के वातावरण म आज भी रची बसी है।

अगले ही क्षण एक विचित्र सी अनुभूति सहसा उसे रोमांचित कर गई। सचमुच उसे लगा कि इस बिस्तर म वह एक अकेली नहीं सो रही है बल्कि उसकी बगल म किसी का गर्म गर्म सांसों का स्पर्श उसके चेहरा महसूस कर रहा है और वह धीरे धीरे सलज्ज लाली के प्रभाव से कमनीय हो रहा है। किसी के शरीर की उष्णता उसके समस्त बदन म कपकपी सी उत्पन्न कर रहा है। किसी के किंचित् कठोर हाथ उसकी नम एवं नाजुक देह को सहला कर व्याकुल कर रहे हैं। प्रेम से थर थराते अधर आगे बढ रहे है और उसके होठों का स्पर्श कर लेना चाहते है। बस यह काल्पनिक स्पर्श रोमांच की एक लहर बनकर उसकी नस नस म तरता चला गया।

और ये कपडे

कह नही सकते कि यह लहराती हुई साडी पता नहीं कितनी बार भाव मग्न कमीज के साथ आलिंगन बद्ध हुई है। मांसल एवं यौवन पूर्ण जिस्म म जाने कभी जादू भरी गुदगुदी उत्पन्न की है। इसने अभ्यन्तर म जस अनबूझ पिपासा तथा अशान्त अतृप्ति जाग्रत की है। अब ता वह अधिक चंचल संवेगशील और अस्थिर हा गई है जिसे किसा भी अवस्था म दबा सकना प्राय कठिन है।

इस कल्पना प्रसूत दृश्य को देखते देखते जाने कब रम्भा की आंखें लग गई है।

आज हल्के हल्के सिर दद के साथ रम्भा ने सूर्योदय की प्रतीक्षा घुनती रात के पुन दशन किय। शिथिल प्रभात समीर बह रहा है। चन्द्रमा डूबने पर है। भोर की धुन्ध समाइ हुई है चारों तरफ। अरुण आभाओं से मण्डित उषा की निद्रा भग हो चुकी है।

इस हर्षोत्फुल्ल वातावरण म भी सचमुच ऐसा ज्ञात हो रहा है जैसे किसी निष्ठुर ने धक्का देकर उसे जगा दिया है। निश्चल निस्सीम हृदय में एक कम्पन है। हा, कम्पन ही तो है। अपने हृदय की धडकनों को वह चुपचाप सुन रही है। इस तनहाई म बार-बार किसी अज्ञात की पग ध्वनि उसका ध्यान आकृष्ट कर जाती है। बोझिल पलकों की छाया में रात के सपनों की परछाइयां अनायास ही झांक जाती है और उसके मन प्राण अस्थिर हो उठते हैं। वह रजाई लपटे सास रोक कर उस कमरे मे व्याप्त विचित्र प्रकार की प्रतिध्वनिया सुनती रही, जो किसी की भटकने वाली पीडा की आकुल अनुगूंज है। देर तक उसकी दृष्टि कमरे की वस्तुओं पर अटकी रही। पहली बार तो समझ मे भी नहीं आया कि इतनी शीघ्र आखें खुलने पर वह क्या करें? लेकिन इस सिर दद को लेकर आख मूद कर पडे रहना भी मुश्किल है फिर

'हरे राम हरे राम हरे कृष्ण हरे कृष्ण ।

कदाचित यह माली का स्वर है। कुहनियां के बल जरा सा उठ कर उसने बाहर देखना चाहा मगर दरवाजा भीतर से बन्द है। अचानक उसे ख्याल आया कि वह स्नान क्यों नहीं कर ले। शौचादि से निवृत होने के कारण निश्चय ही उसकी भारी तबियत तनिक सम्हल

जाएगी।

बस इस विचार ने उसे उचित प्रोत्साहन भी दिया।

रम्भा नहा धोकर निकली तो भान हुआ कि बाल रवि उदित हो चुके हैं। उनकी अरुण रश्मियों में सम्पूर्ण मकान नहा सा रहा है।

उसने फुर्ती से गीले कपड़े फैलाये। अपने बिस्तर वाला को हाथ से समेट कर उसने जूड़ा बांधा। इस शीघ्रता का एक मात्र कारण यह है कि वह सुबह सुबह किसी के सामने आना नहीं चाहती। पता नहीं कैसा प्रभाव पड़े। भला या बुरा ! बुरा प्रतिक्रिया स्वरूप उसका हृदय असीम ग्लानि से भर जाएगा और फिर दिन भर ।

रम्भा ने अपने कमरे की दिशा में नंगे पांव बढ़ाये। इसी समय रसोई घर से दूध के लगने की गंध उड़ती हुई आकर उसकी नाक को छू गई।

'दादी मां ! चाय दो ।

यह बेबी का कर्कश स्वर है जो खीझ भरा सुनाई पड़ रहा है।

इसके उत्तर में माजी का व्यस्त कण्ठ बोला—"बेबी ! मैं अभी पूजा करके आती हूं। मेरी अच्छी बेटी शोर नहीं करते ।'

नहीं नहीं । मुझे चाय चाहिए।'

बेबी निहायत ही अस्वाभाविक ढंग से चिल्लाई इसके अनन्तर अत्यन्त कुपित होकर वह लकड़ी के टुकड़े से किसी बर्तन को पीटने लगी ।

"अरे मान भी जा। मैं अभी आती हूं।'—माजी का कोमल स्वर पुनः ध्वनित हुआ— आज कैसे देर में नींद खुली नहीं मालूम ।

माजी छोटी सी घंटी टुनटुनाने लगी।

'नहीं—नहीं। मुझे अभी चाहिये।

इसके साथ बेबी अधिक अधीर हो गई।

रम्भा ठिठक गई। अगले ही क्षण वह रसोईघर में प्रवेश कर गई।

'क्या बात है बेबी ?'

बेबी एकदम अचकचा गई। सकोच से नीची निगाह कर ली। उसने रुक रुक कर कहा— जा, मुझे भूख लगी है। चाय चाहिए।'

''भूख और चाय।'

इस पर रम्भा धीरे से हस पडी। पास आकर अगीठी पर झुक गई और दूध की पतीली को नीचे उतार दिया।

'लो, अभी दूध पीलो।'

''जी नही। मुझे दूध नही भाता। —सहमी सी आवाज म बालिका ने कहा।

अरे वाह, कमाल है। तुम्हे दूध नही भाता। —विस्मय से रम्भा बोली— अच्छी लडकिया सदव दूध ही पीती ह।

बेटी ने बडी विचित्र भगिमा स उसे देखा। यद्यपि बोली कुछ नही।

रम्भा ने समझाया—'हा सच। दूध पीने से तदुरस्ती अच्छी रहती है। आखो की रोशनी बढती है। पढने मे खूब मन लगता है। इसके अतिरिक्त चोटी भी बडी हो जाती है।''

'अरे वाह!'—बालिका अचरज स चहकी—'दूध पीने स चोटी बडी हो जाती है एसा तो कभी दादी मा ने नही कहा।

उन्हे याद नही आया होगा।'

हा। यह ठीक है। अक्सर वे चीजें रखकर भी भूल जाती हैं।

बेबी न सहमति म गदन हिलाई।

रम्भा ने एक गिलास म दूध उडेला और उसम चीनी मिलाकर चम्मच से हिलाने लगी।

''लो तुम गम गम दूध पीलो तब तक मैं नाश्त म तुम्हारे लिए कुछ आलू के कापन बनाती हू।

आलू के कोफ्ते'—बालिका के नेत्र प्रसन्नता से खिल उठे। लगा

उन्होंने रम्भा की ओर दृष्टिपात किया। कदाचित वह उनकी हँसती आखों का अर्थ समझने का प्रयत्न कर रही है।

'आज चाय के साथ कोफ्ते पाकर केदार बडा खुश हुआ।'

माजी के स्वर में माधुर्य है उसमें ममता का भाव है।

उन्होंने चाय की प्याली बेबी की तरफ बढाई, जिसके मुंह में अभी तक आधा कोफ्ता है।

'दादी मा! मैंने अभी दूध पिया है। चाय नहीं लूंगी।'

'क्या—दूध ?'

माजी के नेत्र ललाट तक खिंच गये।

'तू तो सुबह कभी दूध पीती ही नहीं।'

बेबी लजा गई।

'इन्होंने कहा कि दूध पीने से चोटी बडी हो जाती है और ।'

'अरे'

अचानक माजी फिक से हँस पडीं।

'सचमुच तुमने कमाल कर दिया।' वह हँसती आंखों की दृष्टि रम्भा के ऊपर मंडराने लगी—'मैं तो समझाती समझाती एक तरह से हार गई।'

ऐसे प्रमुदित वातावरण में केदार भी आ गया। उसके हाथ में प्लेट है। उसने गहरी दृष्टि रम्भा पर डाली, जो उसके अकस्मात आगमन पर किंचित अस्त व्यस्त हो गई।

उसने सराहना करते हुए कहा— 'कोफ्ते बहुत अच्छे बने हैं स्वादिष्ट।'

तनिक झिझकते हुए वह पुनः बोला— 'कुछ और चाहिये।'

इस पर माजी हंस पडीं। हंसी के बीच बोलीं—'अगर मुझे आवाज देता तो मैं और दे जाती।'

'इसकी जरूरत नहीं समझी।' केदार ने आहिस्ता से कहा— 'अकेला ड्राइंगरूम ऊब गया था इसलिये उसने सोचा कि मैं ही चला जाऊं।'

कुछ पल ठहर कर रम्भा की ओर निगाहें फेरते हुए उसने फिर कहा— 'अकेले खाने म वह आनन्द नहीं आता।"

'कैसा आनन्द ?'

हठात माजी ने पूछ लिया।

आ आ आनन्द ! बस, आनन्द !'

केदार वगले झाकने लगा।

माजी पुन हस पड़ी।

पगला कहीं का ।'

अब व रम्भा स बोली— रम्भा बेटी ! जरा गरम गरम कोफ्ते और देना ।

जी ! अभी लो ।

रम्भा ।'

सहसा केदार मन ही मन म बोला और नाटकीय अन्दाज म आखें घुमाकर होठो पर जीभ फेरने लगा।

'रम्भा ।

"नही जाऊगी   नहा जाऊगी   नहा जाऊगी   ।

'बबी ! हठ नही करते ।

'हा । नहा जाऊगी   ।

'देखो मान भी जाम्रो   ।'

नही तो क्या करोगी   ।

भोजनोपरान्त रम्भा अपने कमरे म चुपचाप बठी है । तभी उसे पर पीटने और पुस्तकें फेंकने का अप्रिय स्वर सुनाई पडा । इसके साथ ककश कण्ठ का चिल्लाना तो उद्दण्ड स्वभाव तथा दुर्विनीति प्रकृति का पूण परिचय दे रहा है ।

वह अपनी जिज्ञासा रोक न सकी । उत्सुकतावश वह कमरे म बाहर निकली तो वहा का दृश्य देखकर हठात् उसके होठो पर स्वर हीन हसी तर गई । आठ वर्षीय बालिका बेबी कुपित नेत्रो से माजी को घूर रही है । व हाथ म किताबें लिय बडी व्यग्र नात हो रही हैं और साथ ही अनुनय की मुद्रा मे अनुरोध भी करती जा रही हैं ।

'बेबी ! तुम दो रोज से स्कूल नही गई । यह ठीक नही ।'

'क्या ठीक नही । बालिका तडाक से बोली— लो मैं नही जाती ।'

माजी इस नकारात्मक उत्तर को सुनकर निराश हो गई । स्पष्ट है कि बेबी की उद्दण्डता सामा का अतिक्रमण कर रही हैं । रम्भा ने उनकी मुख मुद्रा को भली प्रकार भाप लिया कि वे अशान्त हैं—विवश हैं ।

क्या बात है माजी ? रम्भा न सहज स्वभाविक स्वर म पूछ लिया ।

यह बेबी स्कूल न जाने का हट कर रही है ।

'क्यो ?'

रम्भा ने दृष्टिपात किया तो वालिका अचानक सहम गई। उसकी रोप पूर्ण भगिमा तनिक शिथिल हो गई। चेहरे का वह तनाव पूर्ण भाव क्रमश कम होने लगा। स्पष्ट है कि इस अनजान स्त्री के आकस्मिक आगमन ने उसकी दप्ट मनोवृति एव उच्छह्वल स्वभाव को एक प्रकार से नियत्रित सा कर दिया—उस पर अकुश सा लगा दिया। आश्चय !

'देखिये, दादी मा को न ता ठीक स चाटी ही करनी आती है और न हा ये अच्छी तरह से रिबन ही वाध सकती हैं।" वालिका न मुह फुलाकर कहा।

अच्छा !"

इस पर रम्भा मुस्करा दी।

अब बेबी किंचित् झिझकते हुए कहने लगी—'लो दादी मा ने कभी भद्दी चाटी की है। इस दक्कर मेरी सारी सहलिया एक दम हस पडेंगी।

क्षण भर ठहर कर वह धीमे से कहने लगी—"मुझे स्कूल जान म शम लगती है ।'

"ओह ! यह बात है ।

हसती आखो स अ यमनस्क अवस्था मे खडी माजी की तरफ रम्भा न एक बार देखा और दृष्टि लौटा ली। इसके पश्चात बेबी को सम्बोधित करके उसने कहा—'इधर आओ। मैं तुम्हारी चोटी अभी ठीक कर दती हू ।'

'आप करेंगी मेरी चोटी।

वालिका के अविश्वसनीय नत्र भाल तक खिच गय।

'क्यो नहीं।' रम्भा ने उसे आश्वस्त करना चाहा— मैं अभी चोटी करके रिवन से सुदर फूल बना देती हू।'

'सच।'

बबी का मुख सरोज हर्पातिरेक से खिल उठा।

इधर आओ।'

रम्भा बालिका को गोदी म लेकर नीचे फर्श पर बैठ गई और उसके बालो म बंधे रिबन खोलने लगी।

पता नहीं क्यो पास खडी माजी की आंखें हठात छलछला आइ। व आर्द्र कण्ठ स बोली— मैं अभी तल काच कंघी लेकर आती हू ।'

जाते समय माजी ने अपनी साडी के आचल से आंसुओ की कोरें पोछ ली। रम्भा बेबी क बालो म अभी तक उलझी हुई है अत वह उनके इस द्रवित भाव को लक्ष्य न कर सकी।

'पा पा पा !

द्वार पर स्कूल की मोटर का हार्न सुनाई पडा। इसी समय बेबी सज-संवर कर रम्भा की उगली पकड मकान के बाहर निकली। अपूर्व पुलक स उसका समस्त मुख मण्डल उदभासित हो रहा है। पुस्तको का थैला कन्धे पर लटका हुआ हैं। नई फ्राक मे वह एक नन्ही गुडिया के सदृश्य प्रतीत हो रही है।

मोटर चली गई।

कुछ देर के लिये रम्भा गली म अकेली खडी रही। गली का न्यस्त जीवन अपनी सामान्य गति पर है। उसम कोई असाधारणता नहीं। खिडकियो और दरवाजो म से कुछ जोडी आख उस कुतूहल वश देख रही हैं। सहसा उसे रोमाच सा हो गया। उसकी गर्दन नीचे झुकती चली गई।

इसके विपरीत वह अज्ञात भय का कीडा उसके अतस म सहसा उछला और कलजे के पास कचोट उत्पन्न करके कही अन्तर्ध्यान हो गया। बस वह आपाद मस्तक सिहर उठी। अब वहा एक पल के लिये ठहर सकना प्राय कठिन हो गया।

कमरे म लौटकर वापिस आई तो वह भय जनित अशान्ति एव अव साद की अवस्था म कुछ देर तक कापती रही यद्यपि पुन सन्तुलन एक प्रकार से कायम नहीं हो सका। उस लगा कि अंधेरे की पर्तों म कुछ

चित्र उभर रहे हैं ।

गुम शुदा की तलाश । आयु तेईस वष । मगर देखने मे बाईस और पच्चीस के बीच लगती है। मझोला कद। स्वस्थ शरीर। गौर वण। सौम्य चेहरा। मोटी आखें। हल्के बादामी रग की साडी। इसके साथ मेल खाता हुआ ब्लाउज। सुरुचि पूण वेष भूषा ।

समाचार पत्र म इस विज्ञापन के ऊपर एक तस्वीर छपी है और नीचे करुण शब्दो म एक निवेदन भी है

बेटी ! तुम जहा कही भी हो, अविलम्ब ही लौट आओ। तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारी मा सदमे से बीमार हो चुकी है। वह एक प्रकार से अन्न जल त्याग कर पडी है। परिवार के अन्य लोग भी दु खी हैं। तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नही होगा। मैं तुम्ह विश्वास दिलाती हू। बस लौट आओ। सबकी आखें तुम्ह देखने के लिए तरस रही हैं

तुम्हारा दु खी पिता '

इसके पश्चात एक मार्मिक अपील है कि जो महानुभाव इस लडकी को खोजकर लायेंगे या उसकी विश्वस्त सूचना देंगे उन्हे एक हजार रुपये का नकद पुरस्कार मय राह-खच के दिया जायगा।

यदि पिताजी ने इस प्रकार का विज्ञापन किसी दैनिक समाचार-पत्र म दिया है और उसे कुछ लोगो ने पढा है तो मकान से बाहर निकलने पर पकडी जाने का पूरा डर है। निश्चय भी इस सम्भावना से इन्कार नही किया जा सकता। बस भय का यही कारण है जो रह रह कर उसके मन के भीतर विचित्र प्रकार की बेचैनी और कचोट पैदा कर रही है ।

ऐसी स्थिति मे वह इस कमरे म प्राय बन्द सी हो गई तो इसमे आश्चय कैसा !

रात्रि की प्रतीक्षा में घुलती हुई साँझ !

कदाचित् सुबह के अध्याय की पुनरावृत्ति हो रही है।

रम्भा ने जाकर देखा तो ज्ञात हुआ कि बच्ची पलंग पर कभी करवट फेंक रही है और कभी पैरों से पटर। उसकी हठ है कि कहानी सुनाओ। माजी के लिये आज यह सम्भव नहीं है। यह भी हो सकता है कि वे बच्ची के साथ इस समय कोई बक-बक करना पसन्द नहीं करतीं। दिन भर गृहस्थी का काम-काज करते-करते उनका मन तो पूरी तरह थक जाता है और ऐसी स्थिति में उस बिछावन का आश्रय पाने की चाह रहती है। इसके अतिरिक्त जिस रोचक ढंग से कहानी सुनाकर रस माधुर्य की वर्षा की जाती है सम्भवत माजी इस कला में भी निपुण नहीं हैं। तभी वे निरुपाय और लाचार अवस्था में उसे मनाने का निष्फल प्रयास कर रही हैं।

बच्ची ! मेरे सिर में बड़ा दर्द है। कातर स्वर में माजी ने कहा—मैं तुम्हें कहानी कल सुनाऊँगी !

भृकुटियों में वक्रता लेकर बालिका सहसा चीखी—दादी माँ ! तुम रोज रोज यही बहाने बनाती हो पर आज मैं नहीं मानूँगी।

'मान जा बेटी !'

'नहीं बिल्कुल नहीं।

ऊँह इस मुसीबत से छुटकारा मिलना मुश्किल है मन में हास करते हुए रम्भा समीप आ गई।

अच्छा ! मैं सुनाती हूँ तुम्हें कहानी।

"आप ?"

बालिका के अविश्वसनीय नेत्र उस पर स्थिर हो गये।

"हां, मैं।"

समर्थन में रम्भा ने गर्दन हिलादी।

माजी के चेहरे पर अवाक सीप सी जडी आंख हठात कृतज्ञता के बोझ से अब झुकी तब झुकी।

रम्भा ने माजी को बड़े सहज भाव से कहा—'आप आराम करें। मैं बेबी को अपने कमरे में सुला देती हूं।'

"अरे नहीं।' माजी असमंजस में पड़कर बोली—'तुम्हें व्यर्थ में परेशानी होगी।"

इस पर रम्भा धीमे से हंस पड़ी।

'जी नहीं। मुझे कोई परेशानी नहीं होगी। आप विश्वास रखें।"

उसने गोदी में लेने के लिये बालिका की तरफ अपनी बांहें फैला दी।'

'आओ, बेबी! हम चलें। यहां माजी को शांति से सोने दो।'

बालिका चकित दृष्टि से कभी अपनी दादी मां और कभी इस अनजान स्त्री को अपलक देख रही है जो धीरे धीरे अब उसके साथ मेल जोल बढ़ाकर जानी पहचानी हो रही है।

बेबी को अपने पलंग पर लिटाकर रम्भा ने रजाई खींची। इसके पश्चात वह भी उसकी बगल में कुहनी के बल लेट गई। अधरों पर मधुर मुस्कान लेकर वह कहने लगी—'एक थी राजकुमारी सुंदर सलोनी और चंचल।'

बस, थोड़ी ही देर में रम्भा स्वयं उस कहानी में भाव मग्न हो गई। उद्दाम भावनाओं से परिपूर्ण यह रोचक कथा श्रोता को शीघ्र ही रस दशा में ले आई। उसमें वर्णित प्रेम की गहन अनुभूति के कारण वक्ता एक प्रकार से आत्म विभोर हो गई। उसे पता ही नहीं लगा कि यह मार्मिक कहानी कब खत्म हुई। सचमुच, कुछ देर तक उस पर भी अनूठे

कहराते हुए माजी ने हाथ का सकेत किया ।

रम्भा ने शीतल लेप कर दिया ।

इस बीच माजी सास रोककर लेटी रही। असल म अब तक वृद्ध की आखो की निचली कोरें पानी से बहुत बोभिल हो चुकी है । उनके लिए बार बार पलक भपक कर भी उन्हे रोके रखना कठिन हो गया । भीतर कहा अकाल्पित धुधली भावना भाक कर अकस्मात अगोचर म अदृश्य हो गई ।

'साडी के पल्ले म आसू पोछकर माजी भरयि गले स कहने लगी— "बस रहने दो, बटी ! अब मुझे पर्याप्त आराम है ।

इसके बाद तनिक ठहर कर वे पुन बोला—' देखो केदार आ गया है शायद ! उस एक थाली म भोजन दे आओ ।

' हूँ ।

सम्भवत यह सताप जनक उत्तर नही है, अत माजी आशका ग्रस्त हो गई ।

' हो सकगा तुम स ?

' हा क्या नही—। रम्भा अपनी अस्थिरता छिपाकर बोली— आप निश्चित रह । मैं सब ठीक कर लूगी ।

' अच्छा ।

' दीर्घ नि श्वास लेकर माजी न रजाई से अपना मुह ढक लिया । बस, आप शातिपूर्वक लेटी रह । इस ओर चिता न करें ।

जाते आते रम्भा उन्हे पूरी तरह आश्वस्त कर गई ।

केदार के लिए रम्भा भोजन परस रहा है । वह बडे चाव से खा रहा है । उसने एक बात की ओर विशेष ध्यान दिया कि खाते समय केदार बडे मनोयोग स खा रहा है । साधारणत विशेष कोई बातचीत नही करता । लगा, उसे बातचीत करने की कोई खास आदत भी नही है । अपना अपना स्वभाव !

यद्यपि रम्भा न कभी किसी पुरुष की देख भाल नही की । उसे ऐसा

जादू का सा प्रभाव रहा।

पुन सामान्य होकर उसने देखा कि बालिका कभी की सो चुकी है। अनजाने ही बबी की ही मणाल सी कोमल और लचकीली बाहें उसके गले से लिपटी है। उसने धीरे से उन्हे हटाई। पल भर ठिठक कर वह माजी के कमर की राह चल दी।

"हरे राम हरे कृष्ण हरे राम हरे कृष्ण !

माजी रजाई ओढ कर पडी है और व्याकुल कण्ठ से अपने इष्ट देव को स्मरण भी करता जा रही हैं। रम्भा सहानुभूति की करुण दृष्टि से उन्हें कुछ क्षण ताकती रही। मन ही मन सोचा—इस वद्ध को सचमुच इस समय एक सवेदनशील सहायक की नितान्त आवश्यकता है।

माजी!'

'कौन ?'

'जी मैं रम्भा!'

बाल बटी—! रजाई म से थोडा सा मह निकाल कर माजी न पूछ लिया— क्या बात है ?

कोमल स्वर म उत्तर दिया रम्भा न— लो मैं तुम्हारा सिर दबा दू !'

तुम ?

गम्भीर विस्मय से माजी निवाक रह गई।

हा मैं !

तनिक मुस्करा कर रम्भा उनके पलग पर बठ गई।

रहन दो, बेटी! तुम्हे बकार म कष्ट होगा !

विगलित कण्ठ स माजी ने कहा।

'कष्ट मुझे क्या होगा—! स्वाभाविक ढग से रम्भा न कह दिया और साथ ही अपन कर-स्पर्श स उनके सिर को सहलाने लगी।

सिर दर्द की दवा कहा रखी है ?

वो सामने अलमारी म !

कहराते हुए माजी ने हाथ का सकेत किया ।

रम्भा ने शीतल लेप कर दिया ।

इस बीच माजी सास रोककर लटी रही। असल म अब तक वद्ध की आखो की निचली कोरें पानी स बहुत बोभिल हो चुकी हैं। उनके लिए बार बार पलक भपक कर भी उह रोके रखना कठिन हो गया। भीतर कहा अकाल्पित धुधली भावना भाक कर अकस्मात अगोचर म अदश्य हा गइ।

साडी के पल्ले से आसू पाछकर माजी भराये गले से कहने लगी—'बस, रहने दो बटी ! अब मुझे पर्याप्त आराम है ।

इसके बाद तनिक ठहर कर वे पुन बोली—'देखो, केदार आ गया है शायद ! उस एक थाली म भोजन दे आओ ।'

हूँ ।

सम्भवत यह सताप जनक उत्तर नही है, अत माजी आशका ग्रस्त हो गई।

'हा सकगा तुम स ?

'हा क्यो नही—। रम्भा अपनी अस्थिरता छिपाकर बाली—आप निश्चित रह। मैं सब ठीक कर लूगी ।

अच्छा।'

दीघ नि श्वास लेकर माजी न रजाई से अपना मुह ढक लिया।

'बस, आप शान्तिपूवक लटी रह। इस ओर चिन्ता न करें।

जान आत रम्भा उन्ह पूरी तरह आश्वस्त कर गई।

केदार क लिए रम्भा भाजन परस रही है। वह बडे चाव से खा रहा है। उसन एक बात की ओर विशेष ध्यान दिया कि खाते समय केदार बडे मनायोग स खा रहा है। साधारणत विशेष काइ बातचीत नही करता। लगा उस बातचीत करने का काई खास आदत भी नही है। अपना अपना स्वभाव !

यद्यपि रम्भा न कभी किसी पुरुष की देख भाल नही की। उस एसा

कोई अनुभव भी नहीं। सर्व प्रथम जब वह अकेली केदार के कमरे में भोजन की थाली लेकर आई तो उसका आंतरिक मन किसी अज्ञात भय से अधीर हो रहा था। पांव डगमगा रहे थे और हाथ कांप रहे थे।

इसे स्त्री सुलभ दुर्बलता कहें अथवा और कुछ वह एकाएक सोच न सकी। इतनी रात में किसी पराये पुरुष के कमरे में जाने के कारण इस प्रकार का त्रास पूर्ण भाव स्वाभाविक है।

उसकी विशाल आंखों में झांकते हुए केदार ने सहसा आश्चर्य व्यक्त किया—अरे आप थाली लेकर आई हैं?

उसने अपने आपको संयत करने के प्रयास में उत्तर दिया धीरे से—जी माजी की तबीयत कुछ ठीक नहीं। ऐसी स्थिति में मैं ही लेकर चली आई।

क्या हुआ है मां को—? केदार ने चिंतित स्वर में पूछा।

जी सिर दर्द है।

मैं अभी देखकर आता हूं।

कोई आवश्यकता नहीं—। रम्भा ने कहा—वे अब आराम से सो रही हैं।

'अच्छा।

केदार भोजन की मेज के पास कुर्सी लगाकर बैठ गया। इस बीच रम्भा दूसरी थाली में कुछ और खाने का सामान ले आई।

लो तरकारी कम है और लो।

केदार मुस्कराकर बोला—अरे रहने दीजिए न। मैंने तो आज इतना खाया है कि अब पेट में कोई रिक्त स्थान है ही नहीं।

नहीं—रम्भा ने प्रतिवाद किया—आपने इतना अधिक तो नहीं खाया।

अनजाने में केदार की बिहंसती हुई दृष्टि रम्भा की आंखों से टकरा गई। उसने कहा—'हां। आज कई दिनों के बाद ऐसा अवसर आया है कि कोई सामने बैठकर स्नेह से खिलाता चला गया। निश्चय ही लाभ

म बहुत खा गया हू ।'

रम्भा ने ग्राखें नीचे झुका ली। हठात उसने एक स्नेह सिक्त दृष्टि का कोमल स्पश भी अनुभव किया। इस अनुभूति का प्रभाव सीमित न रह सका और शीघ्र ही समस्त अत करण म फल गया। उस एक प्रकार का रोमाच सा हो गया। हृदय इस बुरी तरह धडक्न लगा कि मानो अभी ब्लाऊज के बटन ही खुल जायेंगे।

यद्यपि 'स्नेह शब्द का उच्चारण केदार ने कुछ दब स्वर म किया था। इसके विपरीत उसकी यह इच्छा भी नही थी कि एसा कुछ कहा जाए। परन्तु जाने कसे यह शब्द उसके मुह से अचानक ही निकल पडा। उसे अपनी यह अनधिकार पूण चेष्टा बडी नाटकीय लगी। अब तो वह नीची नजर किये रम्भा की बदलती हुई भाव भगी और मुख चेष्टा को निनिमेष देख र ा है।

कुछ देर तक वह चप चुप सा भोजन करता रहा। एक अप्रिय मौन का लघु अन्तराल। बस, केदार का मन उचट गया। शीघ्र ही वह उठ गया।

'अरे आप तो एकदम उठ गये—' जसे रम्भा चौंक कर बोली—और कुछ लेते।'

जी नहीं—।' मुस्कराने के प्रयत्न मे केदार न केवल इतना कहा—'बहुत हो गया।'

'अच्छा।

अविलम्ब ही रम्भा ने सारे बतन समेट लिए और फुरती से कमरे के बाहर जाने लगी।

केदार टकटकी लगाकर उसकी पीठ को देखता रहा।

और दूसरा से बेबी को देखकर वह बोला—'देखो बेटे! अगर हम दोनो ही अकेले सकस देखने चलेंगे ता बुरा लगेगा।'

बुरा!

बेबी साच म पड गइ।

तो हम किसको साथ म ल चल? बालिका ने सरलता स पूछ लिया।

कुछ क्षण पश्चात वह ताली बजाकर चिहुक उठी।

ता हम दादी मा का साथ म ले चलें।

'दादी मा! ऊ हू!'

अस्वीकृति म गदन हिला दी कमार न। अब ता उसके मुख का भाव अकस्मात बदल गया। वह विनाद का मुद्रा बनाकर कहने लगा—तुम भी एक ही बबी! भला अब दादी मा क सकस देखन की उम्र है! देखो मैं बताऊ। अपनी मौसा से कहा कि।

जा मैं नही चल सकती।

हठात रम्भा आवेग म बोल पडी। स्वर का कठारता और रुक्षता स्वय उसे ही चकित कर गई। पता नही कस वह सब कुछ इतनी उतावला म कह गई।

कमार एकदम सकपका गया। उसके चेहरे का रग उड गया। लगा जस उच्छवसित आनन्द म बजत हुए सितार का तार किसी आकस्मिक आघात स टूट गया। यह सवथा अकल्पित है—अप्रत्याशित है।

बबा सहम कर चुप हा गई।

अब रम्भा का परिस्थिति की गम्भीरता का भान हुआ। निश्चय ही उसका यह व्यवहार सामान्य शिष्टाचार के विरुद्ध है। अनावश्यक रूप स कमार है—अकारण ही कटुता लिय हुए है। इस सहज हा म सहन करना कठिन है। अब ता उस पश्चाताप-सा हाने लगा।

मैं अपन असुन्दर व्यवहार क प्रति प्रति।'

यहा तक रम्भा का कण्ठ रुद्ध हा गया। पलका पर अनायास हा

अश्रुकण छलक आये।

एकपल मे वज्र सी कठोर और दूसरे पल म कुसुम सी कोमल! आश्चय!

केदार तो उसी तरह निर्वाक विस्मित एक खम्भे के समान निश्चल खडा रहा। यह एक प्रकार का अतर्दाह है अथवा नारी मन की अनबूझ ग्रथि—वह एकाएक समझ न सका।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज दिन भर उसका टूटे हुए पत्ते सा मन उड़ता रहा। बस, केवल एक ही बात रह रह कर हृदय को कचोटती है कि वह उस समय इतनी निमम इतनी अकुशल इतनी अव्यवहारिक कैसे बन गई थी? सोचते सोचते रम्भा का चित्त विकल हो उठता है। कितना अपनापन था उस निमंत्रण में! सहृदयता से परिपूर्ण अनुराग! परन्तु उसने निष्ठुर बनकर ठुकरा दिया। छि!

सहसा रम्भा आत्म प्रताड़ना की भावना से भर उठती है।

कैसी हो गई है आजकल? बाहर भीतर से विच्छिन्न! हृदय पक्ष में निःसंग! इस प्रकार की स्नेह विहीनता और हृदय हीनता को लेकर वह कैसे जीवित रहेगा? आशा हीन गति रहित और आनन्द शून्य! जलती धू धू करती हुई मरु भूमि! यह शून्यता कैसे पूरी होगी? यह असामयिक निष्करुणता कैसे मिटेगा?

आश्चर्य तो इस बात का है कि एक ही मकान में एक ही छत के नीचे और एक ही दीवारों की परिधि में घिर रह कर भी वे परस्पर कितने अलग अलग हैं! मानो एक दूसरे से अनजान हैं—अपरिचित हैं। जब भीतर घर में आता है तो वह पास से कतरा कर निकल जाता है। उस रात वह भोजन का साथी भी लेकर गई थी। उसने पहले गुरुदेव का नाश्ता तैयार करके बड़े पूरे परिवार के स्नेह भाजन भी बन गई थी। मगर इसके बाद? पड़ी में रहता घर में आता! उसके चित्त की अस्थिरता दिन प्रतिदिन जटिल और उन्मन पूर्ण हो रहा है। हो सकता है कि आगे चलकर भविष्य में वह असहनीय हो जाए।

यद्यपि केदार की आत्मीयता से भरी भरी मुस्कान उसके संग सम्पर्क बनाने के लिये उत्सुक है। अपनत्व का भाव लिये उसकी विहसती हुई आँखें मैत्री सम्बन्ध दृढ करने की दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील है। परन्तु इन सबके विपरीत उसका उपेक्षित और भावना शून्य व्यवहार ही बीच में बाधक बना हुआ है। वह इस पुरुठार व्यवधान को तोडने की अपनी ओर से कोई चेष्टा नहीं करती! आखिर क्या ? क्या झिझक है उसके मन में ? इस प्रकार के तनाव को बनाये रखने में उसका क्या उद्देश्य है ?

विशेष कर उस व्यक्ति के साथ तो वह अन्याय ही कर रही है जिसने उसे आश्रय दिया - सरक्षण दिया! क्या उसका यही पुरस्कार है! अन्धड में उडते पात तिनके को स्नेह का वरदान देकर जिस व्यक्ति ने उद्धार किया क्या उसका यही प्रतिदान है? इस सौजन्य के अभाव से क्या कटुता और असहिष्णुता के भाव उत्पन्न नहीं होगे?

ये कतिपय प्रश्न है जो उसकी अंतश्चेतना को एकदम झकझोर गये है।

कुछ देर के पश्चात वह उठकर अनमनी सी माजी के कमरे में चली गई जहाँ वे भगवान के चित्र के सामने नयन मूद उठी कोई भजन गुनगुना रही है। उनकी तन्मयता कही भंग न हो जाए अत रम्भा चुपचाप उनके पास बैठ गई। उसके मन में अनेक प्रकार के विचार मडरा रहे हैं। यद्यपि इस कमरे में एक सुखद मौन है—अलौकिक शान्ति है। उसमें एक पवित्रता छाई हुई है। इसके लिये मनुष्य मात्र का हृदय तरसता रहता है। असदिग्ध रूप से इसका अनुकूल प्रभाव रम्भा के व्याकुल और अशान्त चित्त पर पड़ा।

माजी ने आख खोली तो उनकी सीधी दृष्टि उसके उतरे चेहरे पर पडी। उन्होने मधुर कण्ठ से पूछा—'क्या बात है बेटी?

रम्भा लज्जा से अवनत वदन बैठी रही।

उनके बार बार पूछने पर सिर हिलाकर उसने कह दिया—

और देश को इनकी प्रतिभा से कोई महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय लाभ हो सकेगा अथवा नहीं—कह सकना कठिन है।

इनकी माता एक धर्म भीरु महिला है। एक प्रकार से सोलहवीं शताब्दी का जीर्ण शीर्ण पिंड जो गीता भागवत पढ़ने में कथा कीर्तन सुनने में और कभी कभी तीर्थ-यात्रा करने में ही अपने जीवन की चरम सिद्धि समझती हैं। व्रत उपवास करके शरीर शुद्धि करना नितांत आवश्यक है। यह तो महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान है इसके बिना तो किसी प्रकार जीवित ही नहीं रहा जाता। लगता है जैसे मध्य काल के गलित जीवन का वे इस युग में भी पूर्ण प्रतिनिधित्व करती हैं। उनकी वाणी में जहां ब्राह्मण और पुजारियों के लिये सादर नम्रता है वहां अपने बहू बेटियों के प्रति दर्प भरी भावना है। उन्हें शासन करना अच्छा लगता है। प्रत्येक बच्चे का कार्य कलाप उनके कठोर शासन से प्रभावित है। उनकी दिनचर्या निर्धारित है। इस में किसी तरह का व्यतिक्रम असहनीय है। विशेष कर बहू बेटियों को तो पूर्ण निष्ठा एवं संयम से रहना ही पड़ता है। निश्चित रूप से वे कुछ कड़े नियमों का पालन आस्था से करती हैं इस में संशोधन की कोई छूट नहीं।

इस परिचय में नाम व स्थान को रम्मा बड़ी सफाई से टालती गई—माजी ने यह लक्ष्य किया। यद्यपि उन्होंने भी पूछने की आवश्यकता नहीं समझी।

इसके पश्चात् उनके बीच में खामोशी का एक लघु अन्तराल रहा।

इधर रम्मा मन ही मन एक बात बड़ी देर से सोच रही है। क्या न पूछ कर शांत कर लिया जाय ? एक झिझक है जो ऐसे अवसर पर बाधक बन जाती है। प्रत्येक दृष्टि से यह एक अनधिकार पूर्ण चेष्टा है । तब ?

लेकिन पूछे बिना भी रहा नहीं जाता। मन की यह दुविधापूर्ण स्थिति जिज्ञासा शान्त करने के लिये उत्सुक है।

उसने सकोच-पूर्वक धीरे से पूछ ही लिया— माजी ! बच्चों की मां

कब तक लौट आयेंगी ?
क्या ?"

माजी सहसा अस्थिर हो उठी। रम्भा ने तभी चौंका देने वाली स्पष्ट वादिता का परिचय दिया जैसे उन्हें स्वप्न में से जगा दिया है।

अब प्रश्न कर्ता पर इसकी विपरीत प्रतिक्रिया हुई। वह घबरा गई। आवेश में वह जो कुछ पूछ बैठी है कदाचित इसका सीधा सम्बन्ध उसमे नहीं है। इस कारण से यह प्रश्न हो गया। वह स्थिति को स्पष्ट करने के प्रयास में बोली— आप आप बुरा नहीं मान गई। अरे नहीं।

माजी का भावुक मन करुणा से भर गया।

इसमें बुरा मानने की क्या बात है।

इस पर भी रम्भा के चेहरे पर पसीने की बूंदें भलक आई।

अब उसने देखा कि माजी धीरे धीरे उद्विग्न और अवसाद ग्रस्त हो गई। प्रसन्न भाव से चमकने वाली शान्त आत्मा में शोक की घनी छाया आच्छन्न हो गई। पलकों पर अश्रु कण छलक और कपोलों पर बह आये। उन्होंने विगलित कण्ठ में कहा— कहो! मेरी लक्ष्मी बहू का स्वर्गवास हुए लगभग चार वर्ष हो गये है।

इसके साथ उनके मुंह से हल्की सी सिसकी फूट पड़ी।

सुनकर रम्भा धक सी रह गई। ऐसा तो उसने कल्पना में भी नहीं सोचा था। क्षण भर के लिये उसके सोचने की शक्ति हठात क्षीण हो गई।

अश्रु स्राव के बीच में माजी कहने लगी— तभी तो बेटी यह घर रेगिस्तान के समान उजड़ा उजड़ा और वीरान दिखाई देता है। तुम्हें इसके आंगन में कहीं खुशी से भरा किलकारियां सुनाई पड़ रही है। स्नेह से रिक्त उसका हृदय तो बंजर धरती के समान सूना है—रीता है।

इस निराश शोकाकुल और अश्रु मुखी वृद्धा को रम्भा क्या उत्तर दे। अब तो उसे भी चारों ओर गहरी अवसन्नता तथा घोर विवशता

का विदारण स्वर सुनाई पड रहा है। वह भानर से मन को हिला जाता है। सत्रग्ना म उसके नत्र भी डबडबा ग्राय। उसका वहा बग्ना भी एक तरह स कष्टकर हो गया। विना कुछ कहे सुन वह उठ गई और ग्रपने कापते परा को सम्हालकर वह ग्रपन कमरे की तरफ चल गई।

यद्यपि वह मन ही मन साचनी जा रही है कि यह कसी विडम्बना है जो सास को बहू का स्नह ग्रौर ग्रादर नही मिला। बटी मात गाद स इस छोटी सी ग्रवस्था म वचित हो गई है। ग्रौर पति पत्नी के वियाग म चिर तपित है। प्रेम के ग्रभाव म उसके जीवन के सम्पूण रस स्रोत सूख गय है ।

रम्भा समय स पहले ही भाजन करने बठ गई। माता जिसी मात्र इयर काय के निमित्त अपने कमरे म अभी तक उनमा हई है। इसी बाच दो पन्नासिनें आ गई। अब ना बाना का एसा सिलसिला चला कि खत्म होने का नाम ही नहा लेता।

कुछ देर तक वह गृह स्वामिनी की प्रतीक्षा करती रही लेकिन उन्हे आती न देख वह शेष रसोई का काम समेटने लगी। बर्तन माज कर साफ कर लिये। रसोई घर म भाड लगाकर पानी स उसने फश भी धो लिया। फैले हुए सारे सामान को यथा स्थान रख लिया तब कहीं जा कर उसने तृप्ति एव सताप की लम्बी सास ली।

उसने एक थाली उठाई। उसम चावल और दाल लेकर बठ गई। वह पानी का गिलास भी भरना नहीं भूला। उसने तरकारी और गड़ी के प्रति अरुचि प्रकट की। वास्तव म उस आज भूख कम है। पट म कुछ गडबडी आज सुबह से महसूस कर रही है।

तभी उसने सुना— मौसी। मैं भी आ जाऊ

रम्भा ने सिर घुमाकर देखा कि बालिका सकोच की सरल मूर्ति बनी खडी ललचाई दृष्टि से उसकी तरफ ताक रही है। उसका विशेष ध्यान थाली की ओर है। यह उसकी नियत स भली भाति जाहिर है।

रम्भा के अधर सम्पुट खिल गये। सचमुच कुछ समय से वह अब और तनहाइ अनुभव कर रही है इसके अतराल म एक विचित्र प्रकार की उचनी सनसना रही है। मन को बहलाने के उद्देश्य स ही उसने रसोई का शेष काय बिना किसी से कहे सुने कर दिया। देखते देखते उस

के चेहरे तथा आखो म भी भाव परिवनन हो गए । इसके फलस्वरूप उसने अप्रत्याशित सद भावना और उदारता का परिचय दिया।

"हा आ जाओ।' रम्भा मुस्करा पडी— मैं तुम्हे आज अपने हाथ मे खिलाऊगी।

अच्छा।

बबी का मुख कमल अनपेक्षित प्रसन्नता से विकसित हो गया।

वानिका समीप आ गई तो रम्भा ने उस अपनी गोदी म ले लिया।

लो खाओ।'

तनिक झिझकते हुए बबी ने मु ह खोला, अगले क्षण रम्भा ने अपने हाथ का ग्रास उसम छोड दिया। अब लाना खुशी म फूली नही समा रही है।

वे दोनो भोजन करने म इतनी व्यस्त नही है जितनी बातों म। इस कारण से एक जोडी भीगी आखो की दृष्टि को वे देख न सकी। पता नही व कब स खडी हैं और चुपके चुपके इस दृश्य को अपने अतम की गहराइयो म उतार रही है। हठात व मन ही मन कहने लगी— इस अभागी लडकी का सचमुच म रम्भा के हृदय का इतना वात्सल्य प्राप्त है कि इसके उपलक्ष म जीवन पयन्त भी उऋण हो सकना प्राय सम्भव नही है। इसकी मा की मृत्यु के पश्चात यह परायी लडकी ।

बस माजी का करुणा प्लावित हृदय भर आया। वे साडी का आचल आखो पर लगाकर उलटे परो निःशब्द लौट पडी। ऐसे सुख और आनन्द से परिपूर्ण क्षणो में वे किसी भी प्रकार का विघ्न डालना नही चाहती।

स्नेह विह्वल कण्ठ से रम्भा ने पूछा—'क्यो बबी ! मेरी बनाई हुई रोटी और फूल तुम्हारी सहेलियो को पसन्द आये ?

अरे हा ! बहुत पसन्द करती हैं वे।' वानिका ने बडे भोलेपन से उत्तर दिया।

और तो और य सब देखकर व बार बार पूछती हैं कि तेरी मौसी कैसी है ? कब आई है ? अगर हम आय तो क्या हमारे भी इसी प्रकार के सुन्दर चोटी और फूल बना देगी ? वह उत्साह से बेबी पुन कहने लगी।

इस पर रम्भा हस पड़ी।

जरूर बना दूगी।'

अच्छा।

लड़की को उसके प्रति कितना लगाव है—यह तो अगली बात से स्पष्ट हो गया।

मौसी ! आजकल मैं तुम्हारे साथ सोती हू तो मुझे खूब गहरी नींद आती है। कभी कभी तो मीठे सपने भी दिखाई देते है।

अरे वाह ! यह तो बहुत अच्छी बात है।

बेबी के प्रति रम्भा के मन म पूर्ण सहानुभूति ही नही बल्कि एक ममत्व का भाव है। लगा जैसे उसके हृदय म एक आत्मीय के रूप म ग्रहण की तीव्र आकांक्षा है। अब वह भली भाति जान गई हैं कि बालिका अपना तन मन उसे अर्पित कर चुकी है। यदि बेबी की वह इच्छा पूर्ति नही करे तो उसका नन्हा सा दिल टूट जाएगा—ऐसा सन्देह किया जा सकता है।

बातो ही बातो मे बेबी ने पूछा— आप बाबूजी से नाराज हैं क्या ?

हैं।

रम्भा चौकन्नी होकर ऐसे देखने लगी मानो वह अगली बात सुनने के लिये अत्यधिक उत्कण्ठित प्रतीत हो रही है।

हा। बाबूजी कह रहे थे।

अच्छा।

रम्भा के हृदय की गति अकस्मात तीव्र हो गई।

उसने सम्हलकर-नाटकीय अन्दाज म पूछा— और क्या कह रहे थे

तुम्हारे बाबूजी ?'

बालिका उसकी विशाल आंखों में झांक कर कहने लगी— बाबूजी कह रहे थे कि तुम्हारी मौसी हम पर बहुत नाराज हैं। तभी तो सीधे मुंह हमसे बात तक नहीं करती। पास से एसे कतरा कर निकल जाती है जैसे हम कोई खराब और गंदे कीड़े हैं। उसको छूत लगने का डर है।

छि छि।

घृणा के अतिरेक से रम्भा का चेहरा क्षण भर के लिए विकार ग्रस्त हो गया।

'ऐसे भी कोई कहते है।

अब अधिक बढ़ना रम्भा के लिये कठिन हो गया। यह साधारण सी बात उसके उल्लसित मन पर असामान्य चोट पहुंचा गई। वह तत्काल ही उठ गई। उसकी आंखों में लज्जा और क्षोभ के आंसू चमक आये।

हठात बालिका चकित रह गई। वह बोली— अरे अब मौसी को क्या हो गया ?

एक प्रश्न वाचक चिन्ह उसके अधरों पर मचलकर चुप हो गया।

रात को भोजन करने के उपरात केशर अपने कमरे म एक पुस्तक लेकर बठा है। पढने की कोशिश कर रहा है तो अपने आपको विचित्र प्रकार की आलस्य जनित तन्द्रा म ग्रसित पाता है। काफी समय बीत गया मगर वह कुछ भी पढ नहा सका। बस पडा पडा सो रहा है। कभी लगता है जस वह सो कर जागता है। यद्यपि पूरी तरह जाग्रत भी नही है। एक अध स्वप्न की सी अवस्था है जो अपनी अध साई चेतना को सवन्न शील बना गई है। एक विचित्र विडम्बना है।

चार वष का यह कठोर सयमित और एकाकी जीवन! इसके कारण घर मे कुछ उदासीनता नराश्य और बिखराव सा आ गया है। उसके उल्लास म कोई योग देने वाला नहीं। उसके हष म कोइ सम्मिलित होने वाला नही। उसके हास की निमल गगा का कही सगम स्थल नही। जहा यौवन पूव हृदय रागात्मक सम्ब ध स्थापित करके एक हो जाते हैं।

ऐसी स्थिति म चारो ओर अजाब सी खामोशी और शान्ति छाई जान पडती है। इसके अन्तगत कभी कभी किसी एक स्पष्ट अमगल अलक्ष्य की छाया सी गिरती दीखती है।

वह मन ही मन सोचता है—उसे असदिग्ध रूप से पत्नी का खूब प्यार मिला है। जब तक वह जीवित रही उसके हृदयाकाश म सदा सवदा शीतल चद्रिका मुस्कराती रही। उसके घर आगन म दिन रात आनन्द की मन्दाकिनी अनवरत तरगित होती रही।

तभी उसे एक सुश्री मुख मण्डल स्मरण हो आया। किंचित क्षण

पर सुडौल। वपाल के ऊपर तक घूघट। उसके नीचे स्निग्ध दो वक्रिम नेत्र। देह का रग साफ मगर लापरवाही के कारण तनिक कुहेलिका आच्छादित मलीन चादनी सा चित्ताकर्षक और हृदयग्राही।

इसके साथ वह स्मृतियों के सुख सरोवर म डूबकी लगाकर तैरने लगा।

कुछ देर क पश्चात वह कल्पना क जाल को तोड कर यथाथ क धरातल पर आ गया आखें चतुर्दिक परिक्रमा करके एक स्थान पर स्थिर हो गई। तभी एक प्रश्न उसके हृदय म अपनी छाया फला गया।

क्या पुरुष क लिए नारी-सम्पक आवश्यक है।

उसने मन ही मन तक-सगत उत्तर देने की चेष्टा की।

'हा। एक बार किसी नारी से सम्पर्क हो जाय तो उसके जाने क बाद निवाह कठिन है। उसका अभाव दिन रात खटकता है। वियोग की पीडा निरन्तर सताती है। किसी नारी स पुन प्रम पूण सम्बध स्थापित किये बिना सब कुछ सूना सूना सा लगता है। मन पर अवसाद की परत सी जमी रहती है। हृदय की सम्पूण वत्तिया एक प्रकार से निष्क्रिय एव निश्चेष्ट हो जाती हैं। इस विडम्बना से मात्र मुक्ति का सहज स्वाभाविक विकल्प यह है कि कि ।

इस समय कमरे म किसी की पदचाप सुनकर हठात केदार सनक हो गया। अपने पलग पर उठकर बठ गया। हाथ की पुस्तक मेज पर रखदी। अक्सर म उसे लेटकर पढ़ने की आदत है।

आप ?

वह स्तब्ध रह गया।

रम्भा ने कोई उत्तर नही दिया। बस, आकुल दष्टि से केदार को निहारा और दूध का गिलास सामने बढा दिया।

आपने दूध लाने का कष्ट क्यो किया ?

जाने क्यों उसके चहरे पर एक खिन्न भाव अनायास ही आ गया। यद्यपि इस खिन्नता क बीच उपेक्षा की एक लहर भी दिखाई पडती

है ।

केदार ने घबराकर पूछ लिया— क्या मेरी तबीयत खराब है ?

इस पर रम्भा के अधरों पर एक तीखा व्यंग उभर आया। इच्छा हुई कि एक निर्मम चोट करे किन्तु टाल गई। मौन रही। कुछ बोली नहीं।

इस मौन मुद्रा से तनिक आश्वस्त होकर केदार दूध पीने लगा फिर भी उसका मुख मण्डल किसी अज्ञात ग्लानि एवं उद्विग्नता की मिश्रित अभिव्यक्ति से भर गया।

रम्भा ने खिड़की खोल दी परदा हटा दिया। बाहर से शीतल समीर के मन्द मन्द झोंके कमरे में आने लगे। इनका स्पर्श पाकर चित्त का तनाव किंचित् कम हुआ।

केदार ने दूध पीकर गिलास मेज पर रख दिया। उसने उड़ती हुई दृष्टि दूर खड़ी रम्भा पर डाली जो मान भरे—अभिमान भरे अन्दाज में अब उस की तरफ देख रही है।

उसने निर्विकार ढंग से कहा— आप वेदी से मेरे सम्बन्ध में क्या कुछ कह गये हैं याद है आपको ?

सुनकर केदार सहमा अस्थिर हो गया। विनित कण्ठ से फूट पड़ा— 'क्या ?

यह भी मुझे ही बताना पड़ेगा !' रम्भा स्वर को कुछ चढ़ाकर बोली।

अब !

केदार की अवस्था इस बीच अत्यन्त शोचनीय हो गई।

रम्भा ने कटुता भरे मन से पूछा— आपने कैसे कह दिया कि मैं आपसे नाराज हूं ?

केदार से कोई उत्तर देते नहीं बना। वह झेंप मिटाने के उद्देश्य से कभी इधर ताकता है—कभी उधर !

रम्भा अपलक उसकी ओर कई क्षण तक निहारती रह गई। उसे

रोष भी आता है और दया भी। केदार का यह परास्त और द्रवित भाव सोच म डाल गया। न जाने यह कसा पुरुष है! वह तीखे ारा स उस लक्ष्य बनाकर प्रहार कर रही है और वह केवलमात्र अ यवस्थित है—अभिव्यक्ति विहीन है। बस! कोइ प्रतिकार नही—कोइ प्रत्युत्तर नही। है केवल समपण का कातर भाव जो हृदय म उत्तेजना पदा नही करता। ✓

आश्चय!

रम्भा की निगाह सिर झुकाये केदार के आस पास मडरा रही है। तभी आवेग का एक तीव्र झोका आया और मन की भावना हठात् फूट पडी— आपन मेरे व्यवहार म एसा क्या कुछ देखा है कि जिसके कारण मैं मैं!

बस कण्ठावरोध हो गया। रम्भा के अधीर बन हुए लोचनो म एकाएक जल भर आया। मुक्ता के समान दो बूद आसू चू पडे।

इस बीच वह आधी वग स आग बढी और मेज पर से गिलास उठा-कर कमरे के बाहर चली गइ।

केदार चाह कर भी अपनी स्थिति स्पष्ट न कर सका। वह उसकी आतरिक पीडा को भली भाति समझ गया। कहा चोट लगी है - कहा आहत हुई है वह ठीक प्रकार स जानता है। परिणाम स्वरूप आत्म घाती उद्वेलन समस्त चेतना को क्षुभित कर गया है, वह इसस भी अन भिज्ञ नही है। अब तो उस अपने ही व्यवहार पर खेद है ग्लानि है दुख है। अपमान की यत्रणा स तमतमाता हुआ रम्भा का चेहरा जब उसकी स्मृति म आता है तो उसका दिल डूब डूब करने लगता है।

सचमुच कसा उजाड सा लग रहा है। सम्पूण वातावरण कसा नीरस और अप्रिय है जैसे कुछ खो गया है—कुछ टूट गया है। बाहर तेज हवा चल रही है। निरुद्देश्य और निष्प्रयोजन मन भटक रहा है। है। रम्भा की आवाज अभी तक कानो म गूज रही हैं। उसम हृदय को विकल कर जाने वाली तीखी तडफ भी है। उसके प्रति वह प्रभाव शून्य और विकार रहित हो नही पा रहा है

आलमारी खोली और उसमे से गहना का छोटा सा बक्सा निकाला। अब थोडी ही देर मे रम्भा के कानो म बाला के स्थान पर साने के लम्ब इयरिंग शोभा पा रहे हैं। गले म सुदर नक्लेस है।

रम्भा ने झिझकते हुए टोका— रहन दीजिये माजी !"

'ऐसे शुभ काम म टोका नही करते।' पावा की छोटी छोटी पाजेब निकाल कर माजी न भाव विह्वल कण्ठ से कहा— कुछ वषा से ये गहने यू ही इस बक्मे मे बन्द पडे हैं। कोइ पहनन वाला नही है। सयोग से तुम आज पहली बार केदार के साथ बाहर जा रही हो, इसलिये !'

इसी बीच गला रुध गया। कोई पुरानी याद सता गई। देखते देखते आखें डबडबा आइ।

' यदि एकाध दिन तुम पहन लोगी तो कौन से य घिस जायगे !

रम्भा का मुख सहसा अरुण हो गया। वह कुछ बोल न सकी।

अब माजी न उसको ध्यानपूवक देखा। इसके बाद पूछ बैठी— तुम्हें कोई ऐतराज है बटी!"

' *जी जी नही !' रम्भा चौंकती हुई सी बोली।*

'मुझे तुमसे ऐसी ही आशा है।

वद्धा इस उत्तर से सतुष्ट हो गई। उसने ललाट पर गोल बिन्दी लगाई और पीठ पर स्नेह का हाथ फेर कर कहा—'अब जाओ।'

'अच्छा !'

गदन हिलाकर रम्भा शीघ्रता म घूम गई।

छम छम छम !'

उसके पावो के पाजेब की यह आवाज अचानक विचित्र सी गूज पैदा करती है। एक प्रकार से कानो म चुभ सी गई। हठात् दरवाजे की तरफ बढन वाले पैर रुक गये। वह सकपका कर सोच रही है कि केदार उसे प्रथम दृष्टि मे देखकर क्या-क्या सोचेगा? वह क्या उस गहरी और अथ-पूण दृष्टि को सहन कर सकेगी? इतना साहस है उसमें?

रम्भा के ललाट पर पसीने की बूदें चमक ग्राइ। तभी पीछे से ग्राश्चय व्यक्त किया गया।

'रक क्यो गई, बेटी ?"

जस इस स्वर ने ग्रकस्मात् उसे ग्रागे धकेल दिया।

जाने कसा कसा मन लिये रम्भा धीरे धारे लौट पडी। पाजेब का स्वर ग्रधिक मधुर हो गया है। वह मा को भाता है। काना को प्रिय लगता है। इस कारण से माजी उसे ग्रपलक निहारती रही, जब तक वह ग्राखा से ग्रोझल नहीं हो गई। इसके पश्चात् उनक ग्राखा मे वह मोती माला सघन हा गई।

घर की दहलीज के बाहर रम्भा का पाव रखना हुआ कि अचानक उसकी छाती पर उस चिर परिचित भय का साप लोट गया। लगा जैसे उसके पावो मे कठोर बेडिया पड गई। मधुर आवाज़ करने वाली पाजेबें सपोले बनकर उसकी पिंडलियो से लिपट गई। कब वे डस जाए और कब अपने विष का प्रभाव उसकी रक्त की धमनियो म छोड दें ?

पता नही इस समय बाहर जाने के प्रति उसके मन म एक दम विरक्ति और उदासीनता कैसे उत्पन्न हो गई ! एक क्षण के लिए भी उसका मन सुस्थिर एव अविचलित न रह सका। हृदय धडकने लगा है, कलेजा डूबने लगा है ।

गुमशुदा की तलाश। तस्वीर। परिचय और न जाने क्या-क्या उसके कल्पना की आखो के आगे चल चित्र-सा परिक्रमा कर गया !

'अगर किसी ने पहचान लिया तो तो ?'

इस तो ने उसके चित्त की व्याकुलता अधिक बढा दी।

एक पल ठिठककर रम्भा को आते न देख केदार ने अचम्भित रहकर प्रश्न किया—'अरे क्या हुआ ?'

"जी जी !'

रम्भा का चिंता क्षीण मुख-मण्डल हठात् झुक गया।

'आइये। रुक क्यों गई ?'

अनुरोध और प्रश्न ! इसका तात्पर्य यह है कि केदार भी उसकी मन स्थिति को भली प्रकार समझ नही सका है।

'जी जी !' कण्ठ म ग्लानि मिश्रित स्वर लाकर रम्भा ने धीरे

से कहा— मेरा जी अच्छा नहीं है। आप लोग चलें।

यह कैसे हो सकता है?' अधिक रोकने के उपरान्त भी केदार की झुंझलाहट फट पड़ी— आप आप गजब करती हैं।

ज्ञात नहीं कुछ ही देर में किस कारण से रम्भा के भीतर इतना बड़ा भावान्तर आ गया? आश्चर्य!

कुछ क्षण ठहरकर मधुर मुस्कान अपने होठों पर लाते हुए केदार ने पुनः आग्रह किया— जी नहीं। आप को चलना तो पड़ेगा।

अरे!

रम्भा सोच में पड़ गई। दुविधा और अनिर्णय की अवस्था को समाप्त करना प्रायः आवश्यक है। इस समय चाहे उसकी मजबूरी कहो या और कुछ। इसके बिना छुटकारा नहीं है।

चलिये। केदार ने अनुरोध किया।

आत्मीयता और अपनत्व से परिपूर्ण इस अनुरोध से रम्भा किसी भी स्थिति में टाल न सकी।

'जी जी! अच्छा!

मुख पर कितनी ही विकृत रेखायें उभर आई। किन्तु विवश हो रम्भा ने आगे पैर बढ़ाये।

यद्यपि वह पीछे मोटर-साईकिल रिक्शे में बैठी है तथापि उसका विकल मन कहीं अज्ञात दिशा में उड़ रहा है। अनेक विचार धारायें एक दूसरे को काटती हुई आती हैं और अचिन्तनीय हलचल पैदा करके चली भी जाती हैं। निश्चय ही वह उद्विग्न है—अशान्त है। दिल एक प्रकार से किसी गहरे अंधकार में डूब रहा है।

इधर रम्भा की तरफ वाली खिड़की से केदार उसे बताता जा रहा है कि यह कौन सी जगह है, रिक्शा कहां से किस सड़क पर मुड़ता है, किस सड़क का नाम बदल कर किस नेता के नाम पर कर दिया है! इस बिल्डिंग क्या नाम है ये दफ्तर हैं ये सरकारी इमारतें हैं इत्यादि। शाम का समय है। सड़क पर साईकिलों का अटूट तांता। तांगें मोटरें

श्रौर रिक्शा की भी कोई कमी नही सडक पार करना मुश्किल ।

परन्तु रम्भा कुछ भी नहीं सुन रही है । केवल नीची नजर किये सुनने का भाव दिखाती हुई कभी कभी 'हा हू' भर कर जाती है । इस बीच केदार का कन्धा उसके कन्धे से टकराया मानों सारे शरीर में विद्युत लहर सी दौड गई । एक नया अनुभव है जिसकी उसे तनिक भी आशा नही थी । दूसरी बार जब रिक्शा मुडने लगा तो जान बूझ कर वह सावधान हो गई । उसने सम्भलते सम्भलते बेबी को दूसरी खिडकी की ओर हल्का सा धक्का दिया । वहा बन आई जगह पर वह धीरे से सरक गई । बालिश्त भर की जगह छोड कर वह केदार से दूर बेबी से सट कर बैठ गई जिसका ध्यान सडक की भीड पर केन्द्रित है।

आज रम्भा के उद्वेलित मानस सिन्धु के अन्दर विचित्र प्रकार की लोल लहरें अकस्मात् ही तरंगित हो गई ।

जब वह अपने माता पिता से लेकर भाई-बहिन तक —अर्थात् पूरे परिवार का मोह एक प्रकार से त्याग चुकी है तो फिर यहा यह मोह बन्धन क्या ? केदार के परिवार से यह अवाच्छनीय लगाव कैसा ? किस स्वार्थ की परिधि में बन्दी बनकर वह उनसे संलग्न होकर रहना चाहती है ?

ये कतिपय प्रश्न हैं जो इसकी मानसिक अवस्था का अस्त व्यस्त कर गये हैं ।

बेबी !

क्या लगती है उसकी ?

बहिन या बेटी !

'बेटी शब्द' का मन में उच्चारण करते ही रम्भा का अग अग एक मोहक पुलक से खिल गया । निसंदेह नारी जीवन की सार्थकता मातृत्व में ही है । भारतीय स्त्री जिस परम्परानुमोदित संस्कारों के परिवेश में पलती है उसमें सृजन की पीडा को भोगना एक सुखद अनुभव है । रचनाकार बनकर वह पूर्णता की अनुभूति से गौरवान्वित हो जाती

है। वह मातत्व का वरदान पाकर सन्तुष्ट है। उसके मन को एक नया स्वर मिलता है। बिखराव से बच कर वह सुव्यवस्थित हो जाती है। यह व्यथा नये जीवन की मधुर आशा लेकर आती है, जिसका प्रत्येक नारी अभिनन्दन करने के लिये गर्व-सहित प्रस्तुत रहती है

क्या बबी उसकी बेटी है?

क्या नौ माह तक उसे गर्भ में धारण किया है?

कौन है उसका सृजनकार?

'छि छि !

रम्भा का अंत करण घोर लज्जा एवं असीम ग्लानि से भर गया।

तब उसका क्षुभित मन प्रश्न कर बैठा— फिर उसके प्रति इतना मोह क्यों—इतनी ममता क्यों?

नक्षिन प्रश्न उसके अभ्यन्तर में अनुत्तरित ही ध्वनित प्रतिध्वनित हो कर रह गया।

देखो मौसी! वह मदारी डमरु बजाकर बन्दर को नचा रहा है। बालिका ने तभी हर्ष मिश्रित आश्चर्य से कहकर उसका ध्यान बाजार की भीड़ की ओर आकृष्ट करना चाहा।

रम्भा ने चौंक कर बाहर की तरफ देखा तब तक वह दृश्य पीछे छूट गया। वह बालिका के उल्लास में किसी भी प्रकार का योग न दे सकी। उसने एक गहरी साँस लेकर ही मौन धारण कर लिया।

इस लघु अंतराल के पश्चात वह पुन अपने विचारों में लीन हो गई।

उसके इस आंतरिक सताप का कारण क्या है?

उसकी इस तृप्ति का आधार क्या है?

क्या उसकी यह सन्तुष्टि एवं तृप्ति आत्म प्रवचना तो नहीं है!

प्रश्न पर प्रश्न?

ढोंग छल भ्रम!

वास्तव में कंवार के घर में आश्रय लेने का उसका क्या उद्देश्य है?"

रम्भा के अन्दर से एक दूसरा रम्भा ने एक तीखा प्रश्न किया।

अतिथि एक दिन का, दो दिन का और अधिक से अधिक तीन दिन का, यह लोकाचार तथा सामाजिक व्यवहार की बात है। सब विदित है। इस पर भी किसी अपरिचित के घर में इतने दिन ठहरने का क्या प्रयोजन है?

जैसे जलती हुई मशाल उसके हृदय की गहराइयों में उतर गई।

क्या लोभ है?

क्या आकर्षण है?

क्या प्रेम है?

कहीं किसी क्षुद्र स्वार्थ भावना से अभिभूत उसका मन प्रलोभित तो नहीं हो गया है!

हा हा हा...!

रम्भा इस निर्मम अट्टहास को सुनकर एक दम अवसन्न सी रह गई। उसके हृदय पर गहरे कोहरे के समान अवसाद की परत सी जम गई।

मोटर साईकिल रिक्शे की सवारी भी बड़ी तकलीफदेय है। कितने ही सीट से चिपक कर बैठ जाओ लेकिन हिले डुले बिना रहा ही नहीं जाता। कभी हल्का सा धक्का लगता है तो कभी घुमाव पर उछल पड़ते हैं। पास बैठे पर बोझ बन कर झुकना तो साधारण सी बात है। यदि दुर्योग से कहीं लम्बे सफर का काम पड़ जाए तो फिर खैर नहीं। पेट में मरोड़ होने से लेकर जी घबराने लगता है। पेट्रोल की बदबू और धुंए से बुरा हाल हो जाता है।

परस्पर टकराते-लुढ़कते हुए अंत में वे सभी सक्रम के कैम्प के पास पहुंच गये।

इस बार केदार ने कंधे से स्पष्ट झटका देकर रम्भा से कहा—'उतरो!'

सहसा उसकी वह विक्षिप्त सी तन्द्रा टूटी। अपने लड़खड़ाते पावों को सम्हालकर वह सजग होने का प्रयास करने लगी। नीचे उतरी तो पैर

डगमगा गये। आग बढ़कर केदार ने सहारा दिया।

'कहीं पैर सो गया है।'

'जी। कुछ कुछ ।"

रम्भा ने अस्फुट स्वर म कह दिया।

आह !

दाना को पीछे छोड़कर बगार टिकिट लन के लिए अनियत्रित भीड़ म घुस गया।

'सुनिए !

पलटकर केदार ने देखा उस नारी मूर्ति को जिसकी उसने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की है। लाल लाल नैना से सीधे उसे ही देख रही है और भीतर के उद्वेग को हाठों को दबाकर रोक रही है। अजीब सा तनाव है उसके सम्पूर्ण चेहरे पर। लगा जैसे रात भर वह सो न सकी है।

"आप ! हठात उसके मुंह से निकला और तनिक व्यग्र भाव से बोला—कहिए !"

उसने थरथराते होठों से कहा—जी अब मैं जाना चाहती हूं !

इसके पश्चात रम्भा की आंखें अनायास ही डबडबा आईं। अब उसकी गर्दन नीचे झुक गई।

केदार अवाक्—सभ्रम !

कल शाम से वह ध्यान पूर्वक देख रहा है। आकाश मेघाच्छन्न है। घुमड घुमड कर बादल आ रहे हैं। उनके अन्तर में विचित्र प्रकार का कोलाहल है। थोडी ही देर में अभी तड़ित का भयंकर प्रकोप होने वाला है और इसके बाद मूसलाधार वर्षा !

मोटर साईकिल रिक्शे में रम्भा की असामान्य चुप्पी देखकर केदार का चिंतित होना स्वाभाविक है। सर्कस के कैम्प के पास उतरते समय भी उसने कोई विशेष उत्साह प्रकट नहीं किया। अपने ही आप में सिमटा सिकुड़ा वह एक कच्ची कली के समान डाल पत्तों में छिपने का प्रयत्न करती रही। पूरे सर्कस को उसने विमन से देखा। हमने अथवा किसी

बातचीत करने के प्रसग मे भी वह केवल भारी कण्ठ से 'हा—हू' करती रही। इतने सारे जानवरो तथा कलाकारो के चमत्कार पूर्ण कर तब को भी वह निर्लिप्त और तटस्थ भाव से ही देखती रही।

अचरज तो इस बात का है कि उसने बेबी के हर्षोल्लास में किसी भी तरह का साथ नहीं दिया। जब कि वह बालिका को हृदय से प्यार करती है। उसके सग खेलती है सोती है खाती है और ।

इसके अतिरिक्त घर से खाना होने से पहले द्वार पर ठिठक कर सर्कस में जाने के प्रति उसने अरुचि और उदासीनता व्यक्त की। वास्तविकता यह है कि स्वय उसने ही चलने के लिये आग्रह किया था और बाद में । लगता है जैसे यह सब उसकी तत्कालीन मानसिक अशान्ति का ही परिणाम है जो किसी अदृश्य शक्ति के सकेत से परिचालित होकर विभिन्न प्रकार के छाया चित्र दिखलाती हैं।

केदार ने कुण्ठित स्वर में पूछा— मेरे द्वारा कोई असाधारण भूल हो गई है?

युवती ने गर्दन हिलाकर अस्वीकार कर दिया।

किसी प्रकार के अभद्र और अशिष्ट व्यवहार के दोष का कलक है मेरे उपर ?

जी नहीं।

इस बार तत्क्षण से उसके मुह से निकला।

अनजान में कोई अपराध ?

दु खी कण्ठ का यह स्वर रम्भा को विचलित कर गया। वह अपनी अधीरता दबा न सकी। अश्रु पूरित पलकें उपर उठाकर उसने बीच ही में उत्तर दिया— जी नहीं। मुझे आप से कोई शिकायत नहीं है।

तो फिर क्या बात है?

केदार ने आखो में दृष्टि गडा कर प्रश्न किया।

अब रम्भा का उद्वेग जन्य अस्थिर मन अन्दर ही अन्दर कराह उठा। यद्यपि मुह से उफ़ तक नहीं निकली।

केदार के हृदय म अनपेक्षित उथल पुथल मच गई। पुतलियों म जिज्ञासा का भाव लेकर वह हठपूर्वक पूछ बैठा— बोलिये क्या बात है ?

क्षुब्ध कण्ठ से रम्भा ने उत्तर देने का प्रयत्न किया— जी, मुझे यहां रहते रहते काफी अरसा हो गया है ।

सो तो ठीक है। केदार ने किंचित आश्वस्त होकर कहा। सचमुच रम्भा की भाव मुद्रा ने तो उसे एकदम चिन्ता म डाल दिया था। बोलने स पहले उसने एक ठण्डी सांस ली।

पर आपने अपना पता ठिकाना तो कुछ बताया ही नहीं है ।

पता ठिकाना !

रम्भा की जीभ हठात तालू स चिपक गई।

केदार ने चिंता विनिष्ट मुद्रा बनाकर पुन कहा— इसके अतिरिक्त एक जटिल समस्या भी है। जब हम लोग यहां आये थे तो मां से एक झूठ बोला गया था। जब उन्हें ज्ञात होगा कि तुम अकेली लौट रही हो तो तो ।

यह स्पष्ट है कि गुत्थी को जितनी भी सुलझाने की कोशिश की जा रही है वह उतनी ही उलझती चली जा रही है। निश्चय ही उसके एकाएक चले जाने के कारण विश्वास और ममता की मूर्ति माता के दिल पर गहरी ठेस पहुँचेगी। हो सकता है कि बेटे के प्रति उनकी आस्था और श्रद्धा डगमगा जाय। उसके निर्मल चरित्र पर आशंका प्रकट की जाए। यह किसी भी अवस्था म सहनीय नहीं है। इस प्रकार का विश्वासघात अनिष्ट कारक है—यंत्रणादायक है। उसके प्रभाव स सुरक्षित रहना प्राय कठिन है।

ओह ! आपने अपने आपको किस मुसीबत में डाल दिया है !

केदार भावावेश म धीरे से बोला। यद्यपि उसे अपने इस कथन पर आश्चर्य है।

कुछ देर के लिये कमरे म वे एक दूसरे के सामने प्रतिमा के सदृश

उस दिन जब बिन मौसम की जोर का आधी आई और सब जगह धूल ही धूल भर गई तो एक लम्बी स्त्री पुरुषों की हड़बड़ाती भीड़ को चीर कर फुर्ती से आगे बढ़ी। भगदड़ से प्लेटफार्म पर उसने दूर तक दृष्टि दौड़ाई और एक प्रकार से भागकर वह सामने खड़ा ट्रेन के थर्ड-क्लास के डिब्बे में प्रवेश कर गई। सुरक्षित स्थान पर बैठ कर उसने मुक्ति की ठन्डी सास ली और खिड़की में कुहनी टिका कर बाहर का दृश्य देखने लगी।

ऐ मेम साहब।

उसने आश्चर्य की मुद्रा बनाकर पुकारने वाले को किंचित निहारा।

ऐ मेम साहब। अब यहा से ट्रेन आगे नही जाएगी। —उसने सव्यंग मुस्कराते हुए कहा— आप गलत ट्रेन में बैठ गई है।

क्या ?'

जैसे यह क्या पसलियों में से सनसनाता हुआ निकल गया।

बादल के कुछ बेतरतीब टुकड़े आसमान की छाती को घेरने लगे। हवा के झोंकों में फुहारों की तरावट भर गई। आधी के पश्चात् वर्षा का आगमन। एक विचित्र सयोग।

उसने पास आकर कापती लड़की की बाह पकड़ कर थामा और उसे ताग में बैठाकर घर के लिये चल दिया। इस बीच ढेर सारी बरसात हो गई। दोनों भीग गये। हल्के हल्के शीत के प्रभाव से उनके बदन में कपकपी छूने लगी।

पुरुष सम्पर्क से बचती फिरती लड़की का आज प्रथम बार अनुभव

हुग्रा कि इस ग्रादमी से तो मानो उसका वर्षों का सम्बन्ध हैं। इससे कत-राना कैसा ! इससे छिपना कसा ! जहा कही भी वह जाती है, पहले से ही वह मुस्कराती हुई मुख छवि दृष्टिगत होती है। लगता है जसे उसकी प्रत्यक गति विधि ग्रतरात्मा म ग्रकित है। इस कारण स वह उसकी समस्त चेष्टाग्रो ग्रौर क्रियाग्रा से भली भाति ग्रवगत है। उसकी ग्रतरात्मा एक पारदर्शी दपण है जिसम प्रतिबिम्ब स्वत ही िखने लगता है।

परतु ग्राज की ग्रनुभूति ग्राकस्मिक है—ग्रप्रत्याशित है। ग्रपन इद गिद चिनी हुइ दीवार ग्रकस्मात् हा भरभरा कर ढह गई। उसने पहली बार ग्रपन ग्रन्तस म भाककर देखा—ग्रकेले पन के ग्रधकार म हाथ पाव पटकती हुई एक ग्रसहाय उदास ग्रौर नि सम्बल लडकी। ग्रनजान ही उसकी टीसती ग्रात्मा किसी वाछित पुरुष के कोमल स्पश के लिय तरस रही है। सउके फडकते हुए ग्रधर कि ही जलते होठो का उत्तेजक चुम्बन पा लेना चाहते हैं। प्रीति स्निग्ध कपोल गम गम श्वासो के प्रभाव से ग्रधिक कमनीय ग्रौर रक्ताभ हान के लिय व्याकुल है। ऐसी स्थिति म इस दबी हुइ इच्छा का ग्रकुर रोम राम म फूटने लगा। ग्रनान सुख की कल्पना स ही पलकें ग्रपन ग्राप मदने लगी। शक्ति सम्पन्न बाहा का घेरा विशाल छाती म सिमटती हुई देह-यष्ठि ग्रौर । एक विचित्र परिवतन।

सच है मन की भी ग्रपनी एव ग्रलग स्वतत्र सत्ता है। उसका ग्रपना पृथक विधान है, न्यायपालिका है काय प्रणाली है। उसम हाने वाले समय समय के परिवतनो पर किसी का ग्रधिकार नही। वे जीवन को नया मोड देते हैं इसम कोई ग्राश्चय नही। कई बार तो व्यक्ति सोचता कुछ है ग्रौर हो कुछ जाता है। प्राय मन के निर्देश को टालना सम्भव नही होता।

दोनो तेजी से कमरे की तरफ जाने लगे। केदार ने चलते चलते एक-दो बार बोलने के लिय होठ खोलन चाहे मगर वह काफी तेज चल रही है ग्रौर कुछ-कुछ हाफने सी लगी है।

ऊचे जूडे मे से पानी रिस रिस कर शेप शरीर पर फैल रहा है।

पडी। न जाने मन कसे कसे होने लगा!

भाग्य की इस विडम्बना पर उसे अचम्भा है—खेद भी है जिनके सम्बन्ध म आज तक कभी कल्पना मे भी नही सोचा है, उनके जीवन के सग अनायास ही बन्धुत्व और आत्मीयता की डोर से वह बध गइ है – जसे पतग के पीछे डोर! मोह का यह बन्धन तथा भावावेग का यह जाल क्या वह सरलता से काट सकेगी?

प्रश्न तो उसके अभ्यन्तर म घनी देर तक ध्वनित प्रतिध्वनित होता रहा।

जाने केदार कसे हो गये है । घर पर कम ही दिखाई पडते हैं। बाहर ही रहते हैं। आते है तो चुप चुप से लगते है। स्व केंद्रित, जैसे घर के सारे प्राणियो के प्रति उनके दिल मे कोई माह नही कोई ममता नही कोई लगाव नही। यदि रम्भा भी सामने पड जाए तो वह दूसरी ओर मुह फेर लेते हैं। भीतर बाहर से विच्छिन्न। हृदय पक्ष से नि मग। इस प्रकार का बधु-हीन भाव ता सवथा अचिननीय है—अनपेक्षित है।

रम्भा निवाक है—सभ्रम है। इस अप्रातिकर मौन का युक्ति सगत कारण उसकी समझ म नही आया। इस पर भी वह केदार की उपेक्षा की चिता किये बिना अपना काम ठीक ठीक करती रही। माजी के काम म हाथ बटाने से लेकर बेबी का सम्पूण भार भी अपने ऊपर ले लिया। वह बालिका स्कूल से आने के बाद एक प्रकार से उसे ही घेरे रहती है। पढने लिखने के अतिरिक्त खान सोन तक की वह उसकी साथिन है। उसकी भोली भाली और सीधी साधा बाता म उसे अपूव आनन्द मिलता है। उसका उचटा हुआ मन भी रम जाता है।

पता नही क्या कुछ दिना से उसकी तबीयत उखडी उखडी रहती है। सोचने लगती है ता देर तक सोचती चली जाती है। क्षितिज के कोने म एक छोटा-सा मेघ खण्ड उठता है और देखते देखते सम्पूण हृदयाकाश को परिवेष्ठित कर जाता है। बडी तेज बिजली चमकती है। अधड सारे अस्तित्व को धूमिल कर जाता है। वह सत्रस्त नेत्रो स चारा ओर देखती है। केवल काली छायायें गरजते मेघ और अतर विदारी तडित प्रकाप।

रात भर जगी रही है वह। इस पर भी ये पलकें लगना नहीं जानती। करवटें बदलती रही है वह! आखिर, वह किस दिशा की तरफ बढे—वह यह सोच नही पाती। किसी को भी पता नही है उसकी वास्तविक स्थिति का। सब जान जायगे, तब ? कितनी दूर तक आगे बढ गई है वह! इतनी दूर तक वह बढ आई है, इसका एहसास आज से पूर्व उसे कभी नहीं हुआ। अब तो लगता है कि वह किसी अज्ञात जाल में फस गई है। इसको काट पाना मुश्किल है। प्रयत्न में केवल तड़प रही है निरुपाय छटपटा रही है विवश! कैसे होगा उसका उद्धार? यही चिन्ता हर घडी उसे सताती रहती है।

पिछले कई दिनो से उसकी तबीयत कुछ ठीक नही रहती। खाना-पीना सब भूल गई है जैसे। एक अरुचि का शिकार हो गई है वह। भोजन वस्त्र और दैनिक कार्य-व्यापारो में तनिक मन नहीं लगता। लगता है, सब व्यर्थ है—निरर्थक है। कभी कभी तो अपनी छाया तक से अनजाने ही चौंक पडती है। एक विचित्र प्रकार का भय उसके प्राणो मे समा गया है। इससे परित्राण पाना अत्यन्त दुष्कर है।

आज सुबह से ही तबीयत कुछ भारी भारी सी हो रही है। सिर में दर्द—बदन में पीडा। आंखो में कितनी वेदना हो रही है आज। कुछ नही चाहिए उसे। जैसे जीवन का हर दाव हार कर एक कोने में बैठकर रोने को जी चाहता है। असीम क्षोभ और अटूट खीझ! लगता है, अग अग टूट रहा है।

'आज खाना नही खायेंगी क्या रम्भा?'

थोडी देर पहले माजी पूछ गई हैं।

'नहीं।'

वह नकारात्मक उत्तर देती है, जिसे सुनकर कुछ देर तक माजी चुप रहती हैं फिर चिंतित मुद्रा बनाकर उल्टे परो लौट जाती हैं। वे उसकी घुटन को क्या समझें?

आज दिन के मारे कार्यों से निवृत्त होकर माजी बरामदे में बैठी

किया—'बेचारे को जब से पता चला होगा उसके घर म चूल्हा भी नहीं जला होगा।

जलगा कस ! ' दूसरी पडोसन चटखारे लेकर बोली—"कलमुही ने सात जन्म का वर चुकाया है।'

पहली पडोसन को भी इस प्रसग म विशेष रस आने लगा। वह पीछे क्या रहती !

'आजकल की इन पढी लिखी छोकरियो की तो मति ही भ्रष्ट हो गई। अपने आगे ये किसी को कुछ नही समझती।

'अरे हा ! इनकी मर्जी के बगर अगर कही शादी तय करदो तो मुश्किल।'

'और मर्जी से शादी तय करो तो दहेज का झझट।'

"हा भई। कोई एक मुसीबत है, जो बयान करें।

'य पढी लिखी लडकिया तो एक तरह से जी का जजाल है।'

'कुछ न पूछो। बस स्कूल जाने के बहाने आखें लडाती फिरती है।

और आख लडी नहीं फिर बिना किसी प्रकार का आगा पीछा सोच अपने मन पसन्द प्रेमी के सग भाग जाती है।"

राम राम ! एसा सोचना भी पाप है।

माजी क मह से हठात विकल नि श्वास निकल पडी।

तुम सोचने की बात करती हो, पर वह चिडिया की तरह पख लगाकर उड गई।

पडोसन हस पडा।

उड गई भाग गई !'

'जी हा। मैं घर से भागी हुई हू !

रम्भा का क्षोम एक दम फट पडा। यद्यपि उस सूने कमरे म उसकी यह तीखी और क्रोध पूण कण्ठ ध्वनि सुनने के लिये कोई भी उपस्थित नही है तथापि उसके खीझ भरे मन का यह आक्रोश वगवती जल धारा की भाति एकाएक फूट पडा है।

क्या न भागू ! जब चारा ओर शत्रु ही शत्रु दृष्टिगत होते हैं, तो किसका धय चुक न जाए। जहा आत्म सम्मान पर निमम आघात हा, जहा सपना का बसन्त असामयिक पतझड के प्रभाव से शून्य हो जहा आशाओं क कमल खिलने से पूव मुरझा गये हा—वहा भला जीवित भी कसे रहा जाए ! इस प्रकार का शत्रुवत व्यवहार किसी भी अवस्था म सत्य नही है और वह उत्तेजित करन के लिये पर्याप्त है। प्रतिक्रिया स्वरूप यदि विद्रोह का स्वर मुखर हा जाए तो इसम आश्चय क्या !

' प्राय नई पीढी पर य गम्भीर आरोप लगाये जाते हैं कि वह अनुशासन हीन उच्छ खल अकमण्य तथा सहनशीलता रहित हैं। उनक हृदय म बडो के प्रति आदर बराबर वालो के प्रति मत्री भाव तथा छोटा के प्रति स्नेह का सवथा अभाव है। परतु समाज के उन कणधारो स कोई नहीं पूछता कि इसम दोष किसका है ? कौन है जो नई पीढी की राह म —उसकी जिदगी क प्रत्यक मोड पर—काटों के जाल बिछा रहे हैं। पग पग पर अग्नि परीक्षा ! कदम कदम पर लक्ष्मण रेखाओ का घेराव ! कहा शाप-ग्रस्त अहल्या की भाति शिलाखण्ड बनकर जड पडे हैं ! कहा द्रोपदी की भाति चीर हरण क अपमान की यत्रणा से पीडित हैं। क्या है यह

सब ? ओह ! आज उनकी सकीर्ण मनोवृत्ति, अविवेकी हृदय तथा रूढि-वादी बुद्धि बेचारी नई पौद की आकाक्षाओं की होली जलाती आ रही है !"

धीरे धीरे रम्भा अतमुखी होकर विचारो की झझा मे बह गई।

" लो, बाबूजी और मा चाहते हैं कि मैं एक एसे अनजान और एक अपरिचित विधुर के साथ विवाह कर लू जो सौभाग्य से एक बच्ची के पिता भी हैं। यद्यपि उनकी अवस्था थोडी अधिक है तथापि परिवार प्रतिष्ठित है। मासिक आय सतोष जनक है। दहेज का झझट बिल्कुल नहीं है। बस, उनकी योग्यता और सुपात्रता के लिये इतना ही पर्याप्त है। मुझे कोई आपत्ति है या नही, इस सम्बन्ध मे पूछने की उन्होने कोई आवश्यकता नही समझी इस विषय मे मेरे क्या विचार हैं, वे सुनने के लिये कदापि तयार नही हैं। असदिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि उन की दृष्टि मे मेरी पसन्द-नापसन्द और मेरी खुशी-नाखुशी की कोई कीमत नही—कोई अर्थ नही। क्या मैं सवथा मूल्यहीन प्राणी हू ? क्या मेरी कोई हस्ती नही ? अपनी ओर से कुछ करने की स्थिति में क्या मैं नही हू ? क्या परिवार के सारे लोग मुझे एक पिटी हुई लकीर पर ले जाना चाहते हैं ? क्यो नही मेरे व्यक्तित्व को स्वीकार किया जाता "

रम्भा एकाएक उलझन और उद्विग्नता के एक विराट रेगिस्तान मे भटकती है, जहा धूल भरी आधी के अतिरिक्त कुछ भी नही हैं।

' भावनाओ का ऐसा कटु तिरस्कार भला कौन सहन करे ! वास्तव मे मेरे व्यक्तित्व मे एक प्रकार की तीक्ष्णता है—तडप है। मैं कुछ कर गुजरना चाहती हू। अपने पथ का निर्माण मैं स्वय करना चाहती हू। लेकिन घर वाले तो मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरे परो मे बेडिया डाल देना चाहते हैं। इस पर मेरा विद्रोही मन चीख पडे तो इसमे अचम्भा कैसा ! यह प्रतिक्रिया स्वाभाविक है—सगत है।

' जब यह विरोध का स्वर मा के कानो मे पडा तो वे बरसाती नदी की भाति उफन पडी जसे प्रलय होने जा रहा है। वे रोष मे मर्यादा

का भी अतिक्रमण कर गई और मुंह में जो आया, वे उल्टा सीधा बकती चली गईं। परन्तु अब बेटियां एक कोने में बैठ कर आंसू बहाने के लिये ही केवल विवश नहीं हैं। वह युग बीत चुका। वे आत्म सम्मान की रक्षा करना भी जानती हैं। प्रत्येक अन्याय का प्रतिकार करना भी उन्हें आता है और "

बेटी रम्भा! मैं थोड़ी देर के लिये पड़ोस में बाहर जा रही हूं, जरा ख्याल रखना।"

कमरे में प्रवेश करते हुए माजी ने कहा।

मैं शीघ्र ही लौट आऊंगी।

विचारों की वह वेगवती धारा मानो एक कठोर चट्टान से टकरा कर अकस्मात् छिन्न भिन्न हो गई। अब तो रम्भा का तमतमाया हुआ चेहरा किंचित शिथिल और क्लान्त प्रतीत हो रहा है। लग ऐसा रहा है कि तलैया का उफनता जल पुनः सामान्य होने जा रहा है वेगहीन आवेगहीन।

रम्भा ने झुकी हुई दृष्टि ऊपर उठाई। वह गर्दन हिलाकर आहिस्ता से बोली— जी, अच्छा।

माजी चली गईं। रम्भा टकटकी लगाकर उनकी पीठ को तकती रही। अचानक उसके अन्तस में एक आंधी का अकल्पित झोंका उमड़ आया। वह वक्र मुस्कान लेकर विरक्ति एवं घृणा के स्वर में बड़बड़ाई— विधुर पुरुष! हुंह! विचित्र विडम्बना है प्रत्येक पुरुष चाहता है कि उसकी पत्नी के रूप में स्त्री अपना अक्षत कौमार्य को लेकर ही आये इसके विपरीत वह स्वयं क्या अपने ब्रह्मचर्य का पालन करता है?"

रम्भा क्रोध में बड़बड़ाती हुई उठी और शीघ्र ही कन्हार के कमरे में चली गई जहां उसके अस्त व्यस्त पड़े सामान को सुव्यवस्थित करने में प्रयत्नशील हो गई किन्तु आभ्यन्तरिक अवस्था इतनी अशान्त है—इतनी विक्षुब्ध है कि कुछ करते बनता ही नहीं।

हठात एक मेज के समीप आकर रम्भा रुक गई। उसका ध्यान एक तस्वीर की ओर आकृष्ट हुआ। बेबी को बाहों की गोदी म थामे केदार को उसने भली भांति पहचान लिया। बच्ची की अवस्था उस समय लगभग तीन चार वर्ष की है। इससे अधिक लगती नहीं।

केदार के पार्श्व म खडी तीखे नाक नक्श वाली युवती को देखकर वह तनिक सोच म पड गई।

"कौन हो सकती है ?"

तभी उसके अधरों पर टेढी मुस्कान की एक चचल मछली कलाबाजी खा गई।

'पगली कहीं की ! क्या यह साधारण सी बात भी समझ म न आ सकी। खेद है निश्चय ही य बेबी की मा है—मा !

इस बीच समस्त अवसाद और कटुता को वह भूलकर एक बार अपनी मूर्खता पर विद्रूप भरी हंसी हस पडी।

यद्यपि आश्चर्य तो इस बात का है कि इतने दिनों तक वह इस कमरे म आती रही फिर भी उसकी दृष्टि इस तस्वीर पर नहीं पडी।

बुद्धू कहीं की !

पुन उसकी दत-पक्ति मौन हंसी के आवेग म चमक उठी।

अब तस्वीर अपने हाथ म लेकर वह ध्यानपूर्वक देखने लगी। बनारसी साडी म लिपटी उस युवती का प्रभावशाली व्यक्तित्व उल्लास एव सौजन्य की अत्यन्त कमनीय मूर्ति नान हो रहा है। उसके बडे बडे नयनों म सौन्दर्य-स्वप्न अजन लगा रहे हैं। उसका गोल मुख मण्डल

एक रंगीन प्रभा से आलोकित है। निश्चय ही उसके अधरों पर सलज्ज वाली मधुर मुस्कान चित्ताकर्षक है।

पता नहीं किस अज्ञात भावना से प्रेरित हो वह दर्पण के सामने खड़ी हो गई। उस युवती की तस्वीर के साथ अपनी तुलना करने का वह लोभ एकाएक संवरण नहीं कर सकी। वह स्तब्ध रह गई। वास्तव में वह तस्वीर वाली महिला सुन्दरता में उससे किसी भी प्रकार कम नहीं है। उसके हृदय में ईर्ष्या का अंकुर फूटा और द्वेषवश मन में झुंझला गई। किन्तु प्रत्यक्ष में उसने यही कहा— रंग अवश्य सांवला होगा जब कि !

रम्भा ने तस्वीर यथास्थान रख दी। अब तो मन के अन्तराल में एक ही बात परिक्रमा कर रही है—सांवला रंग !

सांवला रंग मनोरमा ! सुषमा चपलता और मधुरता का मूर्तिमान स्वरूप। क्षण भर के लिये अपनी इस सहेली को स्मरण करके वह किसी आनन्द पूर्ण अतीत में डूब गई।

मनोरमा कालेज की संगीत मंडली की प्राण। इधर मयूर नृत्य को देखते देखते दर्शक गण ऊब गये। सूक्ष्म भावनाओं के सूक्ष्म प्रकटीकरण का अद्भुत दृश्य उन्हें बिल्कुल नहीं भाया। वास्तव में वे इस प्रतिभा सम्पन्न कलाकार की कला प्रदर्शन को समझ न सके। शीघ्र ही सभी निराश हो गये। इस बीच मनोरमा के मधुर गायन की प्रबल मांग हुई। वह भी गर्व स्फीत से इठलाती और मटकती हुई आल्हाद की मूर्ति बनी मंच पर आ उपस्थित हुई। इन अवसरों पर वह विशेषकर चुस्त और तंग वस्त्र पहनकर आती है ताकि वह सब की आंखों में चुभती रहे। कुछ मन चले दर्शक तो उसके मंच पर आने के बाद ही ताली बजाना आरम्भ कर देते हैं। उनका यह स्नेह प्रदर्शन और कृपा कटाक्ष उसे विचित्र सी प्रसन्नता से विभोर कर जाते हैं। वह अभिमान से भरा भरी उनका अभिवादन स्वीकार करती है।

यह स्पष्ट है कि उसकी यह अदा हृदयों को मुग्ध कर जाती है।

उस समय वह उन्हें रति का साक्षात् अवतार प्रतीत होती है, जो नेत्र धारों से प्रहार कर के सभी को आहत कर जाती है। उसका कौमार्य सौंदर्य के अदभुत स्वप्न ले रहा है। उसकी वाणी म एक प्रकम्पन है गति म उल्लास जनित चचलता है और हाव भाव म है एक हृदय स्पर्शी कटाक्ष। जल धारा मे जैसे एक के पश्चात् एक लहर उठती है, ठीक उसी प्रकार मनोरमा के स्वर का आरोह अवरोह सबको मौन मुग्ध बनाये हुए है—इसम कोई सदेह नही है।

उस दिन रम्भा मनोरमा के इस रूप को देखकर मोहित हो गई। सहसा उसे अपनी सहेली पर गव होने लगा। अब तो वह सोच रही है कि इस स्नेहमयी बाला के तन पर गुलाबी छीट का सूट खूब फब रहा है। शरीर का सावला रग गुलाबी रग के साथ एक विलक्षण कान्ति का दृश्य उपस्थित कर रहा है। उसकी सवरी हुई केश राशि इसमे कपोलो पर बिखरी हुई कुछ लटें उन्नत ललाट, उस पर लगी हुई एक अति सूक्ष्म बिंदी सौंदयाकाश मे शशि के समान मनमोहक छटा उत्पन्न कर रही है। ललाट के नीचे मृग नयना की शोभा और उनके बीच म शुक नासिका, आस-पास सलोने कपाल फिर पतल पतले अधर, उनके बीच म दाडिम के सदृश्य दन्तावली और उससे भी नीचे ठोडी का सुघडता मानो मुस्कान की स्थिति म कपोलो म पडे हुए सुदर गड्ढो को चुनौती दे रहे हो। कला की साधना और स्नेह के वातावरण म पला हुआ मनोरमा का शरीर एक सूक्ष्म गठन एव सयम का परिचय दे रहा है। उसकी लम्बी लम्बी उगलियां इस बात का प्रतीक हैं कि वह पढने-लिखने के अतिरिक्त सिलाई कढाई बुनाई और अन्य गृह-कार्यों म अत्यन्त निपुण है। नाखूनो पर लगी नेल-पालिश बडी स्वाभाविक जान हो रही है। आज विशेष अवसर होने के कारण उसने पावडर रूज नवेण्डर और लिपिस्टिक का भी पूरा उपयोग किया है। अत उसका सावला चेहरा आज अधिक निखरा हुआ कमनीय विदित हो रहा है। उसके सण्डल सज्जित चरण एक चचल गति के केन्द्र हैं।

एक रंगीन प्रभा से आलोकित है। निश्चय ही उसके अधरों पर खेलने वाली मधुर मुस्कान चित्ताकर्षक है।

पता नहीं किस अज्ञात भावना से प्रेरित हो वह दर्पण के सामने खड़ी हो गई। उस युवती की तस्वीर के साथ अपनी तुलना करने का वह लोभ एकाएक संवरण नहीं कर सकी। वह स्तब्ध रह गई। वास्तव में वह तस्वीर वाली महिला सुन्दरता में उससे किसी भी प्रकार कम नहीं है। उसके हृदय में ईर्ष्या का अंकुर फूटा और द्वेषवश मन में झुंझला गई। किंतु प्रत्यक्ष में उसने यही कहा—'रंग अवश्य सांवला होगा जब कि ।'

रम्भा ने तस्वीर यथास्थान रख दी। अब तो मन के अन्तराल में एक ही बात परिक्रमा कर रही है—सांवला रंग!

सांवला रंग-मनोरमा! सुषमा चपलता और मधुरता की मूर्तिमान स्वरूप। क्षण भर के लिये अपनी इस सहेली को स्मरण करके वह किसी आनन्द पूर्ण अतीत में डूब गई।

मनोरमा कालेज की संगीत मंडली की प्राण। इधर मयूर नृत्य को देखते देखते दर्शक गण ऊब गये। इसमें भावनाओं के सूक्ष्म प्रकटीकरण का अद्भुत दृश्य उन्हें बिल्कुल नहीं भाया। वास्तव में वे इस प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार की कला प्रदर्शन को समझ न सके। शीघ्र ही सभी निराश हो गये। इस बीच मनोरमा के मधुर गायन की प्रबल मांग हुई। वह भी गर्व स्फीत से इठलाती और मटकती हुई आल्हाद की मूर्ति बनी मंच पर आ उपस्थित हुई। इन अवसरों पर वह विशेषकर चुस्त और तंग वस्त्र पहनकर आती है ताकि वह सब की आंखों में चुभती रहे। कुछ मन चले दर्शक तो उसके मंच पर आने के बाद ही ताली बजाना आरम्भ कर देते हैं। उनका यह स्नेह प्रदर्शन और कृपा कटाक्ष उसे विचित्र सी प्रसन्नता से विभोर कर जाते हैं। वह अभिमान से भरी भरी उनका अभिवादन स्वीकार करती है।

यह स्पष्ट है कि उसकी यह अदा दर्शकों को मुग्ध कर जाती है।

उस समय वह उन्हें रति का साक्षात् अवतार प्रतीत होती है, जो नेत्र द्वारा से प्रहार कर के सभी को आहत कर जाती है। उसका कौमार्य सौंदर्य के अद्भुत स्वप्न ले रहा है। उसकी वाणी में एक प्रकम्पन है गति में उल्लास जनित चंचलता है और हाव भाव में है एक हृदय स्पर्शी कटाक्ष। जल धारा में जैसे एक के पश्चात् एक लहर उठती है, ठीक उसी प्रकार मनोरमा के स्वर का आरोह अवरोह सबको मौन मुग्ध बनाये हुए है—इसमें कोई संदेह नहीं है।

उस दिन रम्भा मनोरमा के इस रूप को देखकर मोहित हो गई। सहसा उसे अपनी सहेली पर गर्व होने लगा। अब वो यह सोच रही है कि इस स्नेहमयी बाला के तन पर गुलाबी छींट का सूट खूब फब रहा है। शरीर का सांवला रंग गुलाबी रंग के साथ एक विलक्षण कान्ति का दृश्य उपस्थित कर रहा है। उसकी संवरी हुई केश राशि, इसमें से कपोलों पर बिखरी हुई कुछ लटें उन्नत ललाट उस पर लगी हुई एक अति सूक्ष्म बिंदी सौंदर्याकाश में शशि के समान मनमोहक छटा उत्पन्न कर रही है। ललाट के नीचे मृग-नयनों की शोभा और उनके बीच में शुक नासिका आस पास सलोने कपोल, फिर पतले पतले अधर उनके बीच में दाड़िम के सदृश्य दन्तावली और उससे भी नीचे ठोडी की सुघड़ता मानो मुस्कान की स्थिति में कपोलों में पड़े हुए सुन्दर गड्ढों को चुनौती दे रहे हों। कला की साधना और स्नेह के वातावरण में पला हुआ मनोरमा का शरीर एक सूक्ष्म गठन एवं संयम का परिचय दे रहा है। उसकी लम्बी लम्बी उंगलियां इस बात का प्रतीक हैं कि वह पत्र लिखने के अतिरिक्त सिलाई कढ़ाई बुनाई और अन्य गृह-कार्यों में अत्यन्त निपुण है। नाखूनों पर लगी नेल-पालिश बड़ी स्वाभाविक प्रतीत हो रही है। आज विशेष अवसर होने के कारण उसने पाउडर स्नो लवेण्डर और लिपिस्टिक का भी पूरा उपयोग किया है। अतः उसका सांवला चेहरा आज अधिक निखरा हुआ कमनीय दिखाई हो रहा है। उसके सैण्डल सज्जित चरण एक चंचल गति के द्योतक हैं।

रम्भा बहुत देर तक उस सौंदर्य धारा में डूबती उतरती रही—मन ही मन छवि की भीनी भीनी गंध लेती रही। वह ऐसी ही अवस्था में न जाने कब तक रहती, किन्तु इस बीच एक दूसरी सहेली ने उसकी तन्द्रा भंग कर दी। उसने झकझोरते हुए कहा—'कहां खो रही हो?

हैं ।'

रम्भा जैसे सोते से जाग गई। वह अपनी इस छिपी हुई चोरी के पकड़ जाने से कुछ-कुछ लज्जित भी है।

'कार्यक्रम कभी का समाप्त हो चुका। वह चहकी— और आप हैं जो बड़े आराम से नींद ले रही हैं।'

रम्भा अपने लज्जा के भाव को छिपाने का प्रयास करते हुए बोली—'ऐसी तो कोई बात नहीं है।'

'ऐसी तो कोई बात नहीं है हुंम!'

उसकी सहेली ने मुंह चिढाया।

'चल!'

एकान्त पाकर तो रम्भा ने मनोरमा को हार्दिक बधाई देकर गले लगाया। शरारत की मुद्रा में उस ने सखी के रक्ताभ कपोल और अधर चूम लिये।

मनोरमा छिटक कर दूर खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर एक भाव आ रहा है और दूसरा जा रहा है वह एक शर्मीली मुस्कान लेकर बोली—'बड़ी दुष्ट हो रम्भा!'

'दुष्ट!'

रम्भा का वह नटखट भाव हठात् मुखर हो गया।

'अरी मेरी प्यारी सखी! आज तो मुझे अपनी लड़की होने पर बेहद दुःख है।'

'भला वो कैसे?' मनोरमा ने बड़े भोलेपन से आंखों में जिज्ञासा के भाव लेकर पूछा।

भाव विभोर भंगिमा बनाकर रम्भा कहने लगी—'यदि आज मैं

लड़का होती तो तुझे कहीं ऐसे स्थान पर भगाकर ले जाती जहां ।'

'हिः ऐसा नहीं कहते।' मनोरमा ने चंचल चितवन से कटाक्ष करते हुए उसको टोका।

'ऐ हैं ऐ ह बस, तेरी इस अदा पर तो हम मरते हैं ।'

'अरी अम्म की बच्ची, चुप भी रह।' तनिक रोष प्रदर्शन का अभिनय करते हुए मनोरमा बोली—'अभी मां आ गई तो लैला मजनू की यह नौटंकी खत्म हो जाएगी ।'

'अरे चाची जी इधर ही आ रही है।'

और दोनों खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

एक गोरी—एक सावरी !

एक चन्दा—एक चकोरी !

एक मेघ—एक बिजली !

कालेज म भी कई ऐसे शरारती छात्र व छात्रायें होते हैं जो इस प्रकार के नामकरण करने म बडे चतुर होते हैं। उनकी उल्टी खोपडी म ऐसे शब्दों का न जाने कैसे आविष्कार होता है जिन्हें सुनकर हसी आती है और क्रोध भी। यदि भ्रू भग करते हुए उनके समक्ष कभी विरोध प्रकट किया जाए तो वे ढीठ हसकर टाल जाते हैं। कुछ कहने सुनने का उन पर कोई प्रभाव ही नहीं पडता। प्रतिक्रिया स्वरूप वे परिहास म अधिक चिल्लाते हैं—खिल्ली उडाते है।

परन्तु इसका एक सुपरिणाम निकला। दोनो सहेलियां एक दूसरे के अधिक निकट आ गई। दोनो हृदय खोलकर परस्पर बातचीत करतीं। उनके मध्य किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं कपट नहीं दुराव नहीं। सारी दूरियां नजदीकियों म परिणत हो गईं।

कालेज जाती तो साथ साथ और लौट कर आती तो साथ साथ। लगता है जैसे दो हसनियां जोडा बनाकर उड रही हैं। उनका एक ही पथ है एक ही उद्देश्य है एक ही मजिल है।

एक दिन मनोरमा के अकारण मुस्कराने को लक्ष्य करके रम्भा ने कहा—"क्या बात है मनो, आजकल खिली खिली सी रहती है। सावला चेहरा नमकीन हो गया है ।

एकाएक मनोरमा ठीक ठीक समझ न सकी। यह व्यग है अथवा

परिहास। प्राय रम्भा उसे छेडने की नीयत से इस प्रकार की उक्तिया कहा करती है।

कुछ देर तक मनोरमा इधर उधर की बातें करके टालती रही। यद्यपि शीघ्र ही वह मूल विषय पर आगई। उसने झिझकते हुए कहा—'मेरी शादी निश्चित हो गई है।"

इसके साथ उसके मुख पर उषा की सलज्ज लाली उतर आई।

अरे, कब कहा कस ?'

रम्भा की आखें विस्मय स फल गई।

कुछ क्षणा के पश्चात् वह चिहुक उठी—'हम कुछ पता नही और अन्दर ही अन्दर यह गुपचप कारस्तानी।

मनोरमा बुरी तरह झप गई।

आज रम्भा ने प्रथम बार अनुभव किया कि आन्तरिक प्रसन्नता से सुन्दरता का कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है। सावरे चेहरे की पुलक आखो की चमक के साथ घुल मिलकर एक रागात्मक छवि उत्पन्न कर रही है। वह ही ता है जो उसे आकपण के जादू से बाधे हुए हैं। कुवारे सपना से भरी भरी ये मोनी मोटी आख ! उस क्षण वह बस, उसे मुग्ध होकर दखती रही।

उसन बडी बेचनी से पूछा—' मनो ! बता तो सही, वह सौभाग्य शाली पुरुष कौन है ?'

ओह ! तुम बडी वमी हो रम्भा !' निमिष भर मे ही अपूव हर्षोल्लास का गुलाबी रग मनोरमा की सम्पूण मुद्रा मे अभिव्यक्त हो गया।

बता कसी हू ?'

अपनी तीव्र उत्कण्ठा को दबाकर रम्भा ने उसके गाल पर चिकुटी काटी।

'ऊ ई ई ई !

मनोरमा नाटकीय भगिमा म चीख पडी। अब अपनी सखी की ओर वडी वडी आखा म कृत्रिम काध का भाव लेकर बोली-- मान जाओ रम्भा !

ता वता कौन है वह चितचार जा हमारी प्यारी सखी—दुलारी सल्ली की रानो की नींद चुराकर ले गया है ।

अरे ठहर। बताती हू अभी तुझे ।

मनोरमा हम पडी। असल म, रम्भा उसकी वगल म उगली गडाकर गिलगिली करने लगी है। इस कारण से उसका सम्पूण शरीर अस्थिर होकर थिरकन लगा है।

हा वता। कौन हैं वे ?

अपने मन क आवग पर अस्वाभाविक नियत्रण करके मनोरमा ने सयत कण्ठ स उत्तर दिया— वे जयपुर वाल जीजा जी हैं न वे !

और उसने लज्जा क अतिरेक म अपना मुख दोनो हथेलिया से ढक लिया।

क्या ?

लगा मानो वजती हुई सितार का तार किसी आकस्मिक आघात से टूट गया हो। रम्भा असामान्य रूप से गम्भीर हो गई।

स्वर्गीय शान्ति जीजी क पति । शून्य म दृष्टि गडाकर वह अस्फुट स्वर म बोली।

हा !'

हथलिया की ओट स मनोरमा का उल्लसित स्वर हठात् फूट पडा।

दा दिन के पश्चात मनोरमा की रम्भा से पुन भेंट हुई। पहली ही दृष्टि म देखकर वह भला भाति समझ गई कि उसकी सहली आज असाधारण ढग से गम्भीर है। लगता है, जस यह शान्ति—यह मौन किसी भयान तूफान की सुस्पष्ट अग्रिम सूचना दे रह हैं। उसका चिंतित होना स्वाभाविक है। उसने सकोच-पूवक पूछ लिया— क्या बात है

रम्भा ?"

इस पर रम्भा ने अपना मुह दूसरी दिशा मे फेर लिया। स्पष्ट है कि किसी बात पर वह मनोरमा से रुष्ट है। बहुत सोचने के उपरान्त भी उसे उचित कारण समझ म नही आया। अत उसने क्षुण्ण कण्ठ से पुन पूछा— 'क्या बात है रम्भा !"

तनिक ठहर कर झिझकते हुए धीरे से उसने कहा—"मेरे द्वारा ऐसा क्या अन्याय हो गया है जो तू बात करना भी पसन्द नही करती ?"

"अन्याय !"

दीप शिखा की भांति रम्भा सहमा जल उठी। वह कठोर स्वर म गर्जना करने लगी— 'अपनी से दूनी आयु के प्रौढ व्यक्ति के साथ शादी करते हुए तुझे कोई अन्याय नात नही हो रहा है ?"

'हूँ ।"

मनोरमा को एक धक्का सा लगा। उसे स्वप्न मे भी आशा नही थी कि रम्भा उसकी शादी को लेकर इस प्रकार का कडा रुख अख्तियार करेगी। ऐसे व्यवहार की उस कल्पना म भी सम्भावना न थी। उसने डूबते हुए स्वर मे पूछा— मुझ स कोई अनजाने म भूल हो गई है क्या ?'

'हुम् !' रम्भा के होठों पर व्यग्यात्मक मुस्कान खल गई—"भूल की भी तुमने अच्छी पूछी ।'

धीरे धीरे रम्भा की वाणी अत्यन्त तीक्ष्ण हो गई।

' जीजाजी ! हुम् !" इस पर दो बच्चा के बाप। खिचडी हुए बाल। अवस्था प्रौढ। मगर नई नवेली ब्याह कर लाने की तीव्र लालसा। वाह ! यदि बडी बहिन का दुर्भाग्य स स्वर्गवास हो गया है तो छोटी जवान साली पर उनका परम्परागत और न्याय-सगत अधिकार है जिस किसी भी रूप म चुनौती नहीं दी जा सकती। वाह खूब ।"

मनोरमा ज्यों-ज्यो सुनती गई, त्यो-त्यों उसके हृदय रूपी गगन म

निराशा के मेघ छाने लगे। देखते देखते वे गहरे हो गये। अब तो यह जान कर उसका दिल अज्ञात उद्वेग से तड़प उठा।

हुम्" ! बलिहारी है तुम्हारे समाज और तुम्हारे विवेक की, जो उजाले से अंधकार की ओर जाने के लिये विवश करती है।"

मनोरमा के मुख पर कालिख सी पुत गई। उसने भर्राये कण्ठ से कहा— मैंने अपने मन को अच्छी तरह से टटोलकर देख लिया है। उनके प्रति मेरे मन में किसी भी प्रकार की घृणा एवं विरक्ति का भाव नहीं है। इसके अतिरिक्त शांति जीजी के बच्चों के लिये मेरे हृदय में अगाध स्नेह है—अनुरक्ती है।

बस, जीवन का इतना बड़ा निर्णय करने के लिये यही सब आवश्यक है ?"

पूछकर रम्भा ने मनोरमा की आंखों में झांका।

इस बीच उसकी आंखों में आंसू तैर गये।'

'हां। इन सब से ऊपर एक बात और भी है। उसने स्पष्ट किया— मेरे घर के लोगों का विचार है कि यदि मैं शांति जीजी का स्थान ग्रहण कर लेती हूं तो दोनों परिवारों का सम्बन्ध कदापि विच्छेद नहीं होगा और शान्ति जीजी के बच्चों की परवरिश भी ठीक प्रकार से हो सकेगी। मैं इसमें कुछ भी अनुचित नहीं लगती।

यह बकवास है। रम्भा की भृकुटियों में वक्रता घनी हो गई— 'यह अपरिपक्व मन का केवल मात्र तर्क है। इसमें कोई सार नहीं। तुम कायर हो स्वार्थी हो डरपोक हो"।

'नहीं नहीं ऐसा मत कहो।

मनोरमा एकदम टूट गई।

अब तो उसकी कातर आंखों से अविरल अश्रु धारा झड़ने लगी। उनमें थाह ना विवशता जनित दारुण चाचल्य दिखाई दिया। फिर वह रम्भा पर एकाएक इस प्रकार गिरी जैसे कोई निराधार मूर्ति गिर रही है। उसके तन में मनोरमा की दोनों भुजायें आकर लिपट गईं। तब

क्ा जाकर वह अश्रु रुद्ध कण्ठ से बोली — रम्भा ! मेरी स्थिति स म भने की कोशिश क रो।"

अगल क्षण रम्भा हृदयहीन सी बनकर उससे छिटक कर दूर खडी हो गई। उसने कर्कश कण्ठ से कहा— यह सब नाटक है।'

और पीठ मोडकर रम्भा वहा से चल दी अपनी प्रिय सखी मनोरमा को अकेली रोती छोडकर।

से तुम्हें बुलाने के लिए कहा गया है और मैं चला आया। अब तुम जैसा कहोगी, मैं वहां जाकर कह दूंगा ।"

इस पर रम्भा हँस पड़ी।

'मेरे छोटे भइया, मनोरमा से कहना कि मेरा जी अच्छा नहीं है। अब मेरे सिर में दर्द भी उठने लगा है समझे ।"

'अच्छा जी।'

वह जैसे आया था—वैसे ही चला गया। मनोरमा का यह छोटा भाई—देवू—बड़ा भोला और सीधा है। बस वह लौटकर रम्भा के शब्दों को दोहरा देगा— रम्भा जीज्जी कह रही थी कि ।'

इसके पश्चात रम्भा उस सूने घर में अकेली इधर उधर निरुद्देश्य घूमती रही। परिवार के सारे व्यक्ति प्रीति भोज में सम्मिलित होने मनोरमा के घर गए हैं।

रम्भा कभी आंगन में आ जाती है तो कभी ऊपर छत पर नजर आती है। प्रीति भोज का सम्पूर्ण प्रबन्ध भी वहां छत पर किया गया है अतः सबका उठना बैठना और खाना पीना भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। कतारें बैठती हैं। पत्तलें बिछती हैं। भोजन परोसा जा रहा है। दावत उड़ रही है। कहीं लड्डू की प्रबल मांग हो रही है तो कहीं जलेबी और पूरियों के लिए भी शोर हो रहा है। रायता और सब्जी की पूछ कम नहीं है। सचमुच यह दृश्य भी अपने आप में अनोखा है। दूर बैठी रम्भा का हठी मन भी ललचा रहा है। इस खुशी के मौके पर उसका यह असहयोग अविनय तथा अवज्ञा का भाव सर्वथा असंगत एवं अनुचित है यद्यपि

प्रातःकाल से ही वाद्य वृन्द के विभिन्न प्रकार के गीतों से वातावरण मधुर बना हुआ है। मुहूर्त के निकट आते ही वर वधू विवाह वेदिका पर लाये गये। मांगलिक गीतों की बहार छा गई। अब फेरों की रस्म पूरी की जा रही है—यह स्त्रियों के सहगान से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है।

रम्भा अनमनी सी यह सब सुनती रही। मनोरमा के फेरे देखने की

बार आखें पोछकर आगे बढना और फिर हिचकियों की बाढ़। एक बार पुन मा न अपनी बेटी को रोते हुए चिपटा लिया।

परन्तु यह सब क्रन्दन और भाव भीनी बिदाई का दृश्य एकदम बेशर्मी म बदल गया जब बैंड वाला ने निममता पूवक बिदाई की अतिम धुन बजाई। बस वह स्वप्न हठात भग हो गया पता नहीं कैसे रम्भा एका एक व्याकुल स्वर मे रोदन करने लगी। भीतर म एक टीस सी उठी और वह उसकी भावनाओ को अशान्त एव अस्थिर कर गई। उसका क्रूर मन विगलित होकर सिमकने लगा। क्षण भर म ही वह अपना मान तथा अभिमान का परित्याग करके अपनी सहेली से मिलन के लिए दौड पडी।

परन्तु सब व्यथ! जब तक हाफती हुई वह द्वार पर पहुची, उसस पहले ही बारात विदा होकर रवाना हो चुकी थी। बस, वहा तो परिवार के अधिकाश व्यक्ति और सम्बन्धी विवाह के निर्विघ्न सम्पन्न होने के कारण बडी तप्ति एव सतोष प्रकट कर रहे हैं।

लौट कर रम्भा कटे पख की भाति अपने पलग पर गिर पडी। अत्यन्त दुखी मन स रुद्ध कण्ठ म अपन आपको कोसने लगी—'मैं भी कैसी मूख हू जो अनावश्यक हठ कर बैठी। बेचारी को अकारण ही कितना सताया है मैंने ओह! मैं नाच हूँ निर्दयी हू मैं मैं घमण्डी हू। वह मुझे कभी क्षमा नहीं करगी।

प्राय परिवार क सभी लोग रम्भा की इस व्यवहार शून्यता व प्रति रुष्ट हैं—अप्रसन्न है। तीव्र शब्दो म उसके इस अकुशल अभद्र तथा अशिष्ट व्यवहार की भर्त्सना करते हैं। उसकी सहेलियो ने तो उस मुक्त कण्ठ स भावनाहीन कठोर पाषाण खण्ड ही घोषित कर दिया। यह प्रति क्रिया स्वाभाविक है। परिणाम-स्वरूप उसने अनपेक्षित रूप से चुप्पी साध ली जिसके अन्तराल म केवल परिताप दुख और उद्वेग क अतिरिक्त कुछ भी नही है।

कुछ दिनो क लिय वह अपनी ही परिधि म घिर कर रह गई। एक प्रकार स असहाय—परवश। बस उस एकान्त प्रिय लगता। कभी कभी वह इसस घबरा उठती। भीतर ही भीतर यह एकान्तता उसे काटने दौडती।'

मन क उचटन क प्रतिफल वह उस किन्ही अजाने अनजाने स्मतियो क प्रकम्प म छोड दती जहा वह निष्प्रयोजन भटकता रहता। अपनी प्रिय सखी मनोरमा क सग बिताय क्षण व कितन अविस्मरणीय हैं हृदय पटल पर स्थायी रूप स अकित है। कुछ दर तक वह इन स्मतियो क सागर म गोता लगाकर मन को बहलाने की चष्टा करती रही। अब तो उस इस बात का बडा मलाल है कि मुसराल जान बक वह मनोरमा स भट न कर सकी। बार-बार दुबुद्धि से ग्रस्त अपन इस हठ पर उस आक्रोश उत्पन्न होता है। इस प्रसग क स्मरण मात्र स हा उसकी आग बरस पडती।

इसक अतिरिक्त सुना है कि मनोरमा को भी घर छोडत समय अपार दुख हुआ था। वह रो पडी थी। उन सबके मूल हैं उसका अनुदार

असामाजिक अमर्यादित और अनुत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार। इसके लिए वह अपने आपको जीवन मे कभी क्षमा नही करेगी।

निःसंदेह अपने प्रिय के दूर रहने पर उससे मिलने की उत्कंठा अत्यन्त तीव्र होती है। प्रत्येक क्षण उससे बिछुडने का कातर भाव प्रखरता के साथ सताता है। मन उडकर उसके पास पहुच जाने के लिए मचल उठता है। लेकिन सब वृथा है। यह कदापि सम्भव नही होता। इस पर अपनी विवशता का एहसास होता है। सचमुच मनुष्य कितना निरुपाय है—अशक्त है। इसके विपरीत परिस्थितिया कैसी प्रबल हैं—कैसी विषम हैं!

प्रतीक्षा!

एक छोटे-से पत्र की प्रतीक्षा!

एक छोटी सी मुलाकात की प्रतीक्षा!

अपने प्रिय की एक झलकी देखने की प्रतीक्षा!

प्रतीक्षा प्रतीक्षा प्रतीक्षा!

इस प्रकार प्रतीक्षा करते-करते लगभग डेढ वर्ष से ऊपर हो गया। अन्त मे वह निर्मोही एक दिन लौटकर आ गई जिसने भूलकर भी उस एक पत्र तक क्षेम कुशल का नही लिखा था। उसके लिए चित्त चचल हो उठा। मिलने के लिए हृदय आतुर हो गया। वह तनिक व्यवस्थित होकर चल पडी।

परन्तु आश्चर्य!

वहा जाकर ज्ञात हुआ कि मनोरमा बहुत कुछ बदल चुकी है। क्या आकृति क्या प्रकृति दोनो मे ही विस्मय जनक परिवर्तन हो गया है। शरीर उसका पहले से भी अधिक मोटा और फूला फूला सा लगता है। सावला अधिक चेहरा कमनीय निखर आया है। उसमे विशेष लुनाई की मोहकता झलक रही है। मोटी मोटी आखो मे सतोष एव सुख की अम्लान चमक है। जो सामान्य गृहिणियो मे प्राय देखी जा सकती है। उसकी गोदी में एक पाच माह का चाद का टुकडा है जिस पर वह अपने प्राण निछावर करती है।

उसके हृदय का हार—ममता का एक मात्र अधिकारी।

घर पहुंचने पर मनोरमा ने सामान्य शिष्टाचार के नाते रम्भा का स्वागत किया। उसमें अब वह तड़प नहीं—आत्मीयता नहीं। लगता है मानो दर्शनाभिलाषी नेत्रों की प्यास कभी की बुझ चुकी।

स्पष्ट है कि रम्भा इन सबके लिए कदापि तैयार नहीं थी। यह ठण्डा ठण्डा सा मिलन और उस पर ये उखड़ी उखड़ी सी बातें। उसकी भावुकता एकदम नष्ट हो गई। सपने चूर चूर हो गये। उत्साह पर तुषारापात हो गया। बातों से विदित हुआ कि मनोरमा अपने अतीत को पूरी तरह विस्मरण कर चुकी है। वह अब वर्तमान में जीती है। अपने भोगे हुए यथार्थ में भाव मग्न है—आत्म-लीन है।

निराश होकर रम्भा लौट पड़ी।

क्या रखा था उस सूनी प्रतीक्षा में? रम्भा ने अपने आप से एक प्रश्न पूछा।

तभी वह बुझा बुझा सा दिल पश्चाताप की वेगवती धारा में बह गया।

लो वह भ्रम भी टूट गया।

अब ?

कई दिनों तक वह पूरी तरह अशान्त एवं अस्थिर सी रही। एक विचित्र प्रकार के तनाव को अनुभव करती रही। परन्तु जब उसे यह मालूम हुआ कि मनोरमा उससे भेंट किए बगैर ही अपनी ससुराल चली गई तो उसके दिल पर एक गहरी ठेस लगी। इस पर वह विक्षोभ से भरी निश्वास लेकर रह गई। इस प्रकार के अमैत्री पूर्ण व्यवहार की उसने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी।

धीरे धीरे मनोरमा के प्रकरण को वह भूल गई। उसने भी सोच लिया कि मनोरमा नाम की लड़की कभी उसके जीवन में आई थी और चुपके से कहीं चली गई—बस।

कुछ मास निश्चित तथा घटना रहित बीत गये। सामान्य जीवन धारा

बहती रही। उसम किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न नहीं हुआ। आक स्मिक उल्लास और अप्रत्याशित आनन्द के प्रभाव से रम्भा के मन की कली खिली खिली सी रही।

किन्तु एक साधारण सी बात के कारण इसमे इतना बडा भावान्तर आगया।

इसम कोई सन्देह नहा है कि मध्य वित्त परिवार के एक साधारण घर मे एक जवान बडी आयु की लडकी एक समस्या बन जाती है। वह अपने मा बाप के लिये नही, बल्कि मोहल्ले वालो के लिय भी चिंता का कारण है। प्राय घूम फिरकर उसी के ऊपर चर्चा चल पडती है। लगता है जसे पड़ौसी उसके प्रति अपना दायित्व भली भाति जानत है। उसको निभाने के लिए भी व रात दिन तत्पर रहते है।

माता पिता को उसकी प्रत्येक बात नई लगती है। उसका प्रत्येक काय नया प्रकाश लिय हुए ज्ञात होता है। उसके विचार एक एमी चिंगारी मालूम दते हैं जो कभी घास की ढेरी म लगकर सवनाश कर सकते हैं। एसी स्थिति म उनका आशकित होना स्वभाविक है। यदि उनकी दृष्टि सन्देह पूण बन जाता है तो इसम आश्चय क्या! वह हर घडी उसका पीछा करती रहती है। कालान्तर मे उनका व्यवहार अत्यत शुष्क और स्नेह रहित हो जाता है। इस कारण स उसके उठन बठन मे लेकर चलने फिरने और पहनन ओढने पर अनावश्यक तथा असामयिक प्रतिब ध सा लग जाता है। वास्तव म यह असामाजिक और कृत्रिम वाता वरण किसी के लिये भी सहनीय नही है। निश्चय ही यह प्रगति म बाधक है। तब परस्पर तनाव पैदा होता है और टूटने तक की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। विडम्बना तो यह है कि दोनो विवश हैं—असहाय हैं। निराकरण खोजने के प्रयास म वे समझौता नही कर सकते। वे एक प्रकार से असमथ हैं—निरुपाय हैं।

इसी सन्दभ मे एक दिन माता पिता वाद विवाद म उलझकर रह गये। वे दूसरे पक्ष से पूछे बिना ही कोइ निणय कर लेना चाहते हैं।

अगले ही क्षण मां का तीखा कण्ठ-स्वर ध्वनित हो उठा— आप तो बेटी को क्वारी घर में बठाये रखना चाहते हैं।

पिता ने प्रतिवाद किया— तुम तो बेकार में बात का बतंगड़ बना देती हो। नया जमाना है। इस पर पढ़े लिखे लड़के व लड़कियां हैं। इस सम्बन्ध में उनकी पसन्द नापसन्द जान कर लेना नितान्त आवश्यक है।

यह सब बकवास है। —गृहणी के कण्ठ में सहसा रोष प्रतिध्वनित हो उठा— आप को कुछ ख्याल भी है रम्भा की आयु तईस वर्ष के लग-भग हो चुकी है।

वो सब तो ठीक है मगर।

बस गृह स्वामी की तर्क करने की शक्ति हठात क्षीण हो गई। उन्होंने बड़ी दयनीयता के स्वर में कहा— देखो मेरी एक मात्र इच्छा यह है कि रम्भा के लिये वर विधुर न हो—बस।

विधुर विधुर विधुर हुंम। —गृहणी निर्ममता पूर्वक बरस पड़ी — इसमें क्या बुराई है— तनिक बताओ सही? केवल एक बच्ची के बाप ही तो है। आयु भी इतनी अधिक नहीं फिर?

क्षण भर ठहर कर वे पुनः कहने लगी— यह घर वर भी बड़ी कठिनाई से मिला है। याद है तुम्हें हमने रम्भा के लिए किन किन लोगों की खुशामद नहीं की। कईयों के सामने तो नाक तक रगड़नी पड़ी। हाथ जोड़कर निवेदन तक कर लिया। लेकिन इस पर भी नहीं माने। कोई दहेज में स्कूटर मांग रहा है भले ही उसे चलाना भी नहीं आये। कई लोगों की फरमायश हैं कि हम रेडियोग्राम मिले। कुछ दस तोले असली सोने के गहने की मांग पेश कर रहे हैं चाहे उनके घर में सोने का एक छल्ला भी न हो। वाह! उनके साहबजादे पढ़ लिख क्या गये जैसे लड़की वालों पर एक एहसान कर गये भले ही वे बेकार हो निठल्ले हो। और तो और कुछ ऐसे भी लालची देखने में आये हैं, जो पढ़ाई का खर्च भी लड़की वालों से ही वसूल कर लेना चाहते हैं।

इस उग्र रूप के समक्ष गृह स्वामी का विरोध भी ठहर न सका। वे शीघ्र ही निरुत्तर हो गए निश्चय ही आज भी समाज मे ऐसे प्रतिक्रिया वादी लोभी मनोवृत्ति के व्यक्तियो की बहुलता है, जो अपने क्षुद्र स्वार्थों के पीछे नवीन भावनाओ और विचारो का कटु तिरस्कार करते है।

यद्यपि इस रोष अग्नि की एक चिंगारी, जो गृहणी मे कही दिखाई दी थी, उसका सम्पूर्ण प्रभाव तो दूसरी ही जगह दिखाई दिया। इस अग्नि का एक व्यापक एव विनाशकारी रूप ! उसका गुप्त आकस्मिक आविर्भाव हुआ एक निडर कुमारी के अन्तस्तल मे, जिसमे कुवारे सपना और अभिलाषाओ के सुमन मुस्करा रहे हैं।

" विधुर एक बच्ची के पिता आयु मे बडे हुम !"—रम्भा क्रोध मे बडबडाई—' इसका प्रतिकार लेना पडेगा। आज की शिक्षित लडकी की आशाओ की होली जलाने वालों को उचित दण्ड मिलेगा। उसके कुवारें सपनो को चूर चूर करने वालो को ।"

मुझे अन्दर से एक रजाई ला दें। —व्यग्र स्वर अन्त में आकर टूट गया।

'क्या ?'

रम्भा की बड़ी-बड़ी आँखें कौतूहल से भर उठीं।

'सुबह से ही तबीयत कुछ गिरी गिरी सी लगती है।'—धीरे धीरे केदार बोला—'कुछ ठण्ड सी महसूस हो रही है।"

'हैं।'

रम्भा पर विचित्र प्रतिक्रिया हुई। वह फुर्ती से उसके पास आई और कलाई पकड़कर चिंतित भाव से बोली—'अरे, आपको तो बुखार है चलिए उठिए, पलंग पर लेट जाइए।'

इतना कहकर केदार का हाथ खींचते हुए उसने उठाने का प्रयास किया।

केदार ने एक आज्ञाकारी की भांति गर्दन झुका ली। परन्तु रम्भा के स्पर्श और सान्निध्य के कारण उसके तपते तन में एक विद्युत लहर सी दौड़ गई। रोम रोम पुलकित हो उठा।

'आह।'

बिछावन में आकर केदार ने एक कराह के साथ आंखें बन्द कर लीं।

वह नही मक्ते कि केदार सोकर जागा है। इस पर भी पूरी तरह जाग्रत नहीं है। अर्ध-स्वप्न की सी स्थिति है। सारा शरीर अवसन्न जान पडता है—एक जडता से भरी अवसन्नता।

तभी केदार की आवाज आती है—"मा।

बीच म रम्भा बोल उठती है— पानी चाहिय क्या ?'

हा। पानी ही चाहिए।' —केदार उत्तर देता है।

रम्भा गिलास म पानी भरकर देती है।

'कौन आप ?'

आश्चय चकित हो केदार देखता रह जाता है। कसा पीला हो गया है मुह। बाल बिखरे हुए हैं। रात्रि जागरण के कारण पलकें बोझिल हैं। उनके चारा ओर काला-सा घेरा है। पूरा वदन शिथिल नाल हो रहा है इस सेवा परायण रमणी का यह दलथ क्लान्त स्वरूप बहुत ही मनोहर लग रहा है।

'आ आप आपने मेरी वजह स सारी रात कष्ट उठाया इसके लिए ।

केदार का कण्ठ विगलित हो गया। इसके अतिरिक्त उसकी आखा मे आँसू चमक आई। रम्भा अवाक रह गई। ये आसू कृतज्ञता के हैं अथवा अपरिमित स्नेह के—कह सकना कठिन है। अनजाने ही उसकी नस नस म एक सिहरन की लहर तरगित हो गई।

पानी का एक घूट पीकर केदार पुन लेट जाता है। खिड़की म से छनकर आने वाली प्रभात की धूप को वह एक टक निहारता है।

रम्भा वापिस सिरहाने बैठ जाती है। पता नहीं जाने क्यों आज केदार के बिखरे कुन्तल से खेलने के लिए उसका जी चाह रहा है। उनमें उंगलियां चलाकर सहलाने का मन कर रहा है। केदार आंखें मूंदे सो रहा है। उसकी इच्छा कर रही है कि सम्पूर्ण मुख पर अपने आंचल की छांह कर दे। केदार की मंद मन्द सांस चल रही है। हृदय तो इन सांसों की हथकड़ियों में कैद हो जाने को एक प्रकार से व्यग्र जान पड़ता है।

यह अप्रत्याशित भावोन्मेष यह आकस्मिक आत्मीयता का प्रवाह जो चांदनी के सदृश्य समस्त अन्तःकरण को आलोकित कर रहा है।

छि छि ।

अकस्मात रम्भा का मन ग्लानि से भर उठा—यह सब मिथ्या है—एक प्रकार की छलना। निश्चय ही वह एक भ्रामक कल्पना है जिसके द्वारा केवल मात्र अपनी मूर्खता का ही परिचय दिया जा सकता है। ऐसा सोचना निस्सार है निरर्थक है निराधार है।

मां।

केदार ने आंख खोलकर पुनः पुकारा।

सचेत होकर रम्भा उठ गई। उसने उतावली में कहा—अभी मैं उन्हें भेजती हूं।

केदार चुपचाप पड़ा शीघ्रता में जाती हुई रम्भा की पीठ को टक-टकी लगा कर देखता रहा।

थोड़ी ही देर में माजी और बब्बी दोनों आ गये। रम्भा किसी काम के कारण पीछे रुक गई।

दोनों के नेत्र आकस्मिक प्रसन्नता से उल्लसित हैं। बेटे के प्रति माजी के मन में अपार ममत्व का भाव है। ज्योंही वे बेटे के पास आईं, उनका चेहरा अपूर्व आनन्दोल्लास से खिल गया। उन्होंने केदार के उठने में सहायता करने का आग्रह किया तो वह मना कर गया।

अब मैं ठीक हूं मां। केदार ने कहा—चिन्ता की कोई बात नहीं।

अच्छा ! '

लगा, जैसे माजी आश्वस्त हो गई।

कन्नार पलग पर अधनटी दशा म तकिये का सहारा लेकर बैठ गया। वही उसकी गोदी म आ गई।

'बाबूजी !'

वह बड़े प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरने लगा।

'बाबूजी ! आपको पता है कि कल रात दादा माँ ने खाना ही नहीं खाया ।

'अच्छा !'

माजी की आँखों म हठात मातृ-मोद की छाया गहरी हो गई। वे स्नेह विह्वल कण्ठ से कहने लगीं— असल मे बात यह हुई कि तुम्हारी इस ज्वर की अवस्था मे अपने आपको अकेली पाकर रम्भा एकदम घबरा गई। वह मुझे कहाँ से बुलाये ? मैं किस पड़ोसन के घर म हूँ—इसे कुछ भी ज्ञान नही ? इसके अलावा वह बुलाये भी तो किस के द्वारा ? बड़ी जटिल समस्या इसके सम्मुख खड़ी हो गई। वह घबराहट म द्वार के पास आती और इधर उधर झाँककर निराश लौट जाती। अचानक सामने के घर म बैठी मैंने उसकी व्यग्रता भली भाँति ताड़ ली। खिड़की म से देखने पर उसका उदास चेहरा मेरी निगाहों से छिप न सका।

द्वार पर ही भेंट हो गई। मैंने पूछा—'क्या बात है रम्भा ?

'जल्दी चलिये माजी ! केदार बाबू की तबीयत ।

बस विराम। उसका रुद्ध कण्ठ मध्य म अटक गया।

हैं

' मैं अचानक अज्ञात भय स सिहर उठी। तुम्हें अचेतावस्था मे देखा तो होश उड़ गये। अविलम्ब एक पड़ोसी लड़के द्वारा डाक्टर साहब को बुलाने भेजा। उन्होंने इजक्शन और गोलियाँ देकर हमें आश्वस्त किया ।

इतना कहकर माजी रुक गईं। क्षण भर पश्चात् वे पुन बोलीं—

"कुछ देर के लिये तुम सन्निपात की दशा में बडबडाने भी लगी। हम बड़ी चिंता हुई। अन्त विवश हो फिर डाक्टर काटजू की शरण में जाना पड़ा। डाक्टर वे बोले— यह सब तेज बुखार के कारण है। मैं नींद की गोलियां देता हूं। इसके पश्चात शान्ति हुई। हमने चैन की सांस ली।

रम्भा चाय की प्याली लेकर आई। उसने केदार के हाथ में थमा दी।

देखते देखते माजी के नेत्र श्रद्धा और स्नेह के अतिरेक से अभिभूत हो गये। वे भाव गद्गद् कण्ठ से बोला— सचमुच रम्भा! केदार के लिये तुम जो कुछ कर रही हो इसके लिये मैं ऋणी हूँ।'

रम्भा किंचित सकपका गई। उसने देखा—माजी के वृद्ध नयनों में निश्छल अनुराग का समुद्र लहरा रहा है। उनका सम्पूर्ण मानस कृतज्ञता के पावन रंग में अतिरंजित है। उसका प्रतिबिम्ब उनके मुख मण्डल पर स्पष्ट झलक रहा है।

चलते चलते उसने सकोच-पूर्वक कहा— इसमें प्रशंसा योग्य कोई बात नहीं है माजी! आप मुझे मु भ !'

वाक्य अधूरा छोड़कर रम्भा द्वार की ओर फुर्ती से बढ़ गई।

अब माजी स्वयं कह कर बोला— बस मैं तो रम्भा के इन गुणों को देखकर चकित हूं—मुग्ध हूं। कितनी गुणवती है—कितनी शालवती है। वास्तव में जिस घर में जाएगी भगवान की कृपा से वहां सौभाग्य का सूर्य ।

इस बात केदार का चेहरा मलिन हो गया। पता नहीं हृदय की किस भाव-तरंग ने उसे सहसा मलिन कर दिया।

'क्या तुम हमे छोडकर चली जाओगी मौसी ?"

उस दिन बबी के मुह से यह प्रश्न सुनकर सहसा रम्भा स्तब्ध रह गई।

बालिका ने एक मम स्पर्शी दृष्टि डाला। इसके पश्चात वह उदास कण्ठ से मुह फुलाकर बोली— आज दादी मा कह रही थी कि चोटी मैं करूगी। मरे पास सोने की तुम्हें आदत डालनी चाहिए। तुम्हारी मौसी यहा सदा रहने के लिए थोडी ही आई है। उसे तो एक दिन जाना है।

मन भारी हो आया। ठीक ही तो है। भला ऐसे भी कहीं जीवन जिया जाता है। माजी के शब्दों म वास्तविकता का जो अनावृत रूप है, उसे रम्भा अनजाने म देखा—अनदेखा कर जाती है।

बेबी का स्वर अकस्मात ही भीग गया। उसने पूछा—'क्या तुम हम छोडकर चली जाओगी ?

रम्भा चुप। यद्यपि बालिका की आतुर दृष्टि म एक ऐसी तरलता है, जो हृदय को छू जाती है। जाहिर है कि वह अपनी अस्थिरता को दबा न सकी।

उसने भली भाति जान लिया कि अब झूठ का सहारा लेना पडेगा। अपने हृदय गत भावो पर कृत्रिमता का आवरण डाल कर और अपने उमड आये आसुओ का घूट पीकर उसने झट बालिका को गोदी म उठा लिया। एक विचित्र प्रकार की व्यथा म विक्षुब्ध और रुधी रुधी सी आवाज मे उसने कहना चाहा— मैं मैं कहीं भी नही जाऊगी

"देवी !"

"सच !"

अप्रत्याशित आत्म विश्वास तथा आकस्मिक उल्लास में बालिका मचल उठी।

"मुझे छोड़ो !"

गाड़ी में से नीचे उतरकर वह दौड़ पड़ी।

'दादी मां ! मौसी कहीं भी नहीं जाएगी ! दादी मां !'

यह अनपेक्षित स्वर जलती दीप शिखा के सदृश रम्भा की अन्तर् की गहराइयों में उतर गया।

'क्या यह सच है ?'

रम्भा अधीर हो उठी।

'झूठ ! बिल्कुल झूठ !'

वह सन्न सी रह गई, मानो ताज़े खिले फूल को किसी ने निर्दयता से मसल दिया।

'असत्य के अन्धकार में तू कब तक भटकती फिरेगी ?' उसके भीतर से एक दूसरी रम्भा चेतावनी देकर बोली।

उसका अंग अंग जल उठा। दावानल की भांति क्षोभ उसके हृदय में धू धू करने लगा।

'दूसरे को भ्रम में डालने का प्रयास निंदनीय है।' उस दूसरी रम्भा ने एक बार फिर चोट की—'एक मात्र निम्न-स्तर की कुचेष्टा है। इसके द्वारा केवल अपने अहं की परितुष्टि होती है। परन्तु छल की छाया में पलने वाला भ्रम एक दिन स्वयं के सत्व को नष्ट कर देता है—यह याद रहे।'

बस रम्भा एक प्रकार से टूट गई। पलकों की ओट छिप आंसू द्रुतगति से बह निकले। उनको रोकने का प्रयत्न निष्फल है।

वह सिसक पड़ी। आंखों में नमी सी जगी है। लगा, जैसे किसी अज्ञात कर स्पर्श से सोया हुआ भाव जाग उठा है, जिसने वस्तु स्थिति

को स्पष्ट कर दिया।

" अपने द्वारा कटे हुए पथ लेकर मैं कहा जाऊ ?" —आखें अनवरत झरती जा रही हैं। इसके विपरीत तिमिराछन्न रात्रि म विद्युत लहर क सदृश्य उस के मस्तक मे अनेक प्रश्न कौंध जाते है—"कहा जाऊ ? कैसे जाऊ ? कहा कैसे ?

टप टप टप !

' क्या मैं वापिस लौट जाऊ ? लेकिन किस मुह से ' —अपने क्षोभ को दबाकर वह सोचती है—' यह कालिख पुता मुह लेकर मैं अपने माता पिता के पास कैसे जाऊ ? ओह ! क्या अन्याय के सामने सिर झुकाऊ ? असहाय और दीन बनकर आत्म समर्पण कर दू ?

घर म चारो ओर शान्ति है। न कोई कोलाहल है न मौन को भग करने वाला स्वर ! साझ घिर आई है। उसकी मटमैली छाया रम्भा के अन्त करण म असीम फैलती जा रही है। एक अजीब सी घुटन महसूस हो रही है। ऊब से जी घुटा जा रहा है।

रम्भा उठकर कमरे की बत्ती जला देती है। दूधिया प्रकाश फैल जाता है। वह धीरे धीरे कमरे म इधर उधर बडी बेचैनी से घूमती है। उसकी आखों म आसू सूख गये हैं। लेकिन एक प्रश्न बडी तीव्रता से उसे कुरेद रहा है—आखिर वह किस दिशा की तरफ बढे ?

स्पष्ट है कि इस समय अपने भविष्य के बारे म निश्चित रूप से कुछ भी कह सकना कठिन है। अपनी खोई हुई दिशाओं म से पथ खोजना अत्यन्त दुष्कर है। सबसे अधिक इसमे बाधक है नारी सुलभ दुर्बलता। इसके अतिरिक्त बन्धन है मन की कुठायें जो गहरे अधेरे म छिपी पडी हैं। जितनी वह सोचती है वे उतनी ही भयावनी लगती है। इस कुहराछन्न वातावरण और प्रतिकूल परिस्थितियों म ही प्रकाश किरण

बस विराम ! रम्भा के विचारो की शृखला अचानक टूट गई। उसे शून्य म कोई विश्वसनीय प्रकाश रेखा दिखाई पडी, जिसके प्रभाव

से हृदय का कोलाहल शान्त हो जाता है। मन का उद्वेग मिट जाता है। लगता है मानो वह अनिणय और असमजस की अवस्था अपने समस्त विकार लकर समाप्त हो गई है ।

आज रम्भा ने प्राय दृढ प्रतिज्ञ मन स निश्चय कर लिया। अब तो गह-स्वामिनी स आज्ञा लेनी ही पडेगी। उसके लडखडाते पर नया साहस पाकर द्वार की ओर बढ गय।

तभी गली म आकर तागा रुका। उसम स एक भद्र पुरुष उतरे। उन्होने वृद्ध गले से थके हुए स्वर म आवाज लगाई।

केदार बाबू । केदार ।

रम्भा के अस्थिर पर सहसा डगमगाय। इसके पश्चात वे गतिहीन और अचचल हो गय।

रम्भा चौंक पडी। आवाज परिचित सी लगी। मगर एकाएक विश्वास नही हुआ। आखो म तीव्र जिज्ञासा का भाव लकर उसने बाहर की तरफ देखा। सब स्पष्ट हो गया। दिल बैठ गया। हृदय की धडकनें डूबने लगी। हठात चक्कर सा आ गया। चीख छाती म घुटकर रह गई।

बस अगले क्षण वह अपना सिर थाम कर बैठ गई।

जब वे भद्र पुरुष भीतर कमरे मे आते हैं तो इस बीच रम्भा खूब रो चुकी है। एक प्रकार से उसकी हिचकियां बध गई हैं। विचित्र-सा सूनापन उसकी मन की घाटियो म घिर आया है जिसके अन्तराल में हृदय-कम्प भय भी सम्मिलित है। इस म वह अकेली आपाद मदन डूबती जा रही है।

'रम्भा !'

इस स्नेह सिक्त स्वर को सुनकर वह काप उठी लगा जसे सकडो विच्छू एक साथ डक मार गये हैं।

वे आगे बढ़े ! करुणा प्लावित हो उसके सिर पर हाथ फेरते हैं।

रम्भा बराबर रोती रही। मुह खोल कर एक बात भी उसने नही कही। बस आसुओ म उनका धुधला चेहरा तिर गया।

बडे कोमल भाव से रम्भा की पीठ को सहलाते हुए उन्होने आश्वासन दिया – 'रम्भा बेटी ! तेरी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नही होगा। निश्चिन्त रहो !"

रम्भा ने दोनो हथेलियो के बीच अपना मुख ढक लिया। उसकी अश्रु सिक्त कातर आखें अपराध भावना से अभिभूत हैं जिन्हे वह पिता की दृष्टि से छिपा लेना चाहती है।

विशेष चिन्ता की बात नही।' वे बोले— सब ठीक ठाक हो जायेगा। मैं तुम्हारी मा को अच्छी तरह समझा चुका हूं।

रम्भा भय व्याकुल, त्रस्त ! लगा मानो उस की जीभ को अकस्मात् लकवा मार गया।

पिता समझ गए कि बेटी को बिलकुल एकान्त चाहिए। उनके अप्रत्याशित आगमन ने उसे पहले से कहीं अधिक अस्त-व्यस्त कर दिया है। इस बीच वह अपनी अव्यवस्थित मानसिक स्थिति को किसी सीमा तक पुनः सामान्य कर सके।

वे लौट आए।

अधिक रहना सम्भव नहीं है—इस आशय की सूचना वे कन्नार को स्पष्ट दे चुके हैं। अतः कल की गाड़ी से जाना पड़ेगा—यह निश्चित है। रात को बहुत देर तक केन्नार के साथ बातचीत हुई। उसमें विस्तार पूर्वक सम्पूर्ण घटना सुनी। इसके पश्चात् वे कहने लगे— यद्यपि आप का तार मुझे यथा समय मिल गया था परन्तु कार्यवश शीघ्रता में न आ सका। इसके अतिरिक्त जब यह बात हो गया कि रम्भा आपके संरक्षण में सकुशल पहुंच चुकी है तो सारी चिन्ता मिट गई ।' मैं जानता हूं।

कदार मैत्री भाव से मुस्कराया।

निश्चय ही आपका स्नेह भरा आश्रय पाकर वह बच गई। यह आपका बहुत बड़ा उपकार है मेरे परिवार के ऊपर। इस ऋण की पूर्ति हम जीवन पर्यन्त कभी नहीं कर सकेंगे । सचमुच एक बहुत बड़ी दुर्घटना होनी होती रह गई।

आप मुझे व्यर्थ में लज्जित कर रहे हैं। —संकोचवश कन्नार ने कहा।

आज सवेरे से ही पूरे घर में विचित्र प्रकार की नीरवता छाई हुई है। न कोई कोलाहल—न कोई स्वर। जैसे सारी वस्तुयें निष्प्राण हैं। इस निर्जीव वातावरण के बीच कुछ जीवित प्राणी भी अस्वाभाविक ढंग से सांस ले रहे हैं।

माजी अपने आपको आश्चर्यजनक तरीके से गृहस्थी के दैनिक काम काज में लगाये हुए हैं। पता नहीं उनके अन्दर ऐसी नियात्मक गति शीलता कहां से आ गई! होंठ चुप है, मगर हाथों और पैरों की फुर्ती

विस्मित कर जाती है। उन्हे एक पल के लिय किसी से बात करने की भी फुसत नहीं।

केन्नार मात्र अतिथि के संग व्यस्त है। उन्हें अकेला भी छोडा नही जा सकता। यह शिष्टाचार और साथ ही सभ्य व्यवहार के सवथा प्रतिकूल है।

रह गई है केवल बेबी, जो मात्र कौतुक का भाव अपनी भोली भाली आखो म लिये सब कुछ देख रही है। साहस नहीं हो रहा है किसी से पूछने का। एक दो बार दादी मा से पूछने की उसने कोशिश भी की, किन्तु उनका मौन मुख मुद्रा इतनी कठोर है कि वह इन साधारण प्रश्नों से भग होने वाली नहीं है।

बालिका उदास और निराश अपनी मौसी के पास लौट आई।

रम्भा की आखें सूजी हुई हैं। स्पष्ट है कि वह रात भर जगी रही। पलकें बोझिल है। उनकी गहराइयों म काली छाया घनी हो गई है। पपडी जमे होठो पर हृदय की अव्यक्त वेदना की थरथराहटें उद हैं। अशान्ति मस्तिष्क को त्रस्त बनाये हुए है। उसकी अधेरी कन्दराओं में भय के मनहूस उल्लू चीख रहे हैं।

बेबी को देखा तो सहसा उसके हृदय मे ममता का भाव उमड आया। उसने रुद्ध कण्ठ से कहा— इधर आओ बेबी।'

बेबी इस अनपेक्षित निमत्रण को अस्वीकार न कर सकी। स्नेह भरे आग्रह को वह टालने भी नहीं—यह स्वाभाविक है।

गोदी म बालिका को खीचकर रम्भा उसके कपोलो आखो और होठो को आवेग म चूमने लगी। बेबी चकित विस्मित! वह एकाएक उसके इस भावातिरेक को समझ न सकी।

कुछ विलम्ब के पश्चात उसने अपने मनका वह प्रश्न पूछा जो कुछ देर से उसे परेशान कर रहा है।

मौसी! बापूजी के पास जो बैठे हैं वह कौन है?

व वे! —रम्भा की आखे हठात छल छला आईं— व

वे मेरे पिता हैं।

"अच्छा!"

बालिका प्रसन्न हो गई। उसे उपयुक्त उत्तर मिल गया। पुन सोचकर उसने पूछा—'तब फिर मेरे क्या लगे?'

तेरे...।

रम्भा के ये शब्द मुंह ही मुंह में ध्वनित हो कर रह गये। सम्भवत यह प्रश्न उसकी कल्पना के विपरीत है।

आखिरकार विदा की घड़ी भी निकट आ गई। रम्भा यन्त्र चालित पुतली की भांति पिता के निर्देश के अनुसार तैयार हो गई। चेहरे पर कोई अनिर्वचनीय अवसाद की परत सी जम गई है जो हृदय द्रावक है। केदार के परिवार में माजी बेबी और स्वयं केदार का औदास्य भाव तथा द्रवित मन स्थिति उल्लेखनीय है।

माजी के सीने से लगकर तो रम्भा फूट फूट कर रो पड़ी। लगा, माना अपनी जननी से विदा होकर कहीं दूर जा रही है। वृद्ध की आखों में सावन भादों की झड़ी। मुंह से शब्द तक फूट नहीं रहे हैं। वह तो कातर स्वर में रुदन करने वाली इस दुखी रम्भा की समस्त व्यथा अपने आंचल में समेट लेना चाहती हैं।

कुछ देर के पश्चात् वे आंसुओं के साथ अनुरोध कर बैठी—'बस, हम भी कभी कभी याद कर लेना बेटी! यह सोच लेना कि एक घर तुम्हारा यहां पर भी है। यदि सम्भव हो सके तो कभी भूले बिसरे हम भी सम्हाल लेना।'

अब आंसुओं की गंगा जमुना के मध्य मिलकर एकाकार हो गई। वहां किसी का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं। चारों ओर सुविस्तृत पुण्यमयी भागी रथी की पावन व शान्त जल धारा। इसके पावन संगम पर प्रेम श्रद्धा, और भक्ति के सुमन खिलते हैं।

सारा मन से माजी ने उसे बिदा किया। रम्भा तो उनसे अलग होना भी नहीं चाहती है। बार-बार कातर भाव लेकर उनसे लिपट जाता

है। उन्होंने हृदय थामकर समझाया, तब वहीं लौटी।

केदार उद्विग्नता हो बरामदे म खडा है। उसके भाल पर स्वेद कण चमक रहे हैं। अश्रु मुखी रम्भा की रोक कर उसने कहा—"सुनिये।"

अकस्मात् रम्भा के पैर जहा पर थे—वहीं पर रह गये। दृष्टि एक बार टकराई। आखें हठात् नमित हो गईं।

यह लिजिए आपका फोटू!'— निर्जीव सी मुस्कान केदार के अधरो पर खेल गई।

अश्रु पूरित आखो की दृष्टि एक क्षण मे मेंप्रश्न हो गई, इस कारण से केदार ने स्पष्टीकरण किया।

सम्बन्ध करने के उद्देश्य से आपके पिता न यह फोटू मेरे पास भिजवाई थी। परन्तु इस बीच आपने यह सम्बन्ध घृणा एव विरक्ति के अतिरेक मे ठुकरा दिया। माता पिता न अधिक दवाव डाला तो आप घर छोड कर भाग गई ।

रम्भा तो जसे रसातल मे चली गई। यह कैसा रहस्य है ?

चूकि मैं पहले ही आपका फोटू दख चुका था, इसलिय मैंने आपको ट्रेन मे भली भाति पहचान लिया और और खर! वह हतभागा इन्सान मैं ही हू जिसके प्रति आपके हृदय मे अपार घृणा है यदि कोई अनजाने म भूल हो गइ है तो तो क्षमा क्षमा ।

मध्य म केदार का कण्ठावरोध हो गया। वह आगे कुछ भी बाल न सका।

सुनकर रम्भा तो पत्थर की जड शिला बन गई। रक्त प्रवाह धम नियो म रुक सा गया।

तभी बेबी कमरे मे स भागकर आ गई। वह रम्भा के परो से लिपट गई।

'तुम न जाओ, मौसी! —रुआई सी होकर वह बोली।

सब स्तब्ध चकित!

रम्भा ने केदार की ओर दृष्टि निक्षेप किया ।

पास आकर केदार धीरे से बोला— 'जाने दो बेबी ।'

'नहीं । मौसी ! मुझे छोडकर मत जाओ ।'

यह आवाहन इतना मार्मिक है कि रम्भा के पैर तिल मात्र भी हिल न सके ।

'मौसी ! अगर तुम चली जाओगी तो कौन मेरी चोटी करेगा ? कौन रिबन बाँधेगा ? कौन खाना खिलाएगा ? कौन कहानी सुनाएगा ? कौन पास सुलायेगा ? मत मत मत जाओ मौसी ।'

इसके साथ बालिका का करुण क्रन्दन फूट पड़ा ।

बेडियाँ !

जैसे रम्भा के पैरों में मोटी मोटी लोहे की बेडियाँ पड गई हैं । काट सकेगी उन्हें ? इतना साहस है ।

अब केदार इस हृदय विदारक दृश्य को देख न सका । उसने विगलित कण्ठ से कहा— 'बेबी ! जाने वाले को रोकते नहीं बेटे !'

रम्भा अपने आपको नियंत्रण में न रख सकी । हृदय में उमड आई वात्सल्य की सरिता में निर्बाध बह गई । यह द्रवित भाव उसके मन की अस्थिरता को दबा न सका । उसने बेबी को झट अपने अंक में ले लिया । अश्रु सिक्त कपोलों को बड़े प्यार से चूमकर वह विक्षिप्त सी अवस्था में बोली— 'मैं तुझे छोडकर कहीं भी नहीं जाऊँगी बेबी ! बस, कहीं भी नहीं कहीं भी नहीं ।'

इसके पश्चात भावावेश का रुका रुका बाँध एक धक्के से टूट गया ।

OOO

रम्भा ने केदार की ओर दृष्टि निक्षेप किया।
पास आकर केदार धीरे से बोला— "जाने दो बेबी।"
"ना। मौसी! मुझे छोड़कर मत जाओ।"
यह आवेदन इतना मार्मिक है कि रम्भा के पैर तिल मात्र भी हिल न सके।
"मौसी! अगर तुम चली जाओगी तो मेरी चोटी कौन करेगा? कौन रिबन बांधेगा? कौन खाना खिलाएगा? कौन कहानी सुनायेगा? कौन पास सुलायेगा? मत—मत—मत जाओ मौसी।"
इसके साथ बालिका का करुण क्रन्दन फूट पड़ा।
बेड़ियां!
उस रम्भा के पैरों में मोटी मोटी लोहे की बेड़ियां पड़ गई हैं। काट सकेगी उन्हें? इतना साहस है?
अब केदार इस हृदय विदारक दृश्य को देख न सका। उसने विगलित कण्ठ से कहा— "बेबी! जाने वाले को रोकते नहीं बेटे!"
रम्भा अपने आपको नियन्त्रण में न रख सकी। हृदय में उमड़ आई वात्सल्य की सरिता में निर्बाध बह गई। यह द्रवित भाव उसके मन की अस्थिरता को दबा न सका। उसने बेबी को झट अपने अंक में ले लिया। अश्रु सिक्त कपोलों को बड़े प्यार से चूमकर वह विक्षिप्त सी अवस्था में बोली— "मैं तुझे छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊंगी बेबी! बस, कहीं भी नहीं— कहीं भी नहीं।"
इसके पश्चात भावावेग का रुका रुका बांध एक धक्के से टूट गया।

ooo